मेक इन इंडिया

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

रक्षक

छः माही पत्रिका अंक-9 (अप्रैल, 2020 से सितंबर 2020 तक)

• कीटनाशक • फंगसनाशक • बॉयो पेस्टिसाइड्स
• शाकनाशी • बीज • उर्वरक • सूक्ष्म पोषक तत्व

हि इ लि
समृद्धि हेतु सुरक्षा

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(पूर्व में हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड)
(भारत सरकार का उद्यम)

श्री मंसुख मांडविया जी, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पत्तन, पोत और जलमार्ग मंत्रालय तथा राज्य मंत्री, रसायन और उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार के कर–कमलों से ''वर्ष के उत्पाद प्रवर्तक'' पुरस्कार प्राप्त करते श्री एस.पी. मोहन्ती, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, हिल (इंडिया) लिमिटेड।

मुख्य संरक्षक
डॉ0 एस.पी. मोहन्ती
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

संरक्षक
श्री एस. चट्टोपाध्याय
निदेशक (वित्त)

संपादक
श्री अजीत कुमार

परामर्श समिति
श्री पी.सी. सिंह
श्री शशांक चतुर्वेदी
श्री एम.एस. अनिल
श्री अनिल यादव
श्री राजेन्द्र थापर
श्री एस. एन. नान्दल
श्री अनिल सूद

सहयोग
श्री ओम प्रकाश साह
श्री अनुभव कुमार

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। अतः पत्रिका में निहित रचनाओं के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड प्रबंधन उत्तरदायी नहीं है।

रक्षक

छःमाही पत्रिका, अंक - 9

अप्रैल, 2020 - सितम्बर, 2020 तक

- अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक की कलम से 1
- संदेश 2
- संपादकीय 3
- राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका 4
- फॉल आर्मीवर्म की पहचान एवं प्रबंधन 7
- कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों के प्रयोग में सावधानियां 13
- नैसर्गिक सिद्धांतों के अंतर्गत जांच कार्यवाही 15
- भ्रष्टाचार का उन्मूलन– एक नैतिक कर्तव्य 15
- उत्पादकताः आज के संदर्भ में 17
- बुद्धिमान मशीनें और हम 20
- ऑनलाइन शिक्षा पद्धति एक वास्तविकता 22
- हिन्दी का बदलता संसार 23
- बाधाओं को पार करते हुए हिंदी का बढ़ता कदम... 27
- वसीयत एक कानून 29
- वस्तु एवं सेवा कर की शुरुआत 31
- वित्त की जरूरत 32
- जल संकट से जूझता मानव 33
- आयुर्वेद 35
- "धन" आत्मक– विचार 37
- सर्तक भारत, समृद्ध भारत 39
- देश हमें देता है सब कुछ 40
- मेरी जिन्दगी 40
- ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा 40
- मेरा जीवन 41
- प्रवासी 41
- अधूरे लक्ष्य पर रूदन 42
- वक्त 42
- आज का कल्चर 43
- बेटी 44
- नारी शक्ति 44
- कुछ शब्द पिता के नाम... 45
- नारी महान 46
- निगमित कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन 47
- उद्योगमंडल यूनिट में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 48
- स्वच्छता पखवाड़ा, 2020 के दौरान आयोजित गतिविधियां 51
- हिल में आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा 51
- हिल के नवीन उत्पाद का प्रमोचन 51
- हिल (इंडिया) लिमिटेड में स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020 52
- हिंदी पखवाड़े का आयोजन 54
- हिल (इंडिया) लिमिटेड में सद्भावना दिवस 2020 का आयोजन 54
- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की झलकियां 55
- सेवानिवृत्ति/स्वेच्छा सेवानिवृत्ति एवं त्याग पत्र प्राप्त अधिकारी एवं कर्मचारी 56
- हिल (इंडिया) लिमिटेड शामिल नए कार्मिक 58
- प्रशासनिक एवं संक्षिप्त आदेशात्मक टिप्पणियां 59
- आपकी पाती 63

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक की कलम से

हिल (इंडिया) लिमिटेड की गृह पत्रिका 'रक्षक' का नवीन अंक आपको सौपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रति रूचि बढ़ाने तथा गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम, राजभाषा नियम, अधिनियम एवं नीतियाँ से पाठकों को अवगत कराने के साथ–साथ कंपनी की विभिन्न गतिविधियों का भी दर्पण है। पत्रिका के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने से कार्मिकों की लेखन प्रतिभा में वृद्धि होती है।

हमारा लक्ष्य 2022–23 तक कृषि उत्पादन में वृद्धि और उत्पादकता में संवर्द्धन के माध्यम से किसानों की आय दोगुनी करने के भारत सरकार के लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करना तथा कृषक समुदाय के लिए तीनों आदान अर्थात कृषि रसायन, बीज और उर्वरक की आवश्यकताओं को समय पर एवं उचित दर पर पूरा करना तथा स्वच्छ और गुणवत्ता वाले उत्पाद प्रदान कराना है। कंपनी ने अपने विपणन नेटवर्क को और बढ़ाया है, जिससे हमारे उत्पाद सभी क्षेत्रों के किसानों को समय पर मिल सकें।

कंपनी ने टिड्डी नियंत्रण कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिसके लिए कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, वनस्पति संरक्षण, संगरोध एवं संग्रह निदेशालय, भारत सरकार के साथ टिड्डी नियंत्रण कार्यक्रम के लिए मैलाथियॉन (टिड्डी नियंत्रक कीटनाशक) के उत्पादन एवं आपूर्ति के लिए एक करार पर हस्ताक्षर किए गए हैं। कंपनी द्वारा गत दो वर्षों में टिड्डी आक्रमण से बचाव के लिए राजस्थान एवं गुजरात के विभिन्न टिड्डी नियंत्रण यूनिटों को मैलाथियॉन की आपूर्ति की गई है। कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान उत्पन्न हुई टिड्डी आपदा के नियंत्रण में हिल के प्रयास की कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा सराहना की गई है। वर्ष के दौरान कंपनी ने दक्षिणी बाजार में जैव–कीटनाशक श्रेणी के उत्पादों का भी प्रमोचन किया है। जैव–कीटनाशक पर्यावरण अनुकूल कीटनाशक हैं, जो प्राकृतिक पदार्थ (जैव–रसायन), माइक्रोब्स एवं वनस्पति से प्राप्त होते हैं।

कंपनी ने जन स्वास्थ्य क्षेत्र के अंतर्गत यूनिडो के साथ "डी.डी.टी. के विकल्प का विकास एवं संवर्धन" परियोजना के अंतर्गत रसायनी यूनिट में लंबे समय तक चलने वाली कीटनाशक युक्त मच्छरदानी (एल.एल.आई.एन.) के विनिर्माणन के लिए पूर्ण संयंत्र की स्थापना की है। कंपनी ने एल.एल.आई.एन. के प्रमोचन के साथ ही जन स्वास्थ्य क्षेत्र के अंतर्गत उत्पादों की श्रेणी में विविधिकरण किया है। इसके साथ ही हिल एल.एल.आई.एन. का विनिर्माणन करने वाला सार्वजनिक क्षेत्र का एक मात्र उपक्रम बन गया है। इस श्रृंखला में कंपनी यूनिडो के सहयोग से नीम आधारित उत्पादों के लिए भी कार्य कर रही है, जो जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में उपयोग में लिए जाएगें। इसके अतिरिक्त बेक्टिरियल फारमुलेशन आधारित मच्छर लार्वानाशक के उत्पादन के लिए कंपनी कार्य कर रही है। इसके अतिरिक्त, कंपनी ने कोविड–19 रोकथाम संबंधी उत्पादों जैसे सैनिटाइज़र्स, मास्क आदि का व्यवसाय भी आरंभ किया है।

एक राष्ट्रीय स्तरीय बीज एजेंसी होने के नाते, कंपनी का लगातार अपने बीज उत्पादन की योजना में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थानों (भा.कृ.अनु.प.)/राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा विकसित की गई नवीनतम उच्च उपज देने वाली किस्मों को सम्मिलित करने का प्रयास रहा है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम के अंतर्गत सामान्य बिक्री एवं बीज मिनीकिट की आपूर्ति के माध्यम से नवीनतम अधिक उपज देने वाली किस्मों के दलहनों और तिलहन के उत्पादन एवं आपूर्ति पर जोर दिया जा रहा है।

कंपनी ने अपने तीनों संयंत्रों (रसायनी यूनिट,बठिंडा यूनिट, उद्योगमंडल यूनिट) में विभिन्न श्रेणी के पानी में घुलनशील उर्वरक (डब्ल्यू.एस.एफ.) के लिए विनिमार्णन संयंत्र स्थापित किया है। कंपनी ने देश के विभिन्न राज्यों में नीम लेपित यूरिया तथा अन्य जटिल उर्वरकों की आपूर्ति के लिए साथी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों नामतः नेशनल फर्टिलाइज़र्स लिमिटेड (एन.एफ.एल.), और फर्टिलाइज़र्स एण्ड केमिकल ट्रावंकोर लिमिटेड (एफ.ए.सी.टी.) तथा कॉपरोटिव आई.एफ.एफ.सी.ओ. (इफको) आदि के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

समय की मांग और विषय की गंभीरता को देखते हुए कंपनी अनेक राज्यों के किसानों के कल्याण हेतु एकीकृत कीट प्रबन्धन एवं कीटनाशकों के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं जागरूकता अभियान चला रही है, जिससे कृषक और कृषक कर्मियों का जीवन सुरक्षित रखा जा सके। इस प्रशिक्षण में यह भी बताया जाता है कि किस प्रकार अविवेकपूर्ण एवं अधिक मात्रा में कीटनाशकों का प्रयोग न केवल भूमि अपितु भूमिगत जल, पशु, पक्षियों को भी नुकसान पहुंचाता है।

हम राजभाषा, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कृतसंकल्प हैं। प्रधान कार्यालय के साथ–साथ सभी अधीनस्थ यूनिटों में भी राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि हमारी कंपनी को गत तीन वर्षों से लगातार राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार से राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए गौरवमयी कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया जा रहा। मैं आशा करता हूँ कि गृह पत्रिका आपके लिए रोचक एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।

(एस.पी. मोहन्ती)
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

संदेश

रक्षक पत्रिका का अंक 9 आपको प्रस्तुत करते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है। हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि प्रेरणा और प्रोत्साहन के माध्यम से राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार अनवरत बढ़ाते रहें। पत्रिका के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने से कार्मिकों की लेखन प्रतिभा में वृद्धि होती है। कंपनी की गतिविधियों को जनसाधारण तक पहुंचाने में भी रक्षक अपनी भूमिका निभाने में सफलता प्राप्त कर रही है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का ही नहीं बल्कि देश को एक सूत्र में पिरोने का भी सशक्त माध्यम है। इस पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार करने के साथ–साथ कंपनी के कार्यकलापों, योजनाओं, उपलब्धियों और कारोबार संबंधी नवीनतम जानकारी के अतिरिक्त अन्य उपयोगी सामग्री पाठकों को उपलब्ध करवाने का प्रयास करते हैं। यह हर्ष का विषय है कि पत्रिका अपने उद्देश्य का सफलतापूर्वक पालन कर रही है।

जैसा कि मैंने अपने पिछले अंक के संबोधन में कहा था कि कंपनी जन–स्वास्थ्य के साथ–साथ खड़ी फसलों की सुरक्षा के लिए उचित मूल्य पर गुणवत्तायुक्त कीटनाशकों की आपूर्ति करता है। फसलों को कीटों से बचाने के लिए कीटनाशकों को उचित मात्रा और उचित समय पर प्रयोग करने के लिए हिल द्वारा देश के विभिन्न राज्यों में किसानों को प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

कंपनी अपने व्यावसायिक हितों तथा निगमित दायित्वों का ध्यान रखने के साथ–साथ अपने संवैधानिक तथा नैतिक दायित्वों का निर्वाह करने के लिए भी प्रतिबद्ध है। कंपनी द्वारा संसदीय राजभाषा समिति, प्रशासनिक मंत्रालय द्वारा निर्देशों तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के अनुपालनार्थ पूरा प्रयास किया जाता है। कंपनी की वेबसाइट पूर्णतः द्विभाषी है। सभी कार्मिकों को कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने हेतु हिन्दी कार्याशाला के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है। कंपनी में प्रयोग होने वाले शब्दों/वाक्यांशों को सम्मिलित करते हुए एक कार्यालय सहायिका तैयार करके कार्मिकों को प्रदान की गई है, इन प्रयासों के परिणामस्वरूप कंपनी के निगमित कार्यालय को राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के उत्तम निष्पादन के लिए गत तीन वर्षों से लगातार राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार से कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है। प्रधान कार्यालय एवं अधीनस्थ यूनिटों को भी संबंधित नराकास से पुरस्कार के रूप में राजभाषा शील्ड प्राप्त हुई हैं।

कंपनी सदैव ही अपनी विभिन्न व्यापारिक गतिविधियों के साथ–साथ राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में निरंतर अग्रसर है। पत्रिका के इस अंक में पत्रिका को नया रूप देने तथा विभिन्न विषयों के लेखों को समावेश करने का प्रयास किया गया है, कार्यालय से संबंधित विभिन्न गतिविधियां– कृषि, फसल सुरक्षा, राजभाषा, साहित्यिक, स्वास्थ्य जैसे विषयों का चयन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय में हिन्दी को बढ़ावा मिल रहा है।

राजभाषा हिन्दी को समृद्ध, व्यापक और लोकप्रिय बनाने के लिए आप सबका सक्रिय सहयोग वांछनीय है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में 'रक्षक' अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

(एस.चट्टोपाध्याय)
निदेशक (वित्त)

संपादकीय

राजभाषा पत्रिका ''रक्षक'' का नवीन अंक आपको सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रहा है। गृह पत्रिका किसी भी संगठन के कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करती है। देश–विदेश में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए बहुत से प्रयास किए जा रहे हैं। गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन भी इन प्रयासों की एक कड़ी है। आज सरकारी तथा निजी क्षेत्र में हिन्दी को जनव्यापी बनाने में इन गृह पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान रहता है ।

प्रत्येक अंक के साथ पत्रिका अपने नए कलेवर एवं नई रचनाओं के साथ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक बनी हुई है। प्रस्तुत अंक में सम्मिलित अधिकांश रचनांए अवश्य ही आपके कोमल मन को स्पंदित करेगीं। इस अंक में *नैसर्गिक सिद्धांतों के अंतर्गत जांच कार्यवाही, बाधाओं को पार करते हुए हिंदी का बढ़ता कदम..., फॉल आर्मीवर्म की पहचान एवं प्रबंधन, आयुर्वेद, भ्रटाचार का उन्मूलन–एक नैतिक कर्तव्य, बुद्धिमान मशीनें और हम, जल संकट से जूझता मानव* जैसे उपयोगी लेखों के साथ–साथ कंपनी में होने वाली विभिन्न गतिविधयों के सचित्र वर्णन को सम्मिलित किया गया है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार कोविड–19 को ध्यान में रखते हुए हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया है जिसमें ऑनलाईन माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पत्रिका को रोचक बनाने के लिए स्वरचित कविताओं का भी समावेश किया गया। इस छःमाही के दौरान राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा लागू कीर्ति पुरस्कार योजना के अंतर्गत कंपनी को तृतीय पुरस्कार प्राप्त होना हमारी विशेष उपलब्धि हैं। यह पुरस्कार हमारे लिए अत्यंत प्रेरणादायी है। इससे हमें आगे भी कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में और अधिक हिन्दी का उपयोग करने के लिए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिला है। हम आगे भी राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी नियमों, अधिनियमों और नीतियों का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे। हमें बहुत खुशी है कि ''रक्षक'' के गत अंक पर हमें पाठकों से बहुत उत्साहजनक प्रतिक्रियाएं मिली है। आपके सुझाव हमारे लिए आगे भी प्रेरणा–स्रोत बने रहेंगे और हम आपकी अपेक्षा पर खरा उतरने का सदैव प्रयास करते रहेंगे।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह अंक उपरोक्त उपयोगी विषयों से संबंधित जानकारी जनमानस तक पहुंचाने के साथ–साथ पाठकों के लिए उपयोगी एवं रोचक सिद्ध होगा। अंत में बस इतना ही–

हो गई है पीर पर्वत –सी पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी।
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

यह सड़क पर, दूर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
सारी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
हो कही भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

– दुष्यन्त कुमार

अजीत कुमार

(अजीत कुमार)
अधिकारी (राजभाषा)

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका

डॉ. सुमीत जैरथ,
सचिव, राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

राजभाषा अर्थात राज–काज की भाषा, अर्थात सरकार द्वारा आम–जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा। राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयोंध्मंत्रालयोंध्उपक्रमोंध्बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए। तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम–काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम् भूमिका रही है। राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरूप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें मत–मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो?, इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने–कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधान सभा ने सर्वानुमत से 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी।

अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द–भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पंक्तियां 'आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।' को ध्यान में रखते हुए राजभाषा दृ हिंदी को और सरल, सहज और स्वाभाविक बनाने के लिए राजभाषा विभाग ढ़ृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन–प्रति–दिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति–विज्ञान' (Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। माननीय प्रधानमंत्री जी से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए विभाग की रणनीति में 10 'प्र' के फ्रेमवर्क और रूपरेखा लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है, जो निम्न प्रकार से है।

प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्ज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है। प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारीध्कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

प्रोत्साहन (Encouragement)

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय–समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय–समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

प्राइज अर्थात पुरस्कार (Rewards)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयोंधिविभागोंध्बैंकों उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयोंधिविभागोंध्उपक्रमों बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत अधिकारियोंध्कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने–कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्टि आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए सचिव(रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग डेढ़ महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 3 गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्राइज यानि पुरस्कार का महती योगदान होता है।

प्रशिक्षण (Training)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग–अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं– "आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है।" कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी। समय–समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए– ई–प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान – केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत–स्थानीय के लिए मुखर हों (ठम स्वबंस वित टवबंस) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को NIC & Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

प्रयोग (Usage)

'यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it] you lose it)' हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे–धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है इसलिए यह आवश्यक होता है की भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। वर्तमान में राजभाषा हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व– माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृह मंत्री जी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश–विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था। उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न–भिन्न भाषा–भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वतः ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों को बड़ा योगदान है इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

प्रसार (Transmission)

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयोंध्बैंकोंध्उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी में है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार–प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करे। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह–पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई–पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी गृह–पत्रिकाओं का प्रसार होगा और हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई–पत्रिकाओं से लाभान्वित हो सकेंगे। राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ–साथ बालीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है।

प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय–समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच–बिंदु बनवाएं और उपाय करें।

प्रयास (Efforts)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए। यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियां एकदम सटीक बैठती हैं किः–

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों ध् कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन दस 'प्र' को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के सपने को साकार करने में सफल होंगे।

फॉल आर्मीवर्म की पहचान एवं प्रबंधन

सुबी एस बी, पी. लक्ष्मी सौजन्या, जे.सी. शेखर, चिक्कप्पा जी.के., शंकर लाल जाट, साईं दास
भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, दिल्ली इकाई, नई दिल्ली/
शीतकालीन नर्सरी केंद्र, भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

फॉल आर्मीवर्म (स्पोडोप्टेरा फ्रूजीपरडा) (लेपिडोप्टेराः नोक्टुइडे) अमेरिकी मूल का एक विनाशकारी कीट है जिसका हाल ही में भारत में आक्रमण देखा गया और जो वर्तमान में मक्का में आर्थिक नुकसान पंहुचा रहा है। इस कीट का दुष्प्रभाव भारत में पहली बार 18 मई 2018 को कर्नाटक के शिवामोगा में देखा गया। इसके पश्चात् फॉल आर्मीवर्म का दुष्प्रभाव तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, गुजरात, छत्तीसगढ़, केरल, राजस्थान, झारखण्ड, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड, त्रिपुरा, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश एवं सिक्किम में देखा गया।

प्रभावित फसलें

फॉल आर्मीवर्म मुख्य रूप से मक्का की फसल को नुकसान पहुंचाता है। मक्का की अनुपलब्धता में यह कीट ज्वार की फसल पर आक्रमण करता है। यदि दोनों ही फसलें उपलब्ध नहीं हैं तो यह घास कुल की फसलों जैसे– गन्ना, चावल, गेहूं, रागी, चारा घास आदि को प्रभावित करता है। यह कपास और सब्जियों को भी नुकसान पहुँचा सकता है।

खेतों में फॉल आर्मीवर्म की पहचान

फॉल आर्मीवर्म के वयस्क पतंगे तीव्र उड़ान भरने वाले होते हैं जो मेजबान पौधों की तलाश में 100 किलोमीटर से भी अधिक उड़ सकते हैं। फॉल आर्मीवर्म के लिए विशिष्ट फेरोमोन जाल, नर पतंगों को आकर्षित करते हैं। नर पतंगों में दो लक्षण चिह्न यानी, केंद्र की ओर एक हल्के पीले रंग का धब्बा और अग्रपंख के शिखर भाग पर एक सफेद धब्बा होता है (चित्र 1 क)। मादा के अग्रपंख पर मंद धुधले निशान होते है (चित्र 1 ख)

चित्र 1 क नर पतंगे में हल्के पीले रंग का धब्बा (क) और सफेद रंग का एक धब्बा (ख) मादा के अग्रपंख पर मंद धुंधले निशान।

फॉल आर्मीवर्म का जीवन चक्र

एक मादा पतंग, अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में 1000 से अधिक अंडे देती है (चित्र 2)। अण्डों की ऊष्मायन (इन्क्यूबेशन) अवधि 4 से 6 दिन तक होती है। नए जन्मे लारवा हैचिंग साइट से नयी पत्तियों की निचली सतह की बाह्य (एपिडर्मल) परतों पर खाने के लिए पहुंचते हैं। लारवा का विकास 14 से 18 दिन में होता है (चित्र 3 क, ख)। इस दौरान यह इंस्टार नामक छः अवस्थाओं से गुजरता है (चित्र 3 ख पहली से छठी लारवा इंस्टार अवस्था) और उसके बाद प्यूपा में विकसित होता है। प्यूपा लाल भूरे रंग का होता है (चित्र 3 क, ग), जो 7 से 8 दिनों के बाद वयस्क कीट में परिवर्तित हो जाता है (चित्र 3 क, ग)। वयस्क पतंगे 4 से 6 दिनों तक जीवित रह सकते हैं (चित्र 3 क)। भाकृअनुप–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, शीतकालीन पौधशाला केंद्र, हैदराबाद में प्राकृतिक पालन परिस्थितियों में पाया गया कि अगस्त से जनवरी माह में इस कीट की कुल जीवन चक्र अवधि 31 से 35 दिन की होती है। (चित्र 3 क)।

चित्र 2. फॉल आर्मीवर्म के अंडे का समूह।

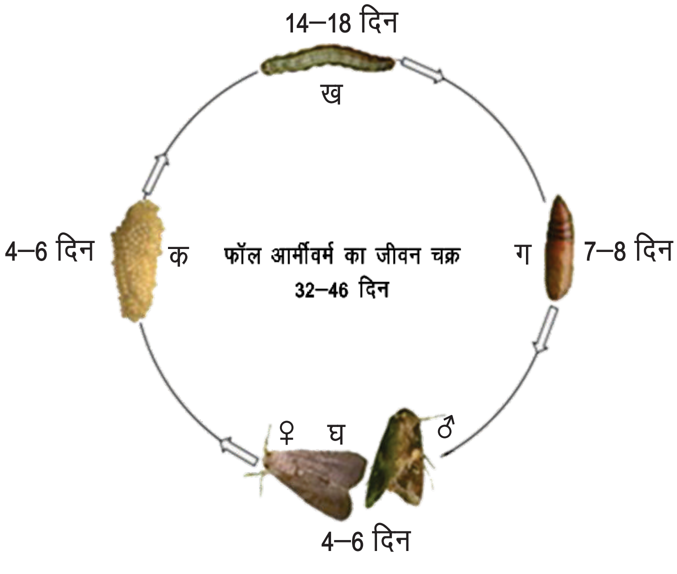

चित्र 3 क फॉल आर्मीवॉर्म का जीवन चक्र क अंडे का समूह ख लारवा ग प्यूपा ग. वयस्क मादा (♀) और नर (♂) पतंगे

फॉल आर्मीवर्म की हानिकारक अवस्था

फॉल आर्मीवर्म की केवल लारवा अवस्था ही मक्का की फसल को नुकसान पहुंचाती है। इसके लारवा मुलायम त्वचा वाले होते हैं जो बढ़ने के साथ हल्के हरे या गुलाबी से भूरे रंग के हो जाते हैं (चित्र 4)।

चित्र 4 फॉल आर्मीवर्म की पहली से छठी इंस्टार लारवा की अवस्थाएं

फॉल आर्मीवर्म की पहचान

आर्मीवर्म की कई प्रजातियों के लारवा मिथिम्ना और स्पोडोप्टेरा जीनस से संबंधित हैं जो एक समान दिखते हैं और मक्का में एक समान लक्षण पैदा करते हैं। फॉल आर्मीवर्म के लारवा हरे, जैतून, हल्के गुलाबी या भूरे रंगों में दिखाई देते हैं, तथा प्रत्येक उदर खंड (चित्र 5 ख) में चार काले धब्बों और पीठ के नीचे तीन हल्की पीली रेखाओं से पहचाने जाते हैं (चित्र 5 क, ख, ग)। इसकी पूंछ के अंत में काले बड़े धब्बे होते हैं जो कि उदर खंड आठ पर वर्गाकार पैटर्न (चित्र 5 ङ) और उदर खंड नौ पर समलम्बाकार (ट्रेपोजॉइड) आकार (चित्र 5 च) में व्यवस्थित होते हैं, जिसकी वजह से यह आसानी से किसी भी अन्य कीट प्रजाति से अलग पहचाना जा सकता है। सिर पर आंखों के बीच में अंग्रेजी भाषा के वाई (Y)–आकार की एक सफेद रंग की सरंचना बनी होती है (चित्र 5 घ)।

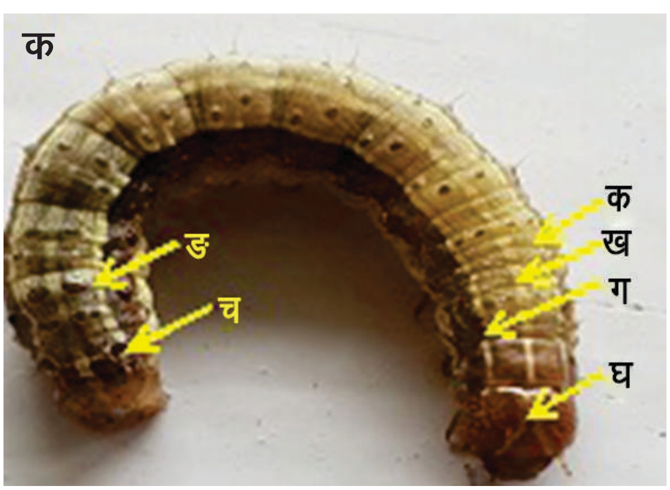

चित्र 5

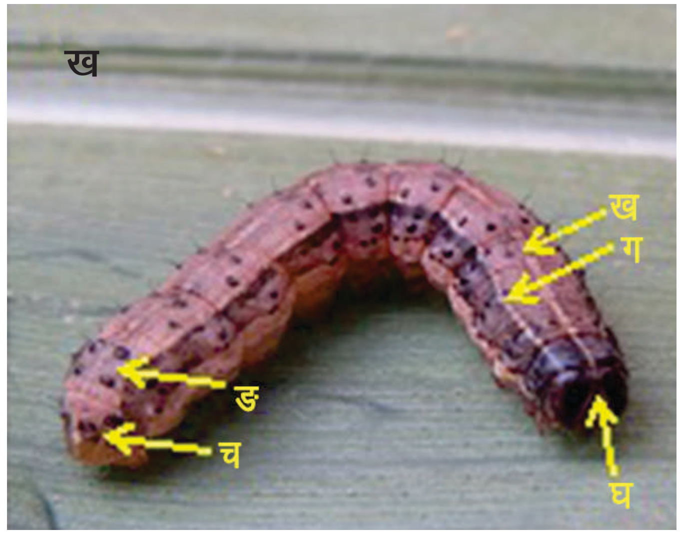

चित्र 5 जैतून (क) और हल्का गुलाबी (ख) रंग के फॉल आर्मीवर्म लारवा। विशेष पहचान चिन्ह पीठ पर तीन प्रमुख रेखाएँ (क,ख,ग)। सिर पर अंग्रेजी भाषा के वाई (Y) के आकार की एक सफेद रंग की संरचना (घ) और उदर खंड आठ पर वर्गाकार (ङ) और उदर खंड नौ, पर समलम्बाकार (ट्रेपोजॉइड) बड़े धब्बे (च)।

मक्का की फसल में फॉल आर्मीवॉर्म के लक्षण और प्रबंधन

फॉल आर्मीवर्म के प्रबंधन में लक्षण आधारित उपचार अति आवश्यक है क्योंकि :– (i) पौधे पर लक्षणों के बढने की अवस्था लारवा वृद्धि अवस्था को दर्शाती है और (ii) कीटनाशक या नियंत्रण उपाय का चुनाव लारवा वृद्धि की अवस्था पर निर्भर करता है।

1. **कागजी छिद्र:** अंकुरित अवस्था से ही मक्का की फसल का अवलोकन करना शुरू कर देना चाहिये। यदि विभिन्न आकार के लम्बे और कागजी छिद्र आस–पास के कुछ पौधों की पत्तियों पर दिखाई देते हैं (चित्र 6), तो फसल फॉल आर्मीवर्म से प्रभावित हो सकती है। यह लक्षण फॉल आर्मीवर्म लारवा की पहली और दूसरी इंस्टार के कारण होते हैं जो पत्ती की सतह को खुरच कर खाते हैं। इस लक्षण की प्रारंभिक पहचान फॉल आर्मीवर्म के प्रभावी प्रबंधन के लिए बहुत जरूरी है।

प्रबंधन

इस स्तर पर वानस्पतिक और सूक्ष्मजीव कीटनाशकों के माध्यम से लारवा का प्रबंधन करना आसान होता है।

1. 5% नीम बीज कर्नेल इमल्शन (NSKE) या ऐजाडिराक्टिन 1500 पीपीएम / 5 मिली / लीटर पानी।
2. बेसिलस थूरिजिंनेसिज {किस्म कुर्स्टकी} फॉर्मूलेशन (डिपल 8एल / 2 मिली / लीटर पानी या डेल्फिन 5 डब्ल्यूजी / 2 ग्राम / लीटर पानी)।
3. एन्टोमोपैथोजेनिक कवक मैटारिजियम एनिसोप्लाए (1x108

सीएफयू/ग्राम)/5 ग्राम/लीटर पानी और/या नोमुरिया रिलेयी चावल अनाज फॉर्मूलेशन (1x108 बनि/ग्राम)/3 ग्राम/लीटर पानी।

हालांकि, जब क्षेत्र में संक्रमण 10% से अधिक होता है, तो बड़े लारवा के लिए अनुशंसित रासायनिक कीटनाशकों का सहारा लेना बेहतर होता है। कीटनाशक स्प्रे के अलावा, कुछ रेत/मिट्टी को अकेले या चूना/राख (9:1) के साथ मिला कर पौधे की गोब में उस समय डालें जब गोब इसके वजन को झेलने के लिए अच्छी तरह विकसित हो जाये। मिट्टी लारवा को नुकसान पहुंचाने के साथ–साथ माइक्रोबियल कीटनाशकों को संरक्षण प्रदान करती है, जो छिड़काव किए गये कीटनाशकों की प्रभावशीलता को बढ़ाती है।

चित्र. 6 खेत में किसानों द्वारा फॉल आर्मीवर्म के शुरुआती नुकसान के लक्षणों की पहचान करते हुए।

2. कटे–फटे छिद्र: एक बार जब लारवा तीसरे इंस्टार अवस्था में प्रवेश करता है, तो इसकी खाने की प्रवृति के कारण पत्तियों पर कटे– फटे (गोल से आयताकार आकार के) छिद्र बन जाते हैं (चित्र 7क)। लारवा की वृद्धि के साथ छिद्रों का आकार भी बढ़ता जाता है (चित्र 7 ख)।

चित्र. 7 फॉल आर्मीवर्म लारवा की तीसरी (क) और चौथी इंस्टार (ख) द्वारा नुकसान

प्रबंधन

फॉल आर्मीवर्म लारवा की तीसरी और चौथी इंस्टार के द्वारा नुकसान होने पर निम्नलिखित रासायनिक कीटनाशकों के छिड़काव की आवश्यकता होती है।

1. स्पाईनटोरम 11.7% एस सी/0.5 मिली/लीटर पानी
2. क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5 एससी /0.4 मिली / लीटर पानी
3. थियामेथोक्साम 12.6% +लैम्बडा साइहैलोथ्रीन 9.5% जेड सी/0. 25 मिली/लीटर पानी

3. अत्याधिक पत्ती हानि: जब लारवा पांचवीं इंस्टार में प्रवेश करता है, तो यह पत्तियों को तेजी से खा कर नष्ट कर देता है (चित्र. 8 क)। लारवा की छठी इंस्टार अवस्था बड़े पैमाने पर पत्तियों को खा कर नष्ट करती है और ज्यादा मात्रा में मल पदार्थ का स्राव करती है (चित्र. 8 ख)।

चित्र. 8 फॉल आर्मीवर्म लारवा के पांचवें (क) और छठे इंस्टार (ख) द्वारा नुकसान

प्रबंधन

कीटनाशकों के स्प्रे (छिड़काव) से पांचवीं और छठी इंस्टार लारवा को नियंत्रित करना अक्सर कठिन होता है। इस स्तर पर केवल विशेष चारा (कीट को फसाने हेतु जहरीला पदार्थ/चुग्गा) ही एक प्रभावी उपाय है। इसके लिए 2–3 लीटर पानी में 10 किलो चावल की भूसी और 2 किलो गुड़ मिलायें और मिश्रण को 24 घंटे तक फेंटने (किण्वन) के लिए रखें। खेतों में अनुप्रयोग से ठीक आधे घंटे पहले 100 ग्राम थायोडिकार्ब 75% WP मिलाएं और 0.5–1 से.मी. व्यास के आकार की गोलियां तैयार करें। यदि गोलियां बहुत चिपचिपी हैं तो रोल करते समय कुछ बालू मिला लें। इस तरह से तैयार किए गए विशेष जहरीले पदार्थ /चुग्गा को शाम के समय पौधों की गोब में डालना चाहिए। यह मिश्रण एक एकड़ क्षेत्र के लिए पर्याप्त होता है।

4. टेसल (नर मंजरी) और भूट्टे को नुकसानः मक्का फसल की प्रजनन अवस्था में टेसल और भुट्टा, दोनों ही पौधे के बहुत संवेदनशील भाग होते हैं। टेसल क्षति मुख्यताः होती है (चित्र 9 क) जिससे आर्थिक नुकसान नहीं होता, लेकिन भुट्टों में वेधन (चित्र 9 ख) सीधे पैदावार को प्रभावित करता है। स्वीट कॉर्न की फसल में भुट्टों को फॉल आर्मीवर्म के द्वारा नुकसान का खतरा अधिक होता है जो भुट्टों को बिक्री के लिए अयोग्य बनाता है (चित्र 7 ग)।

चित्र 9. लारवा द्वारा क्षतिग्रस्त टैसल (क) विकासशील भुट्टा (ख) और स्वीट कॉर्न (ग)

प्रबंधन

मक्का फसल की प्रजनन अवस्था में रासायनिक नियंत्रण उचित नहीं हैं क्योंकि सामान्यतः टेसल क्षति से आर्थिक नुकसान नहीं होता है और मक्का के भुट्टों पर छिड़काव करना व्यर्थ होगा क्योंकि लारवा भुट्टे के अंदर छिपने के बाद कीटनाशक स्प्रे के संपर्क में नहीं आएगा। इसके अलावा स्वीट कॉर्न और बेबी कॉर्न में रसायनों का छिड़काव करना उचित नहीं है, क्योंकि इनको अक्सर बिना प्रसंस्करण के ही सेवन किया जाता है। अतः भुट्टे के अग्र भाग (टिप) को ढकने के साथ ही कसी हुई (टाइट) हस्क वाली मक्का की किस्मों का चयन फॉल आर्मीवर्म के विरुद्ध कुछ सुरक्षा प्रदान कर सकती है।

बिजौपचार

देर से रोपे गए खरीफ और शुरुआती रबी फसलों में बीजोपचार करना जरुरी है। बीज उपचार करने से शुरुआत के 20 दिनों तक फसल में फॉल आर्मी वर्म के नुसान को कम किया जा सकता है। साइंट्रानिलिप्रोएल 19.8% + थियामेथोक्साम 19.8% एफएस/6 मिली लीटर/किग्रा बीज की दर से उपचारित कर बीजों को बोये।

फसल में फॉल आर्मीवर्म को नियंत्रित करने हेतु क्षति सीमा

फॉल आर्मीवर्म क्षति को दर्शाने वाले कुछ पौधों के लिए कीटनाशक प्रयोग की आवश्यकता नहीं होती है। क्योंकि यह किफायती नहीं होता और फसल की वृद्धि के साथ नियंत्रण उपायों को शुरू करने के लिए संक्रमण सीमा का स्तर भी बढता जाता है (तालिका 1)।

क्र.स.	फसल अवस्था	कार्रवाई सीमा	स्प्रे का क्रम
1.	पौध से प्रारंभिक गोब अवस्था के लिए (अंकुरण के 0–2 सप्ताह बाद)	प्रथम पतंगा/जाल की पहली पकड़ और या 5% संक्रमित पौधे	1) पहला स्प्रेः 5% नीम बीज कर्नेल इमल्शन (NSKE) या एजेडिराक्टिन 1500पीपीएम @ 5 मिली/लीटर पानी 2) यदि आवश्यक हो तो एक सप्ताह के बाद दूसरा स्प्रेः बेसिलस थुरिंगिनेसिस किस्म कुर्स्टकी (बीटीके) के फार्मूलेशन, डिपल 8 एल @ 2 मिली/लीटर पानी या डेल्फिन 5 डब्ल्यूजी @ 2 जी/लीटर पानी। 3) यदि इस स्तर पर संक्रमण 10% से अधिक हो तो सूचीबद्ध किसी भी रासायनिक कीटनाशक का छिड़काव करें I. स्पिनेटोरम11.7% एसजी @ 0.5 मिली/लीटर पानी II. क्लोरेंट्रानिलिप्रोएल 18.5 एससी @ 0.4 मिली/लीटर पानी III. योमेथोक्साम 12.6%+लाम्बदा साईहलोथ्रिन 9.5% जेडसी/0.25 मिली/लीटर पानी
2.	प्रारंभिक गोब अवस्था से मध्य गोब अवस्था (अंकुरण के 2–4 सप्ताह बाद)	5–10% संक्रमित पौधे	1) पहला स्प्रेः बेसिलस थुरिंगिनेसिस किस्म कुर्स्टकी (बीटीके) फार्मूलेशन अर्थात, डिपल 8 एल @ 2 मिली/लीटर पानी या डेल्फिन 5 डब्ल्यूजी @ 2 जी/लीटर पानी। 2) दूसरे स्प्रेः के लिए सूचीबद्ध किसी भी रासायनिक कीटनाशक का छिड़काव करें और/या यदि संक्रमण 10% को पार कर जाए I. स्पिनेटोरम 11.7% एसजी @ 0.5 मिली/लीटर पानी II. क्लोरेंट्रानिलिप्रोएल 18.5 एससी/0.4 मिली/लीटर पानी III. थियोमेथोक्साम 12.6%+लाम्बदा साईहलोथ्रिन 9.5% जेडसी/0.25 मिली/लीटर पानी
3.	मध्य गोब अवस्था से देर गोब अवस्था	10–20% संक्रमित पौधे	1) पहला स्प्रेः सूचीबद्ध किसी भी रासायनिक कीटनाशक। दूसरे स्प्रे के लिए कीटनाशको का वैकल्पिक प्रयोग करें।

	(अंकुरण के 4–7 सप्ताह बाद)		I. स्पिनेटोरम 11.7% एसजी @ 0.5 मिली/लीटर पानी II. क्लोरेंट्रानिलिप्रोएल 18.5 एस.सी. @ 0.4 मिली/लीटर पानी III. थियोमेथोक्साम 12.6%+लाम्बदा साईहलोथ्रिन 9.5% जेडसी @ 0.25 मिली/लीटर पानी 2) यदि बड़े लारवा गोब के अंदर खाते हुए पाए जाते है तो थियोडीकार्ब 75% डब्ल्यू.पी. आधारित जहरीले चारे का प्रयोग करें
4.	देर गोब अवस्था (अंकुरण के 7 सप्ताह बाद)	≥20% संक्रमित पौधे	1) पहला स्प्रेः सूचीबद्ध किसी भी रासायनिक कीटनाशक। दूसरे स्प्रे के लिए कीटनाशको का वैकल्पिक प्रयोग करें। I. स्पिनेटोरम 11.7% एसजी @ 0.5 मिली/लीटर पानी II. क्लोरेंट्रानिलिप्रोएल 18.5 एससी @ 0.4 मिली/लीटरपानी III. थियोमेथोक्साम 12.6%+लाम्बदा साईहलोथ्रिन 9.5% जेडसी @ 0.25 मिली/लीटर पानी 2) यदि बड़े लारवा गोब के अंदर खाते हुए पाए जाते है तो थियोडीकार्ब 75% डब्ल्यू.पी. आधारित जहरीलेचारे का प्रयोग करें
5.	टेसल अवस्था से कटाई तक	≥10% भुट्टा क्षति	इस अवस्था में किसी भी कीटनाशक का प्रयोग नहीं करे और लारवा को हाथ से पकड़कर नष्ट करे।

कार्रवाई सीमा का निर्धारण

कार्रवाई सीमा निर्धारण के लिये खेत में फसल की 4–5 बाहरी पंक्तियों को छोड़ने के बाद खेत में "डब्ल्यू" (W) पैटर्न में निरीक्षण करते हुए आराम से चलना चाहिये। प्रत्येक पड़ाव बिंदु पर W (चित्र 10) के कोनों का प्रतिनिधित्व करते हुए 10 पौधों को देखें और क्षतिग्रस्त पौधों की संख्या को रिकॉर्ड करें। प्रत्येक पड़ाव बिंदु पर संक्रमित पौधों का प्रतिशत निकालें। उदाहरण के लिए, यदि 10 में से 1 पौधे का नमूना फॉल आर्मीवर्म द्वारा संक्रमित है, तो संक्रमण 10% है। इसी प्रकार सभी पड़ाव बिंदुओं का औसत प्रतिशत निकाले। यदि औसत प्रतिशत संक्रमण, पौध अवस्था से मध्य गोब अवस्था तक 10% और यदि मध्य गोब अवस्था में संक्रमण 20% को पार कर जाता है, तो यह कीटनाशक स्प्रे को अनुशंसित (सिफारिश) करता है। अंकुरित अवस्था उपरान्त हर सप्ताह पौधों का निरीक्षण किया जाना चाहिए।

चित्र. 10 मक्का क्षेत्र में फॉल आर्मीवर्म क्षति का अनुमान लगाने के लिए नमूनाकरण तकनीक

फॉल आर्मीवर्म से प्रभावित क्षेत्रों के लिए प्रबंधन रणनीतियां

फसल प्रबंधन उपायों के साथ–साथ खेत में व्यवस्थित तरीके से पौधों की सुरक्षा से हानिकारक स्तरों के नीचे फॉल आर्मीवर्म आबादी का प्रबंधन कर सकते है। एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) निम्नानुसार किया जाना चाहिए।

1. एकल क्रॉस संकर मक्का का चयन और विशेष रूप से मीठी मक्का के लिए भुट्टे के अग्र भाग (टिप) को ढकने के साथ ही कसी हुई (टाइट) हश्कवाली मक्का की किस्मों का चयन करें।
2. प्रत्येक फसल की कटाई के बाद मिट्टी पलटने के लिये गहरी जुताई करे जिससे फ़ॉल आर्मीवर्मके प्यूपा मिट्टी के बाहर सूरज की रोशनी में आ सके और परभक्षी प्यूपा को खाकर नष्ट कर दे। यदि शून्य–जुताई अपनायी जाती है, तो नीम केक/500 किग्रा/हेक्टेयर फैलाएं। खेतों को खरपतवार मुक्त बनाए रखें और संतुलित उर्वरक अनुप्रयोग का पालन करें।
3. क्षेत्र विशेष की उपयुक्त दलहनी फसलों के साथ मक्का की अंतरवर्तीय खेती (इंटर–क्रॉपिंग) द्वारा पौधों की विविधता को अधिकतम करने की योजना बनायें। जैसेः मक्का+ अरहर/चना/मूंग, सीमावर्ती पंक्तियों में नेपियर घास को फ़ॉल आर्मीवर्म की ट्रैप फसल के रूप में कार्य करने के लिए लगाएं।
4. पौधों को एक समान दूरी पर बनाये रखे एवं एक जगह पर एक से ज्यादा पौधों को ना लगाये

5. नियंत्रण उपायों के बाद, फसल की वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए नाइट्रोजन और पानी का उपयोग करे।
6. एक ही समय में (समकालिन) रोपण करने के लिए सामुदायिक स्तर पर बुआई के समय की योजना बनाएं।
7. यदि परिनगरीय क्षेत्रो में बेबी कॉर्न और स्वीट कॉर्न की खेती में समयान्तराल बुआई अनिवार्य है, तो साप्ताहिक अंतराल पर 5% नीम बीज कर्नेल इमल्शन (NSKE)या एजाडीरेक्टिन 1500 पीपीएम @ 5 मिली/लीटर की दर से फसल का छिड़काव करें या फसल अंकुरण के शुरू होने के एक सप्ताह से कटाई तक साप्ताहिक अंतराल पर ट्राइकोग्रामा प्रीटिओसम @ 50,000 या टेलीनोमस रेमुस @ 10,000 प्रति एकड़ छोड़ें।
8. फॉल आर्मीवर्म के आगमन और उसकी संख्या की निगरानी हेतु फसल के अंकुरण पर या उससे पहले फेरोमोन ट्रैप @ 5/एकड़ लगाये। इनकी संख्या बढोतरी को नियंत्रण में रखने के लिए एवं नर पतंगों को बड़े पैमाने पर फँसाने के लिए 15 ट्रैप/एकड़ का उपयोग करें।
9. फसल की बुआई के तुरंत बाद पक्षियों के बैठने के लिए शरण स्थल (पर्च) @ 10/एकड़ लगाये।
10. खेत का साप्ताहिक निरिक्षण करें और कार्रवाई सीमा पर लक्षण आधारित नियंत्रण उपायों को अपनाएं (तालिका 1)
11. निरिक्षण करते समय अण्डों और लारवा को हाथ से उठाएं और कुचल कर याकेरोसिन के पानी में डुबोकर नष्ट करें। लार्वा को मुर्गी और मछली को भी खिलाया जा सकता था।

सावधानियां

1. कीटनाशकों के स्प्रे एवं जहरीले पदार्थ/चुग्गे का प्रयोग करते समय दस्ताने व मास्क का उपयोग करें।
2. सभी कीटनाशकों का स्प्रे और जहरीला पदार्थ/चुग्गे का प्रयोग पौधों की गोभ में ही करे।
3. कीटनाशकों के स्प्रे के 48 घंटे बाद ही खेत में प्रवेश करें।
4. कीटनाशकों के स्प्रे और जहरीले पदार्थ/चुग्गा प्रयोग किए गए खेत में जानवरों को कम से कम एक महीने तक चराई करने से रोकें।
5. अगर दूसरी बार कीटनाशक को छिड़कने की जरुरत है तो पहली बार प्रयोग किये गये कीटनाशक का प्रयोग नहीं करें। दूसरी बार दूसरे कीटनाशक के प्रयोग करने से नियंत्रण अच्छा होता है और कीटों में कीटनाशक रोधी क्षमता भी उत्पन्न नहीं होती है।

कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों के प्रयोग में सावधानियां

डॉ0 अशोक कुमार शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान–सरसों अनुसंधान निदेशालय, राजस्थान

फसल उत्पादन में कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों का महत्व

आधुनिक युग में कृषि से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों के साथ रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जा रहा है। इससे अधिक उत्पादन मिलने के साथ–साथ कीट, बीमारियों एवं खरपतवार के संक्रमण का खतरा भी रहता है। अधिक उत्पादन लेने हेतु बुवाई से पूर्व बीजोपचार तथा बुवाई के उपरान्त कीट नियंत्रण एवं समय–समय पर बीमारियों से बचाव हेतु विभिन्न रासायनिक दवाओं का प्रयोग किया जाता है। इनमें से अधिकतर रसायन अति विषाक्त होते हैं और जितना इनके प्रयोग की आवश्यकता है, उससे कहीं अधिक इनके प्रयोग में सावधानी रखनें की है। यदि इन रसायनों का सावधानीपूर्वक प्रयोग नहीं किया गया तो यह मनुष्य एवं अन्य जीव–जंतुओं के लिए बहुत ही घातक हो सकते हैं।

इसलिए कुछ बातों का ध्यान रखने के साथ–साथ इनके प्रयोग क्या–क्या सावधानियां रखनी चाहिए, इसकी जानकारी किसानों को होना आवश्यक है। कीटनाशकों के घातक प्रभावों से बचने के लिए आवश्यक होता है कि उन पर लिखे हुए निर्देशों का पालन ठीक ढंग से किया जाए, जिसमें किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए।

सामान्यतः कृषक अपने खेतों में हानिकारक जीवों की निगरानी के लिए पर्याप्त समय देते है। यह अच्छी बात है, परन्तु, कुछ कृषक कुछ कीट देखते ही घर में उपलब्ध रसायन या तुरन्त क्रय करके छिड़काव कर देते है। वहीं कुछ कृषक प्रतीक्षा करते है कि कम कीट है, और उस प्रतीक्षा में कीट आर्थिक हानि पहुँचाने लगते है, तत्पश्चात छिड़काव का प्रबंध करते है। दोनों तरीकों में छिड़काव से लाभ न होकर व्यय/श्रम आदि बेकार जाता है। इसके लिए कुछ बातों को ध्यान में रखना चाहियेः–

1. प्रकृतिक नियंत्रण की सफलता के लिए प्रयासरत रहें।
2. फसल में हानिकारक कीटों तथा लाभकारी कीटों का अनुपात 2:1 हो तो रसायन के छिड़काव की जरूरत नहीं है। शत्रुकीट की संख्या बड़ने एवं लाभकारी कीटों की संख्या कम होने पर ही कोई प्रभावी उपाय अपनाना चाहिए। रसायनों का प्रयोग अंतिम लक्ष्य हो।
3. कीटों द्वारा हानि पहुँचाने के तरीकों तथा उनके जीवन चक्र का अध्ययन करना आवश्यक है। अर्थात् अनुभवी विशेषज्ञ से जानकारी प्राप्त करके ही प्रभावशील कीटनाशी रसायन का चुनाव करना चाहिए।
4. रसायन का छिड़काव आवश्यक होने पर ध्यान रखें कि लाभकारी कीट एवं परागण कीटों की अधिकतम सुरक्षा रहे। अतः ऐसे रसायनों का चयन करना चाहिए जो इन लाभकारी कीटों को कम से कम नुकसान पहुँचाते हो।

कीटनाशक खरीदते समय की सावधानियाँ

इन दवाओं की खरीददारी करते समय किसान भाइयों को निम्न सावधानियाँ बरतनी चाहिएः–

1. प्रतिबंधित रसायनों को ना खरीदें। ये आपके और पर्यावरण के लिए हानिकारक होते हैं।
2. फसल में लगने वाली बीमारी, कीट या खरपतवार की पहचान के अनुसार ही इनके नियंत्रण की दवा खरीदें। यदि इनकी पहचान में समस्या हो तो कृषि विशेषज्ञ/कृषि वैज्ञानिक/कृषि विभाग के अधिकारी/कर्मचारी से इनकी पहचान करवा लें।
3. इन रसायनों को केवल पंजीकृत दुकानों से ही खरीदें और दुकानदार से पक्का बिल लें।
4. एक बार की आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त मात्रा में इन रसायनों को खरीदें।
5. कीटनाशकों को खरीदते समय हमेशा उसके बनने की तिथि एवं उपयोग करने की अंतिम तिथ (एक्सपायरीडेट) को अवश्य पढ़ें। समाप्ति तिथि के पश्चात् रसायनों का प्रयोग न करें। खुले कीटनाशक न खरीदें।
6. अच्छी तरह से पैक कीटनाशक ही खरीदें। किसी भी प्रकार से कटे–फटे या रिसते डिब्बे ना खरीदें।
7. खुले कीटनाशक न खरीदें।

रसायनिक कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों के भण्डारण के समय की सावधानियाँ

इन दवाओं के भण्डारण के समय किसान भाइयों को निम्न सावधानियाँ बरतनी चाहिएः–

1. उपयुक्त मात्रा में ही कीटनाशक खरीदें।
2. भण्डारण उसके मूल डिब्बें में ही करें।
3. शुष्क तथा ठण्डें स्थान पर भण्डारण करें तथा धूप आदि से बचाएं।
4. एक बार ढक्कन खोलने पर दोबारा उसे कस कर बन्द करें।
5. भण्डारण वर्गीकृत ढंग से करें जैसे– कीटनाशक, फफूंदनाशक, शाकनाशक आदि।

6. रसायनों को बच्चों एवं जानवरों की पहुँच से दूर हमेशा ताले के अन्दर ही भण्डारण करें।

रासायनिक कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों के उपयोग से पहले ही सावधानियाँ

इन दवाओं के उपयोग से पहलें किसान भाइयों को निम्न सावधानियाँ बरतनी चाहिए:–

1. इन दवाओं के साथ मिलने वाली उपयोग करने की पुस्तिका या लीफलेट में दी गयी जानकारी को जरूर पढ़ें।
2. इस्तेमाल से पहले स्प्रेयर/डस्टर आदि मशीनों को पानी भरकर खाली चलाकर नोज़ल आदि को भलीभांति देख लें। नोज़ल की सफाई करते समय मुँह से फूँक ना मारे। इन उपकरणों में किसी प्रकार का रिसाव नहीं होना चाहिए।
3. रसायन की निश्चित मात्रा/लेवल के अनुसार माप कर ही उपयोग में लें।
4. घोल बनाते समय सामान्य तौर पर एक से अधिक रसायनों को मिलाकर घोल नहीं बनायें।

रासायनिक कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों के छिड़काव के समय की सावधानियाँ

साधारणतः इस प्रकार के सभी रसायन ज़हरीले होते हैं और इनका उपयोग करने वाले किसानों के स्वास्थ्य को हमेशा खतरा बना रहता है। साथ ही कीट एवं रोग पर उचित नियंत्रण हो इसके लिए किसान भाईयों को कुछ प्रमुख बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक है।

उपयोग के समय :–

- रसायनों के छिड़काव/भुरकाव तथा बीजोपचार के समय हाथों में दस्ताने पहनें, नाक पर मास्क या कपड़े का प्रयोग करें, आँखों पर चश्मा लगायें, सिर पर कपड़ा बाँधे ओर शरीर पूरा ढका हो ताकि शीर पर कीटनाशक न गिरे।
- शरीर पर खुले घाव हो तो इन पर मोटी पट्टी बाँधें।
- छिड़काव सायंकाल हवा नहीं चलने के समय करना चाहिए।
- छिड़काव/भुरकाव हवा की दिशा में ही करें।
- छिड़काव/भुरकाव इस प्रकार करें कि पौधें की पत्तियों के ऊपर व नीचे दोनों ओर दवा चिपक जाए क्योंकि अधिकतर कीट–रोग का पत्तों की निचली सतह पर ही प्रकोप अधिक होता है।
- कीटनाशी दवा के छिड़काव/भुरकाव के समय बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, गुटका आदि न खायें।
- छिड़काव/भुरकाव के समय तथा तुरन्त बाद बच्चों, पशु, पक्षियों आदि को खेतों में नहीं आने दें।

उपयोग के बाद :–

1. स्प्रेयर/डस्टर आदि काम में आये उपकरण व बर्तन को साबुन या कपड़े धोने के पाउडर से धोकर साफ करें।
2. छिड़काव/भुरकाव करने वाले व्यक्ति को साबुन से नहाना चाहिये व कपड़े भी साबुन से धोवें।
3. इन रसायनों के डिब्बों को किसी अन्य काम में नहीं लेना चाहिए तथा इन्हें जलाने की बजाय तोड़कर ज़मीन में 2 फुट गहरे गढ्ढे में दबा दें।

किसानों के स्तर पर कीटनाशक की विषाक्तता के मुख्य कारण

इसका प्रमुख कारण है कीटनाशकों के विषय में किसानों की अनभिज्ञता। किसान अधिकांशतः सुरक्षा प्रदान करने वाले साधनों को उपयोग में नहीं लेते हैं जैसे–दस्ताने, मास्क, धूप के चश्में तथा सुरक्षा देने वाली पोशाकें इत्यादि। कृषक कीटनाशकों के प्रयोग संबंधित सावधानियों का भी अनुसरण नही करतें हैं, जिसके फलस्वरूप कीटनाशकों की विषाक्तता के शिकार होते हैं।

कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों से प्रभावित व्यक्ति के लिए प्राथमिक चिकित्सा

अगर विष का असर महसूस हो जैसे कि चक्कर आना, भारीपन, पेटदर्द, उल्टी आदि हो तो प्राथमिक चिकित्सा अवश्य लें। सभी सावधानियां रखने के बावजूद भी यदि कोई व्यक्ति इन कीटनाशकों का शिकार हो जाए तो निम्नलिखित उपचार करना चाहिए।

1. रोगी शरीर से विष को शीघ्र अति शीघ्र निकालने का प्रयास करना चाहिए।
2. यदि किसी ने ज़हर खा लिया है तो एक गिलास गुनगुने पानी में दो चम्मच नमक मिलाकर उल्टी करानी चाहिए।
3. विषमारक दवा का प्रयोग करना चाहिए। उपलब्ध हो तो एट्रोपिन का 1 एम.एल. इंजेक्शन लगवाएं तथा तुरंत इलाज के लिए डाक्टर से संपर्क करें।
4. रोगी को तुरंत किसी पास के अस्पताल या डॉक्टर के पास ले जाएं।
5. यदि व्यक्ति ने विष सूंघ लिया है तो शीघ्र ही खुले स्थान पर ले जाएं। शरीर के कपड़े ढीले कर दें। यदि दौरे पड़ रहे हैं, तो अंधेरे स्थान पर ले जाएं। यदि सांस लेने में समस्या हो रही हो तो पेट के सहारे लिटाकर उसकी बांहों को सामने को फैला दें एवं रोगी की पीठ को हल्के–हल्के सहलाते हुए दबाएं और जरूरत पड़ने पर कृत्रिम श्वास का भी प्रबन्ध कर सकते हैं।

छिड़काव/भुकाव का उचित समय

छिड़काव/भुरकाव का उचित समय सायंकाल है ताकि मधुमक्खियों की क्रियाशीलता पर उसका कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़ें। भुरकाव प्रातःकाल में किया जा सकता है। छिड़काव के समय हवा स्थिर या बहुत हल्की होनी चाहिए। तेज़ हवा में छिड़काव या भुरकाव कदापि न करें।

प्रबन्धन

नैसर्गिक सिद्धांतों के अंतर्गत जांच कार्यवाही

पी.सी. सिंह
महाप्रबन्धक (मा.सं. एवं प्र.)
एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी (अंशकालिक), निगमित कार्यालय

प्रारंभ में ही यह स्पष्ट कर दिया जाता है कि निजी रोजगार में घरेलू जांच संदेहास्पद होती है, यह आवश्यक रूप से इसलिए है क्योंकि इसमें चार्जशीट नियोक्ता द्वारा दी जाती है तथा जांच भी नियोक्ता द्वारा किसी अधिकारी अथवा नियुक्त किए गए किसी बाहरी व्यक्ति द्वारा की जाती है। ऐसे में नियोक्ता अभियोजक एवं न्यायाधीश दोनों की भूमिका को प्रस्तुत करता है। ऐसी परिस्थिति में पक्षपात होने की शंका होना अपरिहार्य है। अपचारी कर्मचारी का जांच अधिकारी में विश्वास नहीं होना इसका प्रमुख कारण है। वे जांच में अनिच्छा से भाग लेते हैं और जांच को बाधित करने का हर संभव प्रयास करते हैं। वे जांच अधिकारी की नियुक्ति की वैधता से संबंधित कई आपत्तियां उठाते हैं। वे वकील अथवा यूनियन लीडरों द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने की मांग भी करते हैं। वे कई दस्तावेज़ों, चाहे संदर्भित हो या नहीं, की भी मांग करते हैं। इसके अतिरिक्त, अपचारी कर्मचारी अथवा उनके प्रतिनिधि, गवाहों की प्रतिपरीक्षा को प्रतिबंधित नहीं करते हैं और जांच अधिकारियों को दी गई परिस्थितियों में निर्णय लेना होता है। जांच के दौरान ध्यान देने वाले विभिन्न पूर्वावधानों को इन स्थानों पर संक्षेपित नहीं किया जा सकता है परन्तु इसी संदर्भ में, यह बताना उचित होगा कि कोई जांच न्याय के नैसर्गिक सिद्धांतों का उल्लंघन होगी जब अपचारी व्यक्ति को जांच का समय, तिथि एवं स्थान संप्रेषित नहीं किया गया हो, अतः कार्यरत व्यक्ति का नौकरी से बर्खास्त का समापन आदेश रद्द करने योग्य होगा।

भ्रष्टाचार का उन्मूलन–एक नैतिक कर्तव्य

यशवंत सिंह
उप प्रबन्धक (सतर्कता), निगमित कार्यालय

किसी भी संगठन विशेषतः सार्वजनिक क्षेत्र के संगठन में सतर्कता अत्यधिक आवश्यक गतिविधि है। यह संगठन में अधिक पारदर्शिता, जवाबदेही लाकर तथा लोक प्राधिकरणों के विवेकाधिकार को कम करके निरंतर सुधार के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य कर सकता है। चूंकि भ्रष्टाचार और अन्य अनैतिक प्रथाएं जीवन के प्रत्येक पड़ाव में व्याप्त हैं और वे प्रगति और समृद्धि के मार्ग का सामना करने वाली प्रमुख समस्याओं में से एक हैं। इससे जुड़ी अंतर्निहित विकृतियों को समझने और उसका सामना करने के लिए ईमानदार प्रयासों की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से भ्रष्टाचार के विरुद्ध इस लड़ाई में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त नहीं हुई है जबकि केंद्र तथा राज्य सरकारों के स्तर पर इसका मुकाबला करने का भरोसा दिलाया गया गया है। अतः भ्रष्टाचार पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन के साथ–साथ पुनः समर्पित प्रयास अपरिहार्य हैं।

यहां यह कहना व्यर्थ होगा कि भ्रष्टाचार जीवन के मूल मूल्यों को क्षय कर देता है। न केवल कॉरपोरेट जगत के लिए अपितु हमारे समाज के लिए भी भ्रष्टाचार उन्मूलन को एक कानूनी दायित्व ही नहीं अपितु नैतिक कर्तव्य माना जाना चाहिए। नैतिक मूल्यों का आंतरिककरण और यह सुनिश्चित करना कि दीर्घावधि सफलता के लिए इन मूल्यों का संगठन की नीतियों और व्यवहार में अप्राप्य रूप से सम्मिलित होना आवश्यक है। वर्तमान समय में सतत व्यापार के लिए अच्छा कॉरपोरेट प्रशासन आवश्यक है। इसलिए हम सभी को सतर्कता को जीवन की एक शैली, दृष्टिकोण, विचार प्रक्रिया और सर्वाधिक रूप से संगठन की संस्कृति के सभी अभिन्न अंग से ऊपर बनाना है। सक्रिय, निवारक, भागीदारी और दंडात्मक सतर्कता के मिश्रण को अपनाना समय की आवश्यकता है। मुख्य उद्देश्य आंतरिक प्रणालियों प्रक्रियाओं और प्रथाओं में स्थायी समावेशी सुधारों को बढ़ावा देना है।

भ्रष्टाचार क्या है?

वास्तव में भ्रष्टाचार की कोई विशिष्ट परिभाषा नही है। तथापि यह समझना आवश्यक है कि किसे भ्रष्टाचार कहा जाए। निम्न के संदर्भ में यह व्यापक रूप से स्पष्ट किया जा सकता है : अनुचित या गैरकानूनी व्यवहार विशेष रूप से शक्तिशाली लोगों (जैसे सरकारी अधिकारी या पुलिस अधिकारी) द्वारा या अनुचित व गैर–कानूनी तरीकों (जैसे रिश्वत) के माध्यम से/मूल या उचित अथवा सही से हटकर गलत करना। संक्षिप्त में यह मुख्य रूप से निजी लाभ के लिए सार्वजनिक कार्यालय का उपयोग करता है।

भ्रष्टाचार या भ्रष्ट आचरण का कारण क्या है ? इसमें कोई संदेह नहीं है, भ्रष्ट प्रथाओं का मूल कारण मानव लालच है, जिसका उन्मुलन कठिन है। इसके अतिरिक्त, भ्रष्टाचार और गरीबी के बीच एक मजबूत संबंध है। अतः भ्रष्टाचार को दुनिया से पूर्ण रूप से समाप्त कर पाना संभव नहीं है। विश्व के नाजुक लोकतंत्रों में भ्रष्टाचार से निपटना विशेष रूप से कठिन है, परन्तु हमारे मामले में यह अलग है। हम ठोस लोकतांत्रिक स्थापना के साथ एक विकासशील राष्ट्र हैं। हमारे पास शासन के प्रमुख क्षेत्रों से भ्रष्टाचार को दूर करने, इसके दायरे को कम करने और इसके उत्पन्न होने की संभावना को कम करने के लिए अति आवश्यक उपकरण हैं। नियमों, विनियमों और प्रक्रियाओं का सरलीकरण; विवेक और विवेकाधीन शक्तियों को कम करना, नीतियों और प्रक्रियाओं की आवधिक एवं समय–समय पर समीक्षा, कार्रवाई में पारदर्शित और निष्पक्षता सुनिश्चित करना, निर्णय लेने वालों को उनके कार्यों/विचलन के लिए जवाबदेह बनाना, संगठन में उच्च स्तर के नैतिक मानकों, अखंडता और प्रतिबद्धता को बढ़ावा देना और धोखाधड़ी करने वाले व्यक्तियों के लिए कड़ी सजा सुनिश्चित करना इस देश में भ्रष्टाचार को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

सुशासन के उद्देश्यों को पारदर्शिता और सार्वजनिक जवाबदेही के माध्यम से प्राप्त करने के लिए भारत सरकार द्वारा अपनी विभिन्न एजेंसियों जैसे केंद्रीय सतर्कता आयोग, नियंत्रण एवं महालेखा परीक्षा, केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो, सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 आदि के माध्यम से प्रतिमानक और मानदंड निर्धारित किए गए हैं। इन मानदंडों को विकास या प्रदर्शन में बाधाओं के रूप में नहीं अपितु हमारे अधिकारियों को बेहतर व्यावसायिक प्रथाओं और नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

'सतर्कता–संभावित खतरे या कठिनाइयों के लिए सावधानी पूर्वक निगरानी रखने की क्रिया या स्थिति' है। एक संगठन में, सतर्कता पुरूषों, प्रकरणों, सामग्रियों, व्यक्तियों, संपत्ति पर नजर रखना और नैतिक प्रथाओं को बढ़ावा देने और आधिकारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन में सत्यनिष्ठा और ईमानदारी सुनिश्चित करने के लिए त्वरित कार्रवाई करना। व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करने के लिए अनैतिक गतिविधियों में लिप्त रहने वाले बेईमान व्यक्ति न केवल संगठन को हानि पहुंचाते हैं, अपितु इसकी अच्छी प्रतिष्ठा को भी नुकसान पहुंचाते हैं। इसलिए, इस प्रकार के भ्रष्ट और धेखाधड़ी वाले व्यक्तियों की गतिविधियों की जांच करना आवश्यक है। कर्मचारियों अथवा देश में प्रत्येक नागरिक के मध्य उनकी शैक्षिक, आर्थिक या अधिवास स्थिति से अलग भ्रष्टाचार के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा करता, क्योंकि यह सभी को प्रभावित करता है। अब एक दिन विशेष रूप से मीडिया विशेषतः के माध्यम से लिए यह प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। वर्तमान युग में जनसंचार माध्यम विशेषतः सोशल मीडिया के व्यापक विकास के माध्यम से यह प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। परन्तु हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि इसका किसी भी प्रकार से दुरूपयोग न हो। क्या किसी को सतर्कता से घबराने की आवश्यकता है? सतर्कता किसी भी कार्मिक का शोषण नहीं करती है अपितु प्रणाली तथा कार्य वातावरण की समुन्नति के लिए निम्नलिखित गतिविधियों के अनुसरण द्वारा प्रबन्धन की सहायता करती हैः–

i. सत्यनिष्ठ व्यक्ति की रक्षा करना

ii. मुखबिरों को प्रोत्साहित करना

iii. किसी दुर्भावना के बिना व्यापार के हित में गलत निर्णय लेने वाले व्यक्ति के साथ न्याय करना

iv. भ्रष्ट अधिकारियों के विरूद्ध कार्रवाई आरंभ करना

v. नैतिक एवं स्वस्थ कार्य संस्कृति का निर्माण करना

अंत में, महान उद्देश्यों को केवल महान साधनों का अनुसरण करके ही प्राप्त किया जा सकता है। कोई भी अच्छाई बुरा कार्य करके प्राप्त नहीं की जा सकती है, भले ही उनका अभिप्राय अच्छा ही क्यों न हो और इसलिए ईमानदारी के मार्ग पर चलने के लिए जीवन में सतर्क रहने की आवश्यकता है। हमें देशभक्त प्रेम के साथ प्रबुद्ध व्यक्तियों को जीवन के हर क्षेत्र में कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने का गुण प्रदान करना चाहिए। आइए हम अपने महान सरदार पटेल के शब्दों के साथ स्वयं को फिर से पुनः समर्पित करें : ''भारत के प्रत्येक नागरिक को यह याद रखना चाहिए कि वह एक भारतीय है और उसे इस देश में हर अधिकार है पर कुछ जिम्मेदारियों के साथ।''

उत्पादकताः आज के संदर्भ में

महेन्द्र सिंह
महाप्रबन्धक (तकनीकी), निगमित कार्यालय

उत्पादकता की परिभाषा

सामान्य अर्थ में, उत्पादकता उद्यम के इनपुट और आउटपुट के बीच संबंध है। यह हमारे द्वारा उत्पादित और उपयोग किए गए संसाधनों के बीच मात्रात्मक संबंध है। समाज के जीवन स्तर को बढ़ाने का एकमात्र तरीका उत्पादकता को बढ़ाना है। इनपुट की प्रत्येक इकाई से आउटपुट बढ़ाकर उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

उत्पादकता माप की अवधारणाओं का स्तर कई पक्षीय है। यह प्रत्येक वस्तु/गतिविधि से संबंधित हो सकता है, जिस पर अंतिम उत्पाद प्राप्त करने के लिए प्रबंधन द्वारा धन खर्च किया जाता है।

नीचे दी गई कुछ परिभाषाएँ, उत्पादकता की मूल अवधारणा को समझाती हैं:

(i) उत्पादकता इस बात का माप है कि किसी दिए गए आउटपुट को बनाने के लिए कितने इनपुट की आवश्यकता होती है अर्थात यह इनपुट के आउटपुट का अनुपात है।

(ii) उत्पादकता उत्पादन की मात्रा और उत्पादन के दौरान उपयोग किए जाने वाले संसाधनों की मात्रा के बीच का अनुपात है। संसाधन सामग्री, मशीनों, पुरुषों और अंतरिक्ष के किसी भी संयोजन के हो सकते हैं।

(iii) यूरोपीय उत्पादकता परिषद ने परिभाषित किया *''उत्पादकता मन का एक दृष्टिकोण है। यह प्रगति की मानसिकता है, जो कि निरंतर सुधार की अवधारणा पर आधारित है । यह कल और लगातार बेहतर करने में सक्षम होने की निश्चितता है। यह बदलती परिस्थितियों के लिए आर्थिक और सामाजिक जीवन का निरंतर अनुकूलन है। यह नई तकनीकों और तरीकों को लागू करने के लिए निरंतर प्रयास है। यह मानव प्रगति में विश्वास है ।''*

(iv) पीटर ड्रकर के अनुसार, ''उत्पादकता का अर्थ उत्पादन के सभी कारकों के बीच संतुलन है जो कि छोटे से प्रयास के साथ अधिकतम उत्पादन देगा।''

(v) ILO के अनुसार आम तौर पर उत्पादकता का अर्थ है, ''उत्पादन सूचकांकों द्वारा मापी गई मात्रा के बीच का अनुपात और श्रम इनपुट की इसी मात्रा को रोजगार सूचकांकों द्वारा मापा जाता है।''

(vi) यूरोपीय आर्थिक समुदाय (OEEC) का संगठन उत्पादकता को परिभाषित करता है, जो कि मात्रा द्वारा मापी गई वस्तु के उत्पादन और मात्रा के हिसाब से मापा गया एक या अधिक इनपुट कारकों के बीच का अनुपात है । इस प्रकार प्रत्येक इनपुट के अनुरूप प्रदर्शन के स्तर को दर्शाने वाले कई उपाय हो सकते हैं। सामान्य अर्थों में,

$$\text{Productivity} = \frac{\text{Measure of output}}{\text{Measure of input}}$$

एक व्यापारिक संगठन में ज्यादातर मामलों में आउटपुट माल और सेवाओं का उत्पादन होगा, जिसके लिए इनपुट पुरुषों, धन, उपकरण, बिजली, सुविधाएं और उत्पादन की प्रक्रिया में उपयोग की जाने वाली अन्य वस्तुएं होंगी।

फर्म की कुल उत्पादकता को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है:

फर्म की कुल उत्पादकता को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है:

$$P_T = \frac{Q_T}{L+C+R+M}$$

जहां पी$_{\text{टी}}$: कुल उत्पादकता

एल = श्रम इनपुट

सी = पूंजी इनपुट

आर = कच्चा माल और खरीदा भागों इनपुट

एम = अन्य विविध वस्तुओं और सेवाओं के इनपुट कारक

क्यू$_{\text{टी}}$ = कुल उत्पादन

सभी इनपुट और आउटपुट कारकों को कुछ सामान्य इकाई में मापा जाता है। उत्पादकता इस बात का एक उपाय है कि दिए गए उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संसाधनों का कितना अच्छा उपयोग किया जाता है।

उत्पादकता का महत्व

अविकसित और विकासशील देशों के लिए उत्पादकता की अवधारणा का बहुत महत्व है। दोनों ही मामलों में सीमित संसाधन हैं जिनका उपयोग अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए किया जाना चाहिए अर्थात सस्ता, सुरक्षित और तेज तरीके से कार्य करने की मानसिकता होनी चाहिए।

उपलब्ध संसाधनों का तर्कसंगत उपयोग होना चाहिए ताकि न्यूनतम प्रयासों और व्यय के साथ अधिकतम उत्पादन हो सके। उत्पादकता विश्लेषण और माप उन चरणों और स्थितियों को इंगित करते हैं जहां आउटपुट बढ़ाने के लिए इनपुट के काम में सुधार संभव है।

उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारक

सभी कारक, जो एक उत्पादन प्रक्रिया के इनपुट और आउटपुट घटकों से संबंधित हैं, उत्पादकता को प्रभावित कर सकते है।

इन कारकों को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, अर्थात्:

श्रेणी I:

(क) प्राथमिक कारक व्यक्ति के प्रयास और कार्य क्षमता हैं।

(ख) संगठनात्मक कारक किसी वस्तु का उत्पादन करने के लिए आवश्यक डिजाइन और परिवर्तन प्रक्रिया से संबंधित हैं, उत्पादन प्रक्रिया, नियंत्रण और अन्य प्रोत्साहनों को संचालित करने के लिए श्रमिकों को प्रशिक्षण और अन्य कौशल प्रदान करने की प्रकृति।

(ग) संगठन की परंपराएँ जैसे श्रम संघों, चिकित्सा सुविधाओं, श्रमिकों और अधिकारियों की समझ आदि की गतिविधियाँ।

श्रेणी II:

(i) आउटपुट से संबंधित कारकः अनुसंधान और विकास तकनीक, प्रौद्योगिकी में सुधार और संगठन की कुशल बिक्री रणनीति से आउटपुट में सुधार होगा।

(ii) इनपुट संसाधनों, बेहतर स्टोर नियंत्रण, उत्पादन नियंत्रण नीति, मशीनों के रखरखाव आदि का कुशल उपयोग भी उत्पादन की लागत को कम करेगा।

श्रेणी i और ii में सूचीबद्ध कारकों को आगे चार प्रमुख वर्गों अर्थात में विभाजित किया जा सकता है।

(i) तकनीकी

(ii) प्रबंधकीय

(iii) श्रम और

(iv) बाहरी कारक

तकनीकी कारक इनपुट की प्रति यूनिट आउटपुट को काफी हद तक बढ़ा सकते हैं। इन्हें नियोजित प्रौद्योगिकी, उपकरण और कच्चे माल आदि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

प्रबंधकीय कारक संगठनात्मक संरचना, कार्य के निर्धारण, वित्तीय प्रबंधन ले आउट, नवाचार, कार्मिक नीतियाँ, कार्य वातावरण, सामग्री प्रबंधन आदि में स्थित हो सकते हैं।

श्रम कारकों में कार्य बल, स्वास्थ्य प्रबंधन के प्रति दृष्टिकोण, प्रशिक्षण और अनुशासन के कौशल की डिग्री का विशेष महत्व है। कार्य बल के कौशल और बेहतर नियोजित प्रौद्योगिकी के बीच समन्वय से अधिक से अधिक उत्पादकता होगी।

बाहरी कारक कार्य–स्थल पर असंख्य और पहचाने जाने वाले ये वो कारक है जिसके साथ एक संगठन को बातचीत करनी होती है जैसे कि बिजली और परिवहन सुविधाएं, टैरिफ और कर आदि उत्पादकता के स्तरों पर महत्वपूर्ण असर डालते हैं। इनमें से कुछ कारक नियंत्रणीय हैं और कुछ बेकाबू होते है, और दोनों के बीच सीमांकन किए जाने की आवश्यकता होती है ।

उत्पादकता बढ़ाने के तरीके

उत्पादकता को कई तरीकों से बढ़ाया जा सकता है। इसे या तो आउटपुट के समान स्तर के लिए इनपुट कम करके या आउटपुट को समान स्तर के इनपुट के साथ या दोनों के संयोजन से बढ़ाया जा सकता है। यह बेहतर तकनीक, बेहतर उत्पादन डिजाइन और प्रबंधन के प्रयासों का उपयोग करके प्राप्त किया जा सकता है।

रखरखाव के समय को कम करके, सामग्री इनपुट में कमी, माल की बेहतर गुणवत्ता, संसाधनों का बेहतर उपयोग, कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं में कमी, इन्वेंट्री के आकार में कमी, प्रशिक्षण के माध्यम से जनशक्ति कौशल में सुधार आदि से उत्पादकता में वृद्धि हो सकती है। बेहतर नेतृत्व प्रबंधन उत्पादन बढ़ा सकते हैं। जब कर्मचारी बेहतर रूप से प्रेरित होते हैं, तो आउटपुट बढ़ाया जा सकता है।

निर्णय लेना एक प्रमुख कारक है, जो उत्पादकता को प्रभावित करता है। पर्याप्त और समय पर सूचना प्रणाली के माध्यम से प्राप्त बेहतर निर्णय निश्चित रूप से संगठन की प्रभावशीलता और दक्षता में सुधार करते है ।

उत्पादकता में सुधार करने की तकनीक

उत्पादकता को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों के प्रदर्शन में सुधार करके उत्पादकता में काफी सुधार किया जा सकता है।

उत्पादकता में सुधार के उपाय हो सकते हैं:

(i) कर्मचारियों की बेहतर योजना और प्रशिक्षण, बेहत संचार और प्रभावी प्रबंधन ।

(ii) कार्य प्रदर्शन के अध्ययन और सुधार के लिए समय और गति अध्ययन का उपयोग। यह काम की मात्रा का आंकलन करने में सक्षम बनाता है, जिसका उपयोग योजना और नियंत्रण के लिए किया जा सकता है।

(iii) बेहतर परिवहन और आधुनिक सामग्री हैंडलिंग प्रणाली।

(iv) श्रमिकों को कार्य प्रोत्साहन और अन्य लाभ प्रदान करके।

(v) संगठनों के निर्णय लेने और काम करने में श्रमिकों की भागीदारी।

(vi) उत्पादन प्रक्रिया और कच्चे माल की प्रकृति और इसकी गुणवत्ता की प्रौद्योगिकी में सुधार।

(vii) सरलीकरण, मानकीकरण और विशेषज्ञता तकनीक।

(viii) अत्यधिक उत्पादन के लिए संसाधनों का बेहतर और कुशल उपयोग।

(ix) बेहतर निर्णय लेने के लिए रैखिक प्रोग्रामिंग और अन्य मात्रात्मक तकनीकों का उपयोग।

(x) अधिक महत्वपूर्ण वस्तुओं की पहचान कर, पूंजी निवेश को कम करने के लिए इन्वेंट्री नियंत्रण लागू किया जा सकता है ।

(xi) अच्छे डिजाइन द्वारा भौतिक सामग्री को कम करने के लिए मूल्य इंजीनियरिंग द्वारा उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है

उत्पादकता का मापन

उत्पादकता को मापने के कई तरीके हैं।

उत्पादकता को मापने के मुख्य मानदंड हैं

(i) इनपुट की प्रति यूनिट आउटपुट में परिवर्तन की गणना करके इनपुट प्रदर्शन के संदर्भ में

(ii) आउटपुट की प्रति यूनिट इनपुट में परिवर्तन की गणना करके आउटपुट प्रदर्शन के आधार पर।

आम उपयोग में कुछ उपाय निम्नलिखित हैं

जहां उत्पादन को कुल उत्पादित मात्रा में मापा जा सकता है और उस उत्पादन का उत्पादन करने के लिए आवश्यक कुल मानव–घंटों में श्रम को मापा जा सकता है। आउटपुट और श्रम को धन इकाइयों में उनके मूल्य के संदर्भ में भी मापा जा सकता है।

उत्पादकता के एक सामान्य माप को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है

वास्तव में उत्पादकता का माप एक उद्यम में श्रम और पूंजी अर्थात् इनपुट के प्रदर्शन को इंगित करता है। उत्पादन में वृद्धि के साथ उत्पादकता में वृद्धि होना अनिवार्य नहीं है। उत्पादन एक पूर्ण उपाय है और उत्पादकता एक सापेक्ष माप है।

उत्पादकता कभी भी संयोग नहीं होती। ये हमेशा, केन्द्रित प्रयास, चतुर योजना और श्रेष्ठता को प्राप्त करने की प्रतिबद्धता का परिणाम है।

– पॉल जे मेयर

बुद्धिमान मशीनें और हम

डॉ. धनजी प्रसाद
सहायक प्रोफेसर, भाषा प्रौद्योगिकी,
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय,
वर्धा, महाराष्ट्र

19वीं सदी को औद्योगिक क्रांति और 20वीं सदी को डिजिटल क्रांति के लिए जाना जाता है। 20वीं सदी में हुए कंप्यूटर के अविष्कार ने पूरे संसार को डिजिटल संसार (digital world) के रूप में एकाकार कर दिया है। आज डिजिटल क्रांति के इस दौर में सूचाओं का निर्माण, आदान–प्रदान प्रतिदिन करोड़ों मेगाबाइट की मात्रा में किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में हम कल्पना कर सकते हैं कि 21वीं सदी में क्या होगा? इस 21वीं सदी के अभी दो दशक बीत चुके हैं। इन दो दसकों में हुई प्रगति का ही नतीजा है कि आज ऐसी मशीनें उपलब्ध हैं जो खुद से सीखकर काम करती हैं?

एक पारंपरिक या ग्रामीण व्यक्ति को इस बात पर भरोसा न हो, किंतु हम सब जो तकनीक की दुनियाँ से परिचित हैं, वे जानते हैं कि यह सच है। आज ऐसी अनेक प्रणालियाँ (systems) उपलब्ध हैं, जो पूर्व में दिए डाटा के आधार पर पहले सीखती हैं। इसके बाद उन्हें व्यावहारिक जीवन के क्षेत्र में छोड़ देने पर वे परिस्थिति के आधार पर स्वयं निर्णय लेती हैं। ऐसी मशीनों में काम करने के लिए लगी हुई प्रणालियों (systems) को मशीनी अधिगम प्रणाली (Machine learning systems) कहते हैं। इन प्रणालियों के निर्माण का क्षेत्र 'कृत्रिम बुद्धि' (Artificial Intelligence -AI) के नाम से जाना जाता है। इसमें मशीनों में ऐसे एल्गोरिद्म स्थापित किए जाते हैं, जो पहले कुछ डाटा के आधार पर काम करना सीखें और बाद में ऐसा इनपुट जो उन्हें बिल्कुल पहली बार मिला हो, को भी अपने अनुभव के आधार पर हल करने का प्रयास करते हैं। कुछ डाटा के आधार पर सीखने की यही प्रक्रिया 'मशीनी अधिगम' (Machine learning) कहलाती है।

मशीनी अधिगम का शाब्दिक अर्थ है– 'मशीन द्वारा सीखना' अर्थात् 'मशीन द्वारा खुद से सीखना'। मशीनी अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत कुछ सीमित नियमों और उदाहरणों के आधार पर मशीन को नए परिवेश में कार्य करने के योग्य बनाया जाता है। मशीनी अधिगम कंप्यूटर में डाटा को सांख्यिकीय (Statistical) का प्रयोग करते हुए संसाधित करने का क्षेत्र है। इसमें डाटा के आधार पर काम करने और निर्णय लेने वाले एल्गोरिद्मों का विकास किया जाता है। इसके लिए मशीन को विभिन्न चरणों में डाटा के आधार पर कई चरणों में प्रशिक्षण दिया जाता है। इन चरणों को प्रशिक्षण चरण (Training Phases) कहते हैं। यह बिल्कुल वैसे ही है जैसे हमें किसी नए ज्ञान को सिखाने के लिए पहले शिक्षण किया जाता है। एक 'सामान्य सिस्टम' की प्रक्रिया इस प्रकार होती है–

इनपुट–प्रोसेस–आउटपुट

किंतु एक मशीनी अधिगम प्रणाली (Machine learning system) की प्रक्रिया इससे थोड़ी भिन्न होती है। यह प्रणाली इनपुट, आउटपुट दोनों को अनुभव के लिए लेती है। इसमें बीच में समंतदपदह ।सहवतपजीउे होते हैं जो इनपुट या आउटपुट डाटा के आधार पर नई समस्याओं को हल करने की तकनीकें प्राप्त करते हैं। इस प्रकार से काम करने वाली प्रणालियों का एक बहुत बड़ा संसार धीरे–धीरे खड़ा हो रहा है, जो हमारे जीवन के लगभग सभी महत्वपूर्ण पक्षों को किसी–न–किसी रूप में प्रभावित कर रहा है। इस प्रकार के कुछ प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार हैं–

- **गेमिंग सॉफ्टवेयर और एप:** आज हम कंप्यूटर या मोबाइल में भिन्न–भिन्न प्रकार के अनेक गेम खेलते हैं। इनमें कंप्यूटर/सॉफ्टवेयर को भी अपनी ओर से कुछ भी करने के लिए उसमें प्रयुक्त कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग करना होता है। उदाहरण के लिए जैसे– क्रिकेट, शतरंज आदि खेलते समय हम अपनी चाल चल लेते हैं तो उसके सापेक्ष कंप्यूटर जो चाल चलता है वह उसके अंदर निहित बुद्धि पर आधारित होता है।

- **सूचनाएँ खोजना और क्रमबद्ध रूप से रखना:** आज ऑनलाइन खोज के लिए 'गूगल' का प्रयोग हम सभी करते हैं। 'याहू' आदि भी इसी प्रकार के सर्च इंजन हैं। इनका कार्य प्रयोक्ता को किसी विषय पर सटीक सूचनाएँ उपलब्ध कराना है। उदाहरण के लिए मान लीजिए आप गूगल में 'हिंदी टाइपिंग' टाइप करके सर्च बटन को क्लिक करते हैं तो दो काम होते हैं– (1) सूचनाएँ खोजकर लाना, जैसे मान लीजिए इस विषय पर 50 लाख से अधिक परिणाम आते हैं। (2) इन परिणामों को पहले, दूसरे, तीसरे अंतिम स्थान पर लगाना, इसके निर्धारण में मशीनी अधिगम तकनीक के माध्यम से सर्च इंजन में डाली गई बुद्धि कार्य करती है।

- **स्वचलित कार (Automatic Cars):** गूगल और अन्य कई कंपनियों द्वारा स्वचलित कारों का तेजी से विकास किया जाता है। इनमें आगे और पीछे कैमरे लगे रहते हैं और उनसे मिलने वाली तस्वीरों का बहुत तेजी से विश्लेषण कार में लगे एक कंप्यूटर द्वारा किया जाता है। उन्हीं के आधार पर कार अपने परिवेश का अनुमान लगाती है और आगे बढ़ती है या निर्णय लेती है। ऐसी कारें मूलतः बुद्धिमान कारें (Intelligent Cars) होंगी, जो जल्दी ही हमारे जीवन का हिस्सा बनने जा रही हैं।

- **रोबोटिक्स (Robotics):** आज जीवन के अनेक क्षेत्रों में रोबोटों का भिन्न–भिन्न प्रकार से प्रयोग किया जा रहा है। औद्योगिक संस्थानों से लेकर अन्य ग्रहों–उपग्रहों के अन्वेषण में रोबोटों की महती भूमिका है। इनमें परिवेश के आधार पर निर्णय लेने के लिए मशीनी अधिगम तकनीक आधारित बुद्धि दी गई रहती है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं 21वीं सदी में जैसे–जैसे समय बीत रहा है, वैसे–वैसे बुद्धिमान मशीनों की संख्या और उपयोगिता हमारे जीवन में दिन–प्रति–दिन बढ़ती जा रही है। इससे हमारी दिनचर्या और मानसिक, सामाजिक परिवेश में भी जाने–अनजाने में बड़े परिवर्तन होने लगे हैं। उदाहरण के लिए मोबाइल पर गेम्स के आने पहले तक बच्चे अपनी पसंद की चीज (क्रिकेट, बॉलीबाल या कोई भी खेल) खेलने के लिए आस–पड़ोस के बच्चों को खोजते थे और खेलते थे। इससे शारीरिक कसरत भी होती थी तथा लोगों के बीच सामाजिक सामंजस्य में भी वृद्धि होती थी। अब बच्चे मोबाइल लेकर घर के किसी कोने में पड़े रहते हैं और अपने परिवार के लोगों के साथ भी अपेक्षित समय नहीं दे पाते। इन सब बातों बच्चों में कई मानसिक बदलाव हो रहे हैं।

इसी तरह तकनीकी मशीनों में बुद्धि का विकास होने से हम मशीनों पर अधिक आश्रित होते जा रहे हैं। अब अंग्रेजी के सामान्य शब्दों के अर्थ देखने के लिए या साधारण बातों से संबंधित सूचनाएँ जानने के लिए भी हम तुरंत गूगल में सर्च करते हैं। इससे हमारी स्मृति कमजोर हुई है। जब केवल फोन कॉल की सुविधा थी तो हमें 20–25 नंबर याद रहते थे, अब मुश्किल से 02–03 याद रहते हैं। इसलिए आप कल्पना कर सकते हैं कि स्वचलित कारें आ जाने के बाद यह संभव है कि हम अपने ही शहर के रास्ते भूलने लगें। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि तकनीकी विकास और इस क्रम में बुद्धिमान मशीनों के आ जाने से हमारा जीवन सरल और विलासिता पूर्ण तो हो रहा है, किंतु हमारी उन मशीनों पर निर्भरता बढ़ती जा रही है, जिस पर हमें गंभीर चिंतन करना चाहिए।

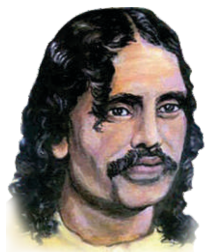

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।।

– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

ऑनलाइन शिक्षा पद्धति एक वास्तविकता

राजेंद्र सोनवणे
प्रचालक–I, रसायनी यूनिट

कोरोना वायरस के कारण लगे लॉकडाउन के मद्देनजर सरकार ने शिक्षा व्यवस्था को कायम रखने के लिए ऑनलाइन कक्षाएं संचालित की हैं। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को अपनाना ही अब एकमात्र विकल्प रह गया है। इस विकट परिस्थिति में बहुत ही कम मात्रा में छात्र लाभान्वित हो सके। कारण है नेटवर्क समस्या, नेट पैक न होना, एक ही फोन से घर के बहुत से बच्चों का पढ़ाई में संलग्न होना चाहिए। कुछ बच्चों के पास तो मोबाइल या लैपटाप की, व्यवस्था ही नहीं है। जब कि संपूर्ण भारत में केवल 24 फीसदी घरों तक ही इंटरनेट कि उपलब्धता है। यह उल्लेखनीय है कि जिस फोन को विभिन्न कारणों से स्कूलों में प्रतिबंधित किया गया था, वही आज शिक्षा का आधार बनकर सामने आया है। परन्तु यह भी देखने में आया है कि कम उम्र के बच्चों में शारीरिक एवं मानसिक पतन हुआ है। नैतिकता में भी भारी गिरावट आई है। छात्र स्कूलों में 6 घंटे का समय, बिताते हैं तथा अध्यापकों के देख–रेख में बच्चे अनुशासन में रहने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। घरों में रहकर कितने अभिभावक अपने बच्चों पर नियंत्रण रख पाते है, यह स्थिति ऑनलाइन शिक्षा ने उजागर कर दी है। इतना ही नहीं मोबाइल के अत्यधिक प्रयोग ने बच्चो के स्वास्थ पर भी कुप्रभाव डालना आरम्भ कर दिया है, जैसेः–आँखे खराब होना, पाचन संबंधी समस्या, तनाव, चिड़चिड़ापन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो गई है, जिससे निजात पाना भविष्य में आसान नहीं होगा।

आर्थिक रूप से कमजोर अधिकांश परिवारों के बच्चों के पास डिजिटल क्लासेस के आवश्यक उपकरण नहीं होने के कारण यह ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का लाभ नहीं ले पाते हैं। भारत के केवल 47% परिवारों को 12 घंटे से अधिक जबकि 33% को 9–12 घटें बिजली मिलती है और 16% परिवारों के रोजाना एक से आधे घंटे बिजली मिलती है।

ऑनलाइन पढ़ाई से बच्चों की स्मरण शक्ति भी कम हो रही है। मोबाइल आने से हमें गिनती, संख्या आदि याद रखने में कठिनाई होने लगी है। इसका प्रभाव बच्चो के मानसिक विकास पर हो रहा है। 23 मार्च से अब तक शिक्षण संस्थान बंद है, और आगे भी कब तक बंद रहेगा यह सुनिश्चित नहीं है। ऐसी अनिश्चितता की स्थिति सरकार और शिक्षाविदों के लिए परीक्षा का समय है। क्योंकि यह प्रश्न देश की भावी पीढ़ी के बचाव का है। सरकार को सख़्ती के साथ राज्य हित में निर्णय लेना चाहिए व छात्र हितों के लिए आवश्यक रूप से सोचना चाहिए।

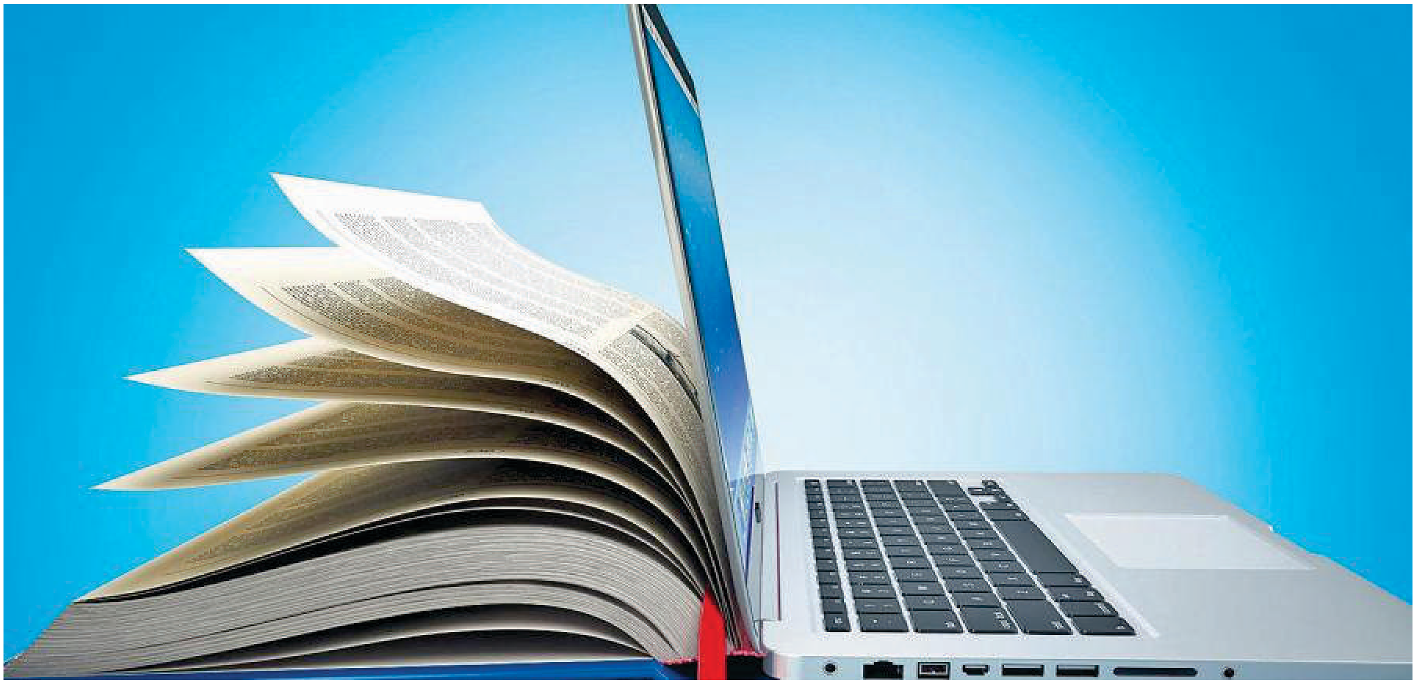

हिन्दी का बदलता संसार

अजीत कुमार
अधिकारी (राजभाषा), निगमित कार्यालय

समय गतिशील है। समय की गतिशीलता परिवर्तन को जन्म देती है। मानव के आसपास निरन्तर परिवर्तन हो रहे है। स्वयं मानव भी कहाँ बच पाया है परिवर्तन से ? इसी कारण से मानव की भाषा में भी परिवर्तन अवश्यम्भावी है।

हिन्दी विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। बहुत से परिवर्तनों से गुजकर आने पश्चात् हिन्दी का वर्तमान स्वरुप हमारे सामने है। हिन्दी का मूल शब्दकोश संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं से उत्पन्न है। समय के साथ–साथ जब हिन्दी भाषी अन्य भाषा भाषियों के सम्पर्क में आये तो हिन्दी में अन्य भाषा के शब्दों का समावेश होता गया। एक तरह से इन शब्दों से हिन्दी शब्दकोश समृद्ध ही हुआ है। बहुत से ऐसे शब्द भी हैं जो परिवर्तन की दौड़ में पीछे छूट गए। हिन्दी में अब उनका प्रचलन लगभग समाप्त सा ही हो गया है।

केवल शब्दकोश ही नहीं हिन्दी के स्वरुप में भी परिवर्तन हुए है। बात कहने का लहजा बदला है। वाक्यों का विन्यास बदला है। शब्दों का चयन बदला है। शब्दों की वर्तनी तक अछूती नहीं रह पायी। 'सम्बन्ध' को 'संबंध' लिखा जाने लगा है। 'ऋतु' को 'रितु' बना दिया गया है, परिणाम स्वरुप उच्चारणों में बदलाव आया है। क्योंकि हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसमें जैसा लिखा जाता है वैसा ही बोला जाता है इसलिए शब्दों के पहले तो स्वरुप बदले, और बाद में स्वतः ही उनके उच्चारण भी बदल गए। 'पम्प' की वर्तनी को 'पंप' के रूप में मान्यता प्रदान की गयी है।

वर्तनियों के अतिरिक्त कुछ शब्दों के स्वरुप इस प्रकार से बदले हैं जैसे– शुद्धि और शुद्धि जैसे शब्दों में द् के बाद धि लिखा जाने लगा है। तर्क दिया जाता है कि इस प्रकार लिखे जाने पर ये शब्द अधिक बोधगम्य हैं। लेकिन अगर परम्पराओं को तोड़ते हुए, नवीनता की दुहाई देकर कुछ अर्द्धाक्षरों को इस प्रकार लिखना है तो फिर सभी अर्द्धाक्षरों पर ये बात लागू क्यों नहीं की जाती? और क्या सभी अर्द्धाक्षरों पर ये बात लागू हो पाएगी? सच तो ये है कि सभी अर्द्धाक्षरों पर यह लागू हो ही नहीं पायेगी। अगर हठपूर्वक ऐसा किया भी जाये तो ये देवनागरी लिपि के लिए अच्छा संकेत नहीं होगा। क्योंकि इससे हिन्दी और देवनागरी अपने पारम्परिक और वास्तविक सौन्दर्य को खो देगी।

कुछ लोग बहाना बनाते हैं कि शब्दों का नया स्वरूप कम्प्यूटर पर हिन्दी टाइप करने में सुविधा जनक है। उन लोगो से मैं ये कहना चाहूँगा कि वो लोग इसे अपनी समस्या ना माने ना ही ये उनकी व्यक्तिगत समस्या है, ना ही वो लोग इसे सार्वजनिक समस्या घोषित करने की चेष्टा करें। क्योंकि कम्प्यूटर पर हिन्दी टाइप करने की समस्या को कम्प्यूटर विशेषज्ञ बहुत पहले समझ चुके हैं और वो लोग इसका सटीक समाधान भी दे चुके हैं। आज हमारे पास 'गूगल इनपुट मेथड' जैसे ऐसे सरल सॉफ्टवेयर हैं जिन्होंने हिन्दी को टाइप करने अत्यधिक सरल बना दिया है और वो भी देवनागरी के पारम्परिक सौन्दर्य को बनाए रखते हुए।

अतः मुझे लगता है कि हिन्दी के स्वरुप में जो परिवर्तन आवश्यक हैं वही किये जाने चाहिए अनावश्यक रूप से हिन्दी का रूप विकृत करने की ना तो कोशिश करनी चाहिए और न ही इसमें सहभागी बनना चाहिए।

भाषा भावों और विचारों की संवाहक होती है। भाषा का स्वरूप निरंतर बदलता रहता है और यह सभी भाषाओं के बारे में कहा जा सकता है। हम सभी इस तथ्य से अवगत हैं कि वर्तमान हिन्दी का उद्भव संस्कृत भाषा से हुआ है और काल के अनुसार यह पाली, प्राकृत और अपभ्रंश का चोला बदलती हुई वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हुई।

हिन्दी एक आधुनिक भारत–आर्य भाषा है तथा यह भारतीय–यूरोपीय भाषाओं के परिवार से संबंधित भाषा है और संस्कृत की वंशज है, जो भारत के उत्तर–पश्चिमी सीमाओं में बसने वाले आर्यन की बोली से उद्भूत है। समय की अवधि के साथ विकास के विभिन्न चरणों से गुजरती हुई शास्त्रीय संस्कृत से पाली–प्राकृत और अपभ्रंश तक, हिन्दी का उद्भव 10वीं शताब्दी में पाया जाता है।

हिन्दी को हिन्दवी, हिन्दुस्तान और खड़ी बोली के रूप में भी जाना जाता था। देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी (जो विश्व की वर्तमान लेखन प्रणाली के बीच सबसे वैज्ञानिक लेखन प्रणाली है) भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा है और इसे दुनिया की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा के रूप में स्थान दिया गया है। इसके अलावा हिन्दी बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और राजस्थान राज्य की राज्यभाषा भी है। दुनियाभर में लगभग 600 मिलियन लोग हिन्दी को पहली या दूसरी भाषा के रूप में बोलते हैं।

हिन्दी का साहित्यिक इतिहास 12वीं शताब्दी में पाया जाता है। भारतीय–आर्यन भाषाओं के विकास के 3 अलग–अलग चरणों को विद्वानों द्वारा सुझाया गया है। वे हैं– (ए) प्राचीन (2400 ईसा पूर्व– 500 ईसा पूर्व), (बी) मध्ययुगीन (500 ईसा पूर्व– 1100 ईस्वी) और (सी) आधुनिक (1100–वर्तमान तक)। प्राचीनकाल वैदिक और शास्त्रीय संस्कृत की अवधि है जिसके परिणामस्वरूप मध्यकाल के दौरान पाली,

प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ। दक्षिण एशिया की अधिकांश आधुनिक भारत–आर्य भाषाएं, जैसे हिन्दी, बंगला, उड़िया, गुजराती, नेपाली, मराठी, पंजाबी, आधुनिक 'काल' में विकसित हुईं।

आज हम जो हिन्दी बोलते हैं, वह ब्रज भाषा एवं अवधी भाषा से परिवर्तित होकर इस स्वरूप में आई है। ब्रज भाषा का विस्तार अवधी भाषा से तुलनात्मक रूप से व्यापक है। बाद में ये भाषाएं अन्य पड़ोसी भाषाओं से प्रभावित हुईं। चूंकि मुगलों, तैमूर और अलेक्जेंडर के भारत पर हमले से भारत में नई संस्कृतियों का आविर्भाव हुआ एवं ब्रज भाषा पर उर्दू, अरब और फारसी भाषा का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। अवधी भाषा पर संस्कृत का बेहतर प्रभाव पड़ा। विश्वविद्यालयों और साहित्यिक समृद्ध क्षेत्रों के पास जैसे इलाहाबाद, वाराणसी, नालंदा, पाटलीपुत्र, गया आदि क्षेत्रों में प्रचलन के कारण अवधी भाषा (18वीं शताब्दी तक) संस्कृत मूल को बनाए रखने में सक्षम रही। 18वीं शताब्दी की शुरुआत तक नवाब युग की स्थापना हुई थी। इसके बाद उर्दू और फारसी भाषाओं ने अवधी को प्रभावित किया।

दुनिया का कोई भी देश भारत की भाषायी विविधता की बराबरी नहीं कर सकता। भारत में 'मातृभाषा' की संख्या 1,652 है (जैसा कि 1961 की जनगणना में सूचीबद्ध है)। भारत का संविधान किसी भी भाषा को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा नहीं देता है, हालांकि भारत गणराज्य की केंद्र सरकार की आधिकारिक भाषा हिन्दी है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343, राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967) के अनुसार 8वीं अनुसूची में 22 भाषाओं की सूची है जिन्हें अनुसूचित भाषाओं के रूप में संदर्भित किया गया है। इन भाषाओं को मान्यता, स्थिति और आधिकारिक प्रोत्साहन दिया गया है। इसके अलावा भारत सरकार ने 1500–2000 वर्षों के अपने लंबे इतिहास के कारण तमिल, संस्कृत, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और उड़िया को शास्त्रीय भाषा का गौरव दिया है। सभी भारतीय भाषाएं इन 4 समूहों में से 1 में आती हैं– भारत–आर्य, द्रविड़ियन, चीनी–तिब्बती और अफ्रीका– एशियाटिक।

अंडमान द्वीपों की विलुप्त और लुप्तप्राय भाषाओं में 5वां परिवार है। हिन्दी दुनिया की तीसरी सबसे बोली जाने वाली भाषा है। डॉ. जयंतीप्रसाद नौटियाल ने भाषा शोध अध्ययन 2005 के हवाले से लिखा है कि विश्व में हिन्दी जानने वालों की संख्या 1 अरब 2 करोड़ 25 लाख 10 हजार 352 (1,02,25,10,352) है जबकि चीनी बोलने वालों की संख्या केवल 90 करोड़ 4 लाख 6 हजार 614 (90,04,06,614) है। दुनिया की अन्य प्रमुख भाषाओं की तरह हिन्दी की देशभर में कई अलग–अलग बोली और भाषाएं हैं। ब्रज भाषा (खड़ी बोली) हरियाणवी, बुंदेली, अवधी (बाघेली), (कन्नौजी), (छत्तीसगढ़ी) प्रमुख हैं।

सोशल मीडिया पर हिन्दी भाषा के बढ़ते इस्तेमाल पर भारत में बहुत विवाद हैं। ये कटु सत्य है कि भाषा, भारत में एक विवादास्पद मुद्दा है। 1963 में भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में 'देवनागरी लिपि में हिन्दी' को भारत की आधिकारिक भाषा घोषित किया गया था। देवनागरी लिपि संभवतः विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। यह जैसी लिखी जाती है, वैसी ही पढ़ी जाती है। इसमें अंग्रेजी के GO और TO तथा PUT और BUT जैसा उच्चारण–वैषम्य नहीं हैं। इसी प्रकार CALM और BALM जैसे शब्दों में L के साइलेंट होने जैसी कोई व्यवस्था नहीं है। हिन्दी में कैपिटल और स्माल लैटर का भी झंझट नहीं है। उच्चारण और एक्सेंट की समस्या नहीं है।वैश्विक स्तर पर वही भाषा टिक पाएगी जिसका शब्द भंडार या शब्दकोश बड़ा हो। उस भाषा में औदात्य भी होना चाहिए ताकि वह अपने शब्द भंडार को निरंतर बढ़ाता जाए। इस लिहाज से हिन्दी का यह सौभाग्य रहा है कि भारत में अनेक विदेशियों ने आकर शासन किया जिनमें तुर्क, मंगोल, अफगान, मुगल, फ्रांसीसी, पुर्तगीज और विशेषकर अंग्रेज थे। इन शासकों ने अपनी भाषा में दरबार चलाया और देश पर शासन किया। फलस्वरूप हिन्दी भाषा शासकीय भाषाओं से प्रभावित हुई और उसका शब्द भंडार जो संस्कृत के प्रभाव से पहले ही अत्यधिक समृद्ध था, वह और भी संपन्न होता गया।

अंग्रेजी भारत में फैली हुई है और इसका व्यापक रूप से उपयोग भारत के अभिजात्य वर्ग, नौकरशाही और कंपनियों द्वारा किया जाता है। यह अपने लिखित रूप में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि अधिकांश दस्तावेजों के आधिकारिक संस्करण में अंग्रेजी का उपयोग किया जाता है। अधिकांश पैन–इंडियन लिखित संचार के साथ–साथ कई प्रमुख मीडिया आउटलेट अंग्रेजी का उपयोग करते हैं। हालांकि बोले जाने वाले स्तर पर अंग्रेजी बहुत कम प्रचलित है और भारतीय भाषाओं का अधिक व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। हिन्दी अपने पूर्वोत्तर और दक्षिण को छोड़कर अधिकांश देश के लिए लिंगुआ फ्रैंका के रूप में उपयोग में लाई जाती है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि लगभग 130 करोड़ भारतीयों या आबादी का लगभग 10 प्रतिशत अंग्रेजी बोल या समझ जाता है। इसका मतलब है कि लगभग 90 प्रतिशत भारतीय अंग्रेजी को समझते या बोलते नहीं हैं।

वैश्विक स्तर पर भाषा को जमने के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण एवं किसी भी भाषा की सम्प्रेषणीय क्षमता के लिए आवश्यक शर्त है कि उस भाषा की निज अभिव्यक्ति क्षमता कितनी है। यदि भाषा विश्व के सभी लोगों को अपनी बात समझाने में असमर्थ है या यूं कहें कि उसमें सम्प्रेषणीयता का स्तर उच्च नहीं है, तो वैश्विक धरातल पर भाषा के टिके रहने का कोई आधार और औचित्य नहीं है।

हिन्दी में ज्ञान–विज्ञान से संबंधित विषयों पर उच्चस्तरीय सामग्री की दरकार है। विगत कुछ वर्षों से इस दिशा में उचित प्रयास हो रहे हैं। अभी हाल ही में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा हिन्दी माध्यम में एमबीए का पाठ्यक्रम आरंभ किया गया। इसी तरह 'इकॉनॉमिक टाइम्स' तथा 'बिजनेस स्टैंडर्ड' जैसे अखबार हिन्दी में प्रकाशित होकर उसमें निहित संभावनाओं का उद्घोष कर रहे हैं। पिछले कई वर्षों में यह भी देखने में आया कि 'स्टार न्यूज' जैसे चैनल जो अंग्रेजी में आरंभ हुए थे, वे विशुद्ध बाजारीय दबाव के चलते पूर्णतः हिन्दी चैनल में रूपांतरित हो गए। साथ ही, 'ईएसपीएन' तथा 'स्टार स्पोर्ट्स' जैसे खेल चौनल भी हिन्दी में कमेंट्री देने लगे हैं।

विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लाखों लोगों को एक नई भाषा सिखाने के लिए समय और संसाधनों को नष्ट करना मूर्खता है। वास्तव में कितनी नौकरियों को अंग्रेजी के ज्ञान की आवश्यकता है? मेरे हिसाब से एकल इकाई के प्रतिशत से ज्यादा नहीं। भारत की वृद्धि अकेले सेवा उद्योग और कॉल सेंटर द्वारा संचालित नहीं की जा सकती है, भारतीयों का 1 प्रतिशत ऐसे उद्योगों में काम करता होगा, जो अपनी नौकरी के लिए कौशल के रूप में अंग्रेजी सीखते हैं। भारत के विकास के लिए यह जरूरी है कि जिस भाषा को आबादी का एक बड़ा हिस्सा बोलता हो उसे उसी में शिक्षित किया जाए ताकि वह अधिक कुशल बनकर अपनी आजीविका कमा सके।

बैंकिंग क्षेत्र में हिन्दी के विकास की बात है, तो वर्ष 2003–04 से लेकर अब तक (2007–08) की आरबीआई की वार्षिक रिपोर्ट तथा दिसंबर 2007 में प्रकाशित 'भारत में बैंकिंग की प्रवृत्ति एवं प्रगति संबंधी रिपोर्ट 2006–07' के हवाले से ज्ञात होता है कि 1990 के दशक से ही विश्व बैंकिंग उद्योग में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। परिचालन, भूमंडलीकरण, विनियमन और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के सहारे यह क्षेत्र निरंतर प्रगति कर रहा है।

हिन्दी में तकनीकी प्रगति के साथ आय के नए तरीके भी सामने आ रहे हैं। हाल ही में हैदराबाद के गूगल ऑफिस में 'गुगल ब्लॉगर्स' की एक मीटिंग हुई। इस मीटिंग से आए 'टेक्नो स्पॉट डॉट नेट' के ऑनर आशीष मेहतो एवं मानव मिश्र ने बताया कि सिर्फ गूगल के हिन्दी ब्लॉगर्स की सालाना आय करोड़ों में होगी। सामान्य रूप से हर ब्लॉग्स का ऑनर जो महीने में 30 से 35 घंटे के लिए देखा जाता है, वह 25 से 200 डॉलर तक कमाई कर सकता है। इस तरह स्पष्ट है कि तकनीकी विकास से हिन्दी भाषा का विकास राष्ट्र का विकास और रोजगार के नए स्वरूपों का परिचायक है। भारत और हिन्दी के विकास के लिए शासन और समाज को हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति मित्रवत होना होगा ताकि जल्द से जल्द भारतीयों को यह एहसास हो कि आर्थिक और राजनीतिक सफलता के लिए अंग्रेजी आवश्यक नहीं है।

'वॉशिंगटन पोस्ट' के अनुसार हिन्दी 2050 तक अधिकांश व्यावसायिक दुनिया पर हावी रहेगी, इसके बाद स्पेनिश, पुर्तगाली, अरबी और रूसी। यदि आप अपनी भाषा पाठ्यक्रम से अधिक पैसा प्राप्त करना चाहते हैं तो ऊपर सूचीबद्ध भाषाओं में से एक का अध्ययन करना शायद एक सुरक्षित शर्त है।

केंद्र सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों की पहल के साथ कई सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाएं हिन्दी को एक लिंक भाषा के रूप में प्रसार के लिए काम कर रहे हैं। हिन्दी भाषी आबादी का बड़ा भाग विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के लिए एक आकर्षक बाजार बनाता है और इस बाजार का लाभ उठाने के लिए लोगों को भाषा से परिचित होने की जरूरत है।

इस तरह की भूमिका के लिए किसी भी भारतीय भाषा से लगभग कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होने के कारण देश के एक बड़े हिस्से पर एक लिंगुआ फ्रैंका के रूप में हिन्दी की पहले से मौजूद स्थिति उन लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बनती जा रही है, जो अपने क्षेत्र के बाहर रोजगार के अवसर तलाशते हैं। कई स्वैच्छिक एजेंसियां हिन्दी के ज्ञान को फैलाने में व्यस्त हैं और फिल्मों और रेडियो एवं सोशल मीडिया के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से उनके कार्य में सहायता मिलती है।

हमें हिन्दी भाषा के अस्तित्व को बनाए रखना है तो सबसे पहले सैकड़ों बोलियों जैसे बुंदेलखंडी, भोजपुरी, गढ़वाली, अवधी, मगधी आदि की रक्षा करनी होगी। ऐसी क्षेत्रीय बोलियां ही हिन्दी की प्राणवायु हैं। आज हिन्दी का ज्ञान गैर–हिन्दी क्षेत्रों में फैल रहा है और देश में सार्वभौमिक लिंगुआ फ्रैंका के रूप में हिन्दी के उद्भव का सूर्य चमक रहा है।

भारतीय भाषाओं का शब्द भंडार अंग्रेजी से कहीं अधिक है पर हम उनका अच्छी तरह प्रयोग नहीं करते। प्रयोग के बिना वे अपनी चमक खो बैठते है। सीखने की आदतें, स्मृतियां, सृजन और अभिव्यक्ति की छटाएं सब कुछ भाषा से ही संभव हो पाता है। भाषा में ही सारे ज्ञान–विज्ञान बसते हैं। इतिहास और परंपरा भाषा में ही रचा बसा है।

भाषा बहता नीर है, और उसे बोलने वालों और प्रयोग की परिस्थितियों के साथ शब्द भंडार, वाक्य रचना आदि में भी बदलाव आने लगते हैं। इस तरह हर भाषा के कई भेद दिखाई पड़ते हैं। अन्य भाषाओं के साथ संपर्क की घटना का भी समाज के भाषा–व्यवहार में खास भूमिका होती है। बहुभाषी भारत में आज कोई भाषा अकेली नहीं जीती है। प्रायः एक भाषा का उसके आसपास प्रयुक्त कई दूसरी भाषाओं से एक विशेष तरह का भाषिक परिवेश निर्मित हो रहा है ऐसे में शब्दों की एक से दूसरी भषा में आवाजाही होती रहती है। बहुभाषिकता भारत के समाज की विशेषता हो चली है। भारत में हिन्दी की उपस्थिति का मूल्यांकन करने बैठते हैं, तो कई बातें सामने आती हैं। अंग्रेजों के प्रभुत्व के फलस्वरूप भारतीय समाज का अंग्रेजी और अंग्रेजियत की ओर झुकाव बढ़ा। विश्वास बना कि अंग्रेजी भाषा के प्रयोग से व्यक्ति सुपठित होने के सम्मान का पात्र बनता है। पर अब स्थिति में कुछ सुधार हुआ है। आज आम जिंदगी में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने में बाजार की दुनिया का व्यापक असर है। समाज में अपनी चीजों को प्रचारित करने और लोकप्रिय बनाने के लिए प्रस्तुत विज्ञापनों में हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा है। हिन्दी फिल्मों के

गाने जनता में बेहद लोकप्रिय हो रहे हैं। टीवी के हिन्दी चैनलों की संख्या भी बढ़ी है। मुद्रित मीडिया को देखें तो हिन्दी के अखबारों की प्रसार संख्या में निरंतर बढ़ोतरी हुई है। हिन्दी का साहित्य जगत बहुरंगी रूझान के साथ समृद्ध हो रहा है। कविता, कहानी, निबंध, नाटक, रिपोर्टो आदि विधाओं में सृजनात्मक रचनाओं के साथ हिन्दी आगे बढ़ रही है। रूमानी दुनिया के आगे चलते हुए सामाजिक संवेदना की दृष्टि से सक्रिय हिन्दी आलोचना में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, उत्तर उपनिवेशवाद और जनवाद आदि को लेकर तीव्र वैचारिक सक्रियता बढ़ती दिख रही है। हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता का आरंभ से ही निकट का रिश्ता रहा है। सामाजिक दायित्व के साथ हिन्दी पत्रकारिता का श्रीगणेश हुआ था, और अधिकांश पत्रकार अच्छे साहित्य सर्जक भी थे। अब ये भूमिकाएं अलग हो रही हैं। आज का पत्रकार सर्जनात्मक साहित्य से कम जुड़ा है पर समकालीन प्रश्नों और सरकारों को लेकर खूब सतर्क है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में समय का दबाव तथा बाजार की बढ़ती प्रतिस्पर्धा से भाषा और प्रस्तुति में समझौते होते रहते हैं। मीडिया की दुनिया में बड़ी तेजी से बदलता आ रहे हैं, और कई बार भाषा की गुणवत्ता को लेकर संशय होने लगता है। डिजिटल युग में पहुंचते हुए भाषा की दृष्टि से हिन्दी में कई बदलाव आ रहे हैं। विस्तार की शैली के बदले संक्षिप्त प्रस्तुति बढ़ रही है। व्याकरण की दृष्टि से कारक, क्रिया, कर्ता के प्रयोग में बड़ी ढ़ील ली जा रही है। अक्षरों का मेल (या संधि) और लिखने के मानक (जैसे–संबंध लिखें कि संबंध या फिर संबंध?) अभी भी अनिश्चित से हैं। लिखने और बोलने के बीच सामंजस्य घट रहा है। अनुस्वार, हलंत के प्रयोग आदि को लेकर भी कुछ अव्यवस्था अभी बनी हुई है। मानक हिन्दी के रूप को मुद्रित रूप में अंगीकार करना हिन्दी के हित में होगा। उल्लेखनीय है कि जो हिन्दी समाज में पनप रही है और जो राजभाषा विभाग की या तकनीकी शब्दावली आयोग की हिन्दी शब्दावली है उसमें बड़ा फर्क है। हिन्दी भाषा में होने वाली अखबारी या टीवी वाली प्रस्तुति में अंग्रेजी के बहुत सारे शब्द ठूंस दिए जाते हैं। मसलन, कम्पटीशन, कमीशन, आफर, कैम्प, कॉरपोरेशन, कॉमर्स, कॉल, क्रेडिट, क्लासीफायड, डेटा जैसे शब्द धड़ल्ले से प्रयुक्त होते हैं, जबकि इनके सरल हिन्दी शब्द उपलब्ध है। संभवतः अंग्रेजी का मोह उनके इस्तेमाल का प्रमुख कारण है न कि भारतीय भाषाओं की दुर्बलता या अक्षमता। भारतीय भाषाओं का शब्द भंडार अंग्रेजी से कहीं अधिक है पर हम उनका अच्छी तरह प्रयोग नहीं करते। प्रयोग के बिना वे अपनी चमक खो बैठती हैं। सीखने की आदतें, स्मृतियां, सृजन और अभिव्यक्ति की छटाएं सब कुछ भाषा से ही संभव हो पाता है। भाषा में ही सारे ज्ञान–विज्ञान बसते हैं। इतिहास और परंपरा भाषा में ही रचा बसा है। इसके बावजूद हिन्दी समाज शिथिल है, और अधिक जागरूक नहीं हो सका है। उत्साह और कल्पनाशील दृष्टि के साथ हिन्दी से लगाव और उसकी शक्ति में विश्वास को पुर्नस्थापित किए बिना हिन्दी का विकास संभव नहीं। मानकर चलना होगा कि हिन्दी की लड़ाई मानसिक स्वाधीनता की लड़ाई है जो मौलिक चिंतन, सृजन और सांस्कृतिक उन्मेष के लिए बेहद जरूरी है।

बाधाओं को पार करते हुए हिंदी का बढ़ता कदम...

डॉ. विशेष कुमार श्रीवास्तव
राजभाषा अधिकारी, रसायनी यूनिट

हिंदी की समृद्धि के लिए अब तक 11 विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है 12वां सम्मेलन वर्ष 2021 में होना प्रस्तावित है। आज हिंदी दुनिया में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। इसे बोलने–समझने वालों की संख्या एक अनुमान के अनुसार साठ करोड़ से अधिक है। दुनिया के भिन्न देशों के चार सौ से अधिक केंद्रों पर हिंदी में अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। देश के जीरोमाइल के पास स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, हिंदी को विश्व के मानचित्र पर स्थापित करने में सार्थक योगदान दे रहा है। मीडिया के सभी क्षेत्रों पर हिंदी का वर्चस्व है। भिन्न भाषाई समाजों में भी हिंदी की स्वीकृति बढ़ी है। वह चौपालों, चौराहों, आंदोलनों तथा इंटरनेट की आभासी दुनिया की गवाही देने वाली भाषा है। फेसबुक, व्हाट्सएप सहित नई प्रौद्योगिकी में यूनिकोडित हिंदी ने अपनी जगह नई पीढ़ियों के बीच भी बनाई है। संसद से सड़क तक हिंदी इस देश के धड़कन की भाषा है। लेकिन इस तस्वीर का दूसरा पहलू भी मौजूं है कि आज हिंदी की सामाजिक हैसियत कम हुई है। हिंदी माध्यम के स्कूलों की दयनीय स्थिति से हम वाकिफ हैं।

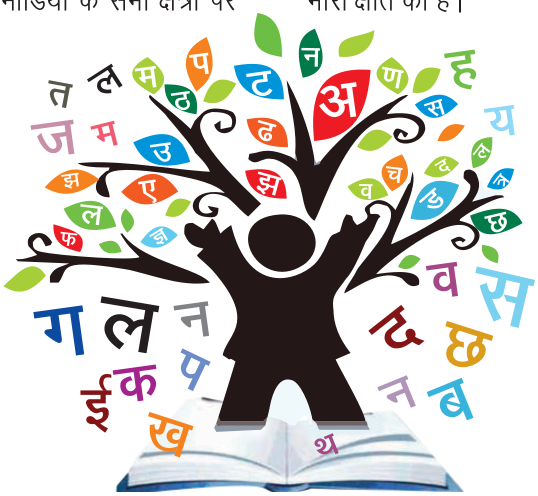

मध्यवर्ग और हिंदी रू कुछ वर्षों में भारत विश्व की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं वाला देश बन गया है। भारत का मध्यवर्ग यूरोप की कुल आबादी से भी बड़ा है। इस बड़े बाजार में घुसपैठ करने के लिए पूंजीपति तबका बेचैन है। यहां बाजार का फैलाव सिर्फ महानगरों तक ही सीमित नहीं है बल्कि अब उसका विस्तार छोटे शहरों, कस्बों से होता हुआ ग्रामीण इलाकों तक हो गया है। इस नए बाजार में सिर्फ अंग्रेजी के सहारे नहीं पहुंचा जा सकता, हिंदी इस काम में सबसे उपयोगी इस लिहाज से है कि आधा भारत संप्रेषण के लिए हिंदी का प्रयोग करता है और शेष आधे का बड़ा हिस्सा हिंदी आसानी से समझता है। शायद यही कारण है कि भारत के बाहर हिंदी पढ़ने वालों की संख्या में इजाफा हुआ है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को पता है कि मध्य वर्ग के पास आमदनी बहुत है और वे उपभोक्ता–संस्कृति के वाहक हैं अतएव साहित्य से लेकर विज्ञापनों के कथ्य मध्यवर्ग को केंद्र में रखकर तैयार किए जाते हैं। अब हिंदी का संघर्ष किसी बाहरी सत्ता या अंग्रेजी से कहीं अधिक मध्यवर्ग के दोहरे चरित्र और अवसरवादिता से है। यह मध्यवर्ग हिंदी का उपभोक्ता मात्र है, हिंदी उसके मनोरंजन की भाषा है। वह हिंदी की स्थिति को लेकर चिंतित दिखाई देता है, संगोष्ठियों में शरीक होता है और बातचीत में हिंदी की दुर्दशा का रोना रोता है लेकिन यही मध्यवर्गीय व्यक्ति हिंदी का साहित्यकार, पत्रकार और अध्यापक है जो इस लालसा में डूबा रहता है कि उसकी संतानों को अमरीका या यूरोप की नागरिकता मिल जाए। मध्यवर्ग के इस व्यावसायिक और अनैतिक व्यवहार ने हिंदी भाषा की भारी क्षति की है।

आज के प्रतिस्पर्धी दौर में भाषा–संस्कृति का मसला हाशिए पर है जबकि ग्राहक की नई जीजिविषा को बढ़ाना उसका अहम पहलू है। हिंदी को विस्थापित करने में हिंदी पुरोधाओं का भी योगदान है, वे बतौर 'स्टेटस' अंग्रेजी को अपनाते हैं। यह तो सच है कि आज अंग्रेजी का विश्वव्यापी बाजार है, वहां पैसा है, यश है, मान है, सबकुछ है तो फिर नई पीढी इसे क्यों न अपनाएं। पर वह आत्म चेतना, राष्ट्रीयता, आत्मगौरव, मातृभाषा प्रेम, जन–चेतना कहां है, जिसके कारण आजादी के बाद बीबीसी के संवाददाता द्वारा साक्षात्कार चाहने पर गांधीजी ने कहा था कि ''दुनिया को खबर कर दो कि गांधी अंग्रेजी नहीं जानता है, गांधी अंग्रेजी भूल चुका है।'' गांधीजी की यह तीखी प्रतिक्रिया इसलिए थी कि वे महसूस कर रहे थे कि राजनीतिक स्वाधीनता देश की संपूर्ण स्वाधीनता नहीं है। भाषाई गुलामी से मुक्त किए बिना देश इसकी पराधीनता की गिरफ्त में आ जाएगा। अंग्रेजी शिक्षा नीति को लागू करने के लिए जब चार्ल्स वुड ने प्रस्ताव पारित किया था तो उनका सीधा सा मतलब था–अपना कामकाज साधने के लिए नौकरशाह तैयार करने के साथ–साथ भारतीय लोगों में से कुछ लोगों को 'डी–क्लास' (वर्ग–पृथक) और 'डी–नेशन' (देश–पृथक) कर अपने अनुकुल बनाना। साथ ही उनका अंतिम लक्ष्य भारत की जनता में सुख–सुविधा की ऐसी होड़ जगाना था, जिससे ब्रिटिश माल की खपत भारत में हो और नई–नई चीजों का बाजार तैयार

हो सके। विदेशी भाषा के माध्यम से उपभोक्ता संस्कृति को निर्मित कर मानसिक रूप से गुलाम बनाने की वह नीति थी। आज इसकी फिर से पुनरावृत्ति की लहर चली है। मानवीय समाज की बजाय उपभोक्ता समाज में तब्दील किया जा रहा है। इसका जवाब हिंदी बखूबी दे सकती है। जिस प्रकार स्लम डॉग मिलेनियर का जमाल, जो विष्टा के गढ़ढे में कूदकर जोश, पुरुषार्थ और उमंग के मैदान में निकलते हुए किसी अप्रत्याशित नायकी को हासिल करता है। नई पीढी को हिंदी में संसाधन उपलब्ध करा दें, वह दुनिया में अपना परचम और भी बखूबी ढंग से लहरा सकता है। हम अपने बच्चों को सिर्फ बाजार में उपभोक्ता बनने के लिए न छोड़ दें अपितु अपनी भाषा के माध्यम से मानवीय समाज का एक अंग बनने दें। हिंदी भारतीय जीवन की सामाजिकता को आत्मसात करने वाली संपर्क भाषा है। हम सभी का यह प्रयास होना चाहिए कि भारतीय अस्मिता को वहन करने वाली यह भाषा ज्ञान, तकनीकी और रोजगार की क्षमता से संपन्न होकर विश्व भाषा बने। हिंदी में विश्व भाषा बनने की तमाम संभावनाएं मौजूद हैं।

हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने के लिए 45 वर्षों से प्रयास जारी रू 1975 में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन से लेकर गत माह मॉरीशस में संपन्न ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलनों में हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने के लिए प्रयास किया जा रहा है। 45 वर्षों में हमारी यह उपलब्धि है कि संयुक्त राष्ट्र ने हिंदी को बढ़ावा देने की दिशा में पहल की और सप्ताह में हर शुक्रवार हिंदी भाषा में समाचार प्रसारित करना प्रारंभ कर दिया है। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा दिलाने के संदर्भ में अभी तक कोई सार्थक परिणाम सामने नहीं आया है। इसका मूल कारण है प्रस्ताव के प्रति हमारा दृष्टिकोण भावनात्मक अधिक व तथ्यपरक कम है। सच तो यह है कि हिंदी का रोना रोने वालों को भी अंग्रेजी से ही मोह दिखता है। उनकी हिंदी हृदय की हो गई है दिल तो अंग्रेजी से भरा है। 26 जून, 1945 को हस्ताक्षरित संयुक्त राष्ट्र चार्टर में पाँच आधिकारिक भाषा (अंग्रेजी, रूसी, चीनी, स्पेनिश एवं फ्रेंच) थे, छठवें भाषा के रूप में अरबी को 1973 में शामिल किया गया। अमेरिका, ब्रिटेन और रूस जैसे शक्तिशाली राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र में स्थापना काल से जुड़े हैं अतएव अंग्रेजी, रूसी को स्थान मिलना ही था। विश्व की तत्कालीन सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा चीनी (मंदारिन) को स्थान मिलना स्वाभाविक था। स्पेनिश यूरोप की एक सशक्त भाषा है और इसी प्रकार से फ्रेंच यूरोप में प्रभावशाली तथा बहुसंख्यकों द्वारा बोली जानेवाली भाषा है। इसलिए इन पाँच भाषाओं को आधिकारिक भाषा में रखा। प्राकृतिक तेल एवं गैस वाले अरबी (खाड़ी) देशों की भाषा फारसी को शामिल किया गया। हिंदी पर अभी तक कोई ध्यान नहीं दिया गया है। प्रा. अनंतराम त्रिपाठी कहते हैं कि, 'संयुक्त राष्ट्र में प्रतिष्ठित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र की कार्यावधि नियमावली के नियम 51 में संशोधन करना होता है। यह संशोधन तभी संभव है जब इसके कुल सदस्य देशों 192 में से आधे से अधिक सदस्य देश अर्थात 97 देश हमारे प्रस्ताव का समर्थन करें। इसके लिए यह आवश्यक है कि सदस्य देशों के शासनाध्यक्षों, विदेश मंत्रियों और संयुक्त राष्ट्र में उनके प्रतिनिधियों से मिलकर इस प्रस्ताव के पक्ष में अनुकुल वातावरण तैयार किये जाएं। इसे सार्थक करने के लिए हिंदी के पक्ष में तर्क रखने वाले प्रतिनिधियों का शिष्टमंडल भेजा जाना चाहिए जो कि विभिन्न देशों का समर्थन जुटा सकें।' सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने के लिए भारत सरकार को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

बॉलीवुड ने दिए हिंदी को पंख रू हिंदी की फिल्में मुल्क की सरहदों के पार अपनी लोकप्रियता का परचम लहरा रही हैं। हिंदी फिल्मों ने लोक भाषाओं, प्रांतीयताओं एवं देश के सांस्कृतिक वैविध्य को भुलाकर राष्ट्रीयता का अभूतपूर्व विकास किया है। भूमंडलीय स्तर पर हिंदी गानों के बोल व राग सुनाई पड़ते हैं। विदेशों से हिंदी पढ़ने आए विद्यार्थी हिंदी फिल्मों के गानों पर थिरकते हैं। चीन से आई यालान अपने देश ही में सलमान और शाहरूख खान की कई फिल्में देख चुकी हैं, बात–बात पर दिलवाले दुल्हनियां ले जाएंगे फिल्म का गाना गुनगुनाने लगती हैं और कहती हैं कि मैंने फिल्मी गाने से ही हिंदी सीखी। हिंदी को भूमंडल पर गाना बजाना, साहित्य का रंग–बिरंगा तराना आदि इसे विश्व भाषाओं का दर्जा दिए जा रही है। हिंदी फिल्में केवल गीत–संगीत, नृत्य संवाद का रंगीन पिटारा लेकर भूमंडल में ही नहीं घूमती है बल्कि इसके साथ हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति भी पायल की रून–झुन की तरह विश्व से एक रागात्मक स्थापित कर रही है।

हिंदी के विकास और उसके सम्मान की चिंता करते हुए हमें इस सच्चाई को स्वीकार किया जाना चाहिए कि आजादी के बाद विज्ञान और समाजविज्ञान के क्षेत्र में कोई मौलिक चिंतन या लेखन इस भाषा में नहीं के बराबर हुआ है। साहित्य के क्षेत्र में हिंदी में भरपूर सक्रियता है, बहुतायत संख्या में पत्र–पत्रिकाएं छप रही हैं। हिंदी के विकास की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है क्योंकि साहित्य भाषा का सांस्कृतिक परिसर है, लेकिन जीने के लिए रोजगार चाहिए, अंग्रेजी की वनिस्पत हिंदी में रोजगार के अवसर कम हैं। जीवन जीने के दैनिक संघर्ष में ही जिस भाषा समाज के अधिकांश लोगों की ऊर्जा नष्ट होती हो उसमें साहित्य और संस्कृति के प्रश्न बेमानी हैं। यह अप्रासंगिक नहीं है कि संघर्ष और दरिद्रता के कारण हिंदी भाषी समाज 'पुस्तक–संस्कृति' विहीन समाज है और उनमें अपनी भाषा को लेकर बहुत लगाव नहीं दिखता और न ही गर्व का भाव। प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक जड़ता और दृष्टिहीनता का जो अंधेरा व्याप्त है उसे दूर किए बिना हिंदी का विकास संभव नहीं है। हमें हिंदी के साथ हिंदी भाषी समाज के आर्थिक–सांस्कृतिक उन्नयन पर भी विचार करना होगा। यह हिंदी की विडंबना है कि अपने ही देश में उसे वह सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं हो सकी जिसकी वह हकदार है। हमें यह जरूर मंथन करना चाहिए कि नई पीढियों की जरूरतों के मुताबिक पाठ्यक्रमों को हिंदी में क्यों नहीं उपलब्ध करा पा रहे हैं?

वसीयत एक कानून

अरूण कुमार
सहायक प्रबन्धक (विधि), निगमित कार्यालय

वसीयत एक कानूनी घोषणा है जो एक व्यक्ति अपनी मृत्यु के बाद अपनी संपत्ति को प्रबंधित या वितरित करने के तरीके के बारे में बनाता है। यद्यपि वसीयत एक कानूनी दस्तावेज़ है, लेकिन इसमें कोई निर्धारित प्रपत्र नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए, आपको स्टांप पेपर पर वसीयत लिखने की जरूरत नहीं है और इसे टाइप या हस्तलिखित भी किया जा सकता है। हालांकि, एक हस्तलिखित वसीयत को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि इसका खंडन करना अधिक कठिन है। 1925 के भारतीय उत्तराधिकारी अधिनियम के अनुसार, जो कोई भी स्वस्थ दिमाग का है और नाबालिक नहीं है वह वसीयत कर सकता है।

वसीयत के आवश्यक तत्व

आपकी वसीयत सरल, अधिक ठोस और कठिन हो तो निम्न बुनियादी चीजें होनी चाहिए:

1. **घोषणा:** अपनी वसीयत शुरू करने से पहले आपको यह घोषित करना होगा कि आप मानसिक रूप से स्वस्थ हैं और आप अपनी इच्छा सें वसीयत का निष्पादन करना चाहते हैं। यदि यह आपकी पहली वसीयत नहीं है, तो आपको पिछली सभी वसीयत और कोडिक को रद्द करते हुए एक बयान देना चाहिए।
2. **अपनी संपत्ति की सूची:** आपको अपनी सभी संपत्तियों की सूची तैयार करनी चाहिए। इसमें वह संपत्ति शामिल होंगी जो बचत खातों, फ़िक्स डिपॉजिट और म्यूचुअल फंड में आपके पास है। कोई भी संपत्ति न छूटे इसके लिए दोबारा पुनरीक्षण कर लेना चाहिए।
3. **अपनी संपत्तियों को विभाजित करें:** स्पष्ट रूप से यह सूचीबद्ध करें कि कौन कौन की संपत्ति वसीयत करनी है। किसी भी अस्पष्टता को दूर कर लेना चाहिये। यदि आप अपनी संपत्ति नाबालिक को देना चाहते हैं, तो संपत्ति का संरक्षक नियुक्त करना न भूलें। किसी ऐसे व्यक्ति का चयन करना महत्वपूर्ण है जिस पर आप एक संरक्षक के रूप में भरोसा करते हैं।
4. **वसीयत पर हस्ताक्षर करें और गवाहों को शामिल करें:** आपको दो गवाहों की उपस्थिति में अपनी वसीयत पर हस्ताक्षर करना होगा। आपके गवाहों को यह प्रमाणित करने के लिए हस्ताक्षर करना होगा कि उनकी उपस्थिति में वसीयत पर हस्ताक्षर किए गए थे। वसीयत को दिनांकित किया जाना चाहिए, और आपको अपने गवाहों के पूर्ण नाम और पते निर्दिष्ट करने चाहिए। याद रखें: गवाहों को आपकी इच्छा पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। उन्हें केवल इस तथ्य पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि आपने उनकी उपस्थिति में इस पर हस्ताक्षर किए हैं।
5. **प्रारंभिक तथा प्रत्येक पृष्ठ:** इसके बाद, वसीयत के नीचे तिथि और स्थान भी लिखना होगा। वसीयत के प्रत्येक पृष्ठ पर आपके और आपके गवाहों के हस्ताक्षर होने चाहिए। वसीयत पर किए गए किसी भी सुधार को आपके और गवाहों द्वारा भी हस्ताक्षर किया जाना चाहिए।
6. **वसीयत को संग्रहित करना:** सुनिश्चित करें कि आप अपनी वसीयत को एक सुरक्षित स्थान पर संग्रहित कर रहे हैं और यदि प्रतियाँ बनाई गई हैं, तो उन्हें मूल इच्छा से अलग किया जाना चाहिए।

एक वसीयत लिखते समय आम ग़लतियाँ:

1. **जटिल या तकनीकी कानूनी शब्दों का उपयोग करने से बचें:** बहुत से लोग ऐसे दस्तावेज़ों का मसौदा तैयार करते समय कानूनी शब्दों का उपयोग करना पसंद करते हैं। यह बहुत भ्रामक हो सकता है इसलिए, किसी भी भ्रम से बचने के लिए, सुनिश्चित करें कि वसीयत का मसौदा तैयार करने के लिए आप जिस भाषा का उपयोग करते हैं वह सरल और सटीक हो।
2. **किरायेदारी के अधिकारों को आवंटित करने से बचने की कोशिश करें:** लोग, विशेषकर जो कई पीढ़ियों से किरायेदार हैं, अक्सर अपने किराए का घर आगे दे देते हैं, हालांकि ऐसा करना कानूनी नहीं है। यह एक सामान्य गलती है और इस मुद्दे को लेकर कई अदालती मामले भी चल रहें हैं। आप अपनी वसीयत में यह नहीं बता सकते हैं कि एक रिश्तेदार को संपत्ति का किरायेदार बनना चाहिए, क्योंकि आपके पास संपत्ति का कोई अधिकार नहीं है।

वसीयत को कब चुनौती दी जा सकती है

आम तौर पर किसी व्यक्ति के उत्तराधिकारियों द्वारा वसीयत को चुनौती तब दी जाती है यदि वे उन्हें आवंटित शेयरों से संतुष्ट नहीं होते हैं। चुनौती के लिए सामान्य आधार यह है कि वसीयत लिखने के समय

वसीयतकर्ता का दिमाग ठीक नहीं था इसलिए, संपत्ति के विनियोग के संबंध में वसीयत करना विशिष्ट है।

क्या वसीयत में कोई बदलाव करने की आवश्यकता है

वसीयत बनाते समय, एक व्यक्ति को अपनी पहले की वसीयत को रद्द करना चाहिए और स्वयं स्वस्थ होना चाहिए। यदि वह अपने किसी उत्तराधिकारी को संपत्ति से वंचित करने के लिए तैयार है, तो बेहतर है कि वह इसके लिए कारण दें। एक वसीयत को वसीयतकर्ता द्वारा अपने जीवनकाल में जितनी बार चाहे उतनी बार संशोधित या संशोधित किया जा सकता है। हालाँकि, पहले वसीयत पंजीकृत होने पर परिवर्तन या संशोधन पंजीकृत होना आवश्यक है। कोडिकिल एक उपकरण है जिसे वसीयत के संबंध में बनाया गया है, व्याख्या करना, बदलना या इसके निपटना में जोड़ना और इसे वसीयत का एक हिस्सा माना जाता है।

वसीयत छोड़े बिना मृत्यु हो जाती है तो संपत्ति कौन प्राप्त करता है

यदि कोई वसीयत नहीं है, तो संपत्ति को मृतक के व्यक्तिगत कानून के अनुसार वितरित किया जाएगा। भारतीय उत्तराधिकारी अधिनियम विविध है और विभिन्न समुदायों के लिए विरासत के विभिन्न क़ानूनों को बताता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई हिंदू पुरुष बिना वसीयत छोड़े पास हो जाता है, तो पत्नी और बच्चे (बेटियों सहित) विरासत को साझा करते हैं। इस श्रेणी में आगे विभाजन हैं। परीक्षकों का व्यक्तिगत कानून यह नियंत्रित करेगा कि क्या होता है। अगर एक मुस्लिम पुरुष की वसीयत छोड़ने के बिना मृत्यु हो जाती है, तो कम से कम दो–तिहाई संपत्ति को परिवार के सदस्यों के बीच विभाजित किया जाना चाहिए। एक मुस्लिम पत्नी को नहीं छोड़ा जा सकता है – विधवा को एक निश्चित हिस्सा मिलता है। हालांकि, बच्चों को एक समान हिस्सा नहीं मिलता है। मुस्लिम कानून के अनुसार बेटों को बेटियों का दोगुना हिस्सा मिलता है। यदि एक वसीयत के बिना छोड़ दिया जाता है, तो एक वकील से संपर्क करना सबसे अच्छा है।

कानूनी शर्तें भ्रामक हो सकती हैं। वसीयत पर विचार करते समय ध्यान रखने योग्य कुछ सरल बातें यहाँ दी गई हैं

इरादे : यह तब होता है जब कोई व्यक्ति एक वैध वसीयत को छोड़े बिना मर जाता है। अंतर संचालन को नियंत्रित करने के लिए कानून हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि आपकी संपत्ति कैसे वितरित की जाए जो, आपके धर्म के आधार पर अलग–अलग होगी।

वसीयतकर्ता : वसीयत करने और अमल करने वाले व्यक्ति को वसीयतकर्ता कहा जाता है।

लाभार्थी/कानूनी : एक व्यक्ति या संगठन जिसे आप अपनी इच्छा से नाम देते हैं जिसे आप अपनी संपत्ति देते हैं।

निष्पादक : वे लोग जिन्हें आप अपनी संपत्ति के विभाजन को संभालने के लिए नाम देते हैं। आपके पास अधिकतम चार निष्पादक हो सकते हैं। यदि किसी का निधन हो जाता है, तो एक से अधिक निष्पादक का नाम देना आम तौर पर सर्वोत्तम होता है।

प्रोबेट : आपकी मृत्यु के बाद निष्पादकों द्वारा प्राप्त किया जाने वाला कानूनी दस्तावेज़ उन्हें आपकी संपत्ति को संभालने का अधिकार देता है।

प्रशासक : एक व्यक्ति जो आपकी संपत्ति के विभाजन से संबंधित है, यदि आप एक वसीयत को पीछे नहीं छोड़ते हैं।

कोडिसिल : एक कानूनी दस्तावेज़ जो वसीयत में संशोधन या जोड़ता है। एक कोडिकेल के वैध होने के लिए, इसे उसी तरह लिखना और निष्पादित करना होगा जिस तरह से यह इच्छाशक्ति में संशोधन करता है।

कब एक वसीयत अमान्य है : वसीयत को वैध साबित करने का भार पार्टी की वसीयत को सामने रखने पर है। अदालत की अंतरात्मा को संतुष्ट करना होगा कि यह एक स्वतंत्र और सक्षम परीक्षक की अंतिम इच्छा है। अब, एक स्वतंत्र और सक्षम परीक्षक कौन है? किसी व्यक्ति को वैध वसीयत बनाने से क्या अयोग्य ठहराता है?

स्वस्थ मन का प्रत्येक व्यक्ति, अपनी इच्छा से अपनी संपत्ति का निपटान कर सकता है। तो इसका मतलब है कि, कब कोई वसीयत मान्य है, जबरू

स्वस्थ चित : वसीयत बनाने वाला व्यक्ति इसे लिखते समय पूरी तरह से स्वस्थ चित का होना चाहिए। इसलिए, एक पागल या बेवकूफ़ कभी भी इच्छाशक्ति पैदा नहीं कर सकता है। हालाँकि, अल्जाइमर का कहना है कि अगर वह इसे लिखता है तो वह वसीयत कर सकता है।

केवल वयस्क : एक नाबालिक (18 वर्ष से कम उम्र का व्यक्ति) भारत में वसीयत नहीं बना सकता है। नाबालिक की संपत्ति को निपटाने के लिए एक वृत्ताधिकारी अभिभावक नियुक्त किया जाता है।

स्वयं की इच्छा से : यदि कोई वशीकरण के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, तो यह अमान्य है। इसका मतलब यह है कि, पुत्र या पुत्री बल (मानसिक या शारीरिक रूप से ज़बरदस्ती करके), अपने माता–पिता को अपने पक्ष में वसीयत लिखने में ज़बरदस्ती कर रहे है जो अमान्य है।

केवल खुद की संपत्ति : किसी भी व्यक्ति द्वारा एक वसीयत बनाई जा सकती है, और यह अक्सर एक वकील की अनुपस्थिति में बनाई जाती है। इस कारण से, बहुत से लोग उन संपत्तियों को भी वितरित करते हैं जो पूरी तरह से उनके पास नहीं हैं।

आशय उत्तराधिकार : दुर्भाग्य से, हर कोई वसीयत करने के लिए परेशान नहीं होता है।अंतरंगता में परिवार के सदस्यों के बीच कानूनी विवाद पैदा करने की क्षमता है। इस तरह के विवाद के मामले में, कानून ने विभिन्न धर्मों के सदस्यों के लिए नियम भी निर्धारित किए हैं, जैसा कि भारतीय उत्तराधिकारी अधिनियम, 1925, हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 और शरीयत कानून द्वारा निर्दिष्ट किया गया है, और इनका पालन किया जाना है।

वित्त

वस्तु एवं सेवा कर की शुरुआत

राज कुमार शर्मा
लेखा अधिकारी, रसायनी यूनिट

वस्तु एवं सेवा कर 160 देशों ने इसे लागू किया है फ्रांस पहला देश है, जिसने सबसे पहले लागू किया था वस्तु एवं सेवा कर यानि की जी.एस.टी. अपने भारत देश में इसे 1 जुलाई 2017 को लागू किया गया माननीय श्री प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के हाथों द्वारा दिल्ली में इसका उदघाटन हुआ था, अपने भारत देश में जी.एस.टी. की कर 0 जीरो से लेकर 28% तक है। जी.एस.टी. नंबर लेना है तो जी.एस.टी. नियम के अनुसार जिस कंपनी की टर्न ओवर 40 लाख है, उसको जी.एस.टी. में पंजीकरण कराना आवश्यक है परन्तु जिस कंपनी का टर्न ओवर 40 लाख से कम का है, उसको जी.एस.टी. में पंजीकरण कराना आवश्यक नहीं है लेकिन अगर वह चाहता है तो जी.एस.टी. नंबर प्राप्त कर सकता है। इसका पूंजीकरण कराना जरुरी होता है बिना पूंजीकरण के आप इसका उपयोग नहीं कर सकते है।

अतः पूंजीकरण के लिए जी.एस.टी. के पोर्टल पर जाकर रेजिस्ट्रेंशन में जाकर कर पूंजीकरण कर सकते है, इसके लिए निम्न दस्तावेज़ों/सूचना की आवश्यकता हैः–

• पैन कार्ड • मोबाइल नंबर • ईमेल आईडी • आधार कार्ड • ट्रेड का नाम • क्या काम करना है • व्यवसाय (बिज़नेस) करने का स्थान/पते के दस्तावेज़ • आई.एफ.एस. कोड सहित बैंक खाता (अकाउंट) संख्या

उपरोक्त दस्तावेज़ों को को पोर्टल पर अपलोड किया जाता है। तत्पश्चात् एक सप्ताह के भीतर ईमेल आईडी के द्वारा जी.एस.टी. नंबर प्राप्त हो जाता है। फिर आप अपने जी.एस.टी. नंबर का उपयोग आसानी से कर सकते है जितना आप पूरे महीने में लेंन देंन करेंगे उसी का जी.एस.टी. रिटर्न भरना होता है। जितना हम कोई सामान खरीदेंगे उसको हम इनपुट मानते है और हम जितना माल बेचते है उसको हम आउटवार्ड मानते है। आउट वार्ड का अलग एक रिटर्न होता है, जो मासिक भी होता है।

उदाहरण :

यदि किसी कंपनी का टर्नओवर अर्थात पूरे वर्ष की बिक्री बिना कर 1.5 करोड़ तक है, तो उस ब्यापारी को प्रत्येक माह अपना जी.एस.टी.आर. –1 फाइल करना आवश्यक है। परन्तु जिस व्यापारी का टर्नओवर 1.5 करोड़ से कम है तो उस व्यापारी को 3 माह में जी.एस.टी.आर. –1 फाइल करना आवश्यक होता है।

इसके अतिरिक्त यदि किसी ने जी.एस.टी. नंबर लिया हुआ है तो उसे प्रत्येक माह जी.एस.टी.आर.– 3बी फाइल करना आवश्यक है। अगर जी.एस.टी. रिटर्न फाइल नहीं करने पर 50 रुपये प्रति दिन दंड (पेनल्टी) देना पड़ेगा। वर्ष के अंत में जी.एस.टी.आर.–9 और जी.एस.टी.आर.–9 सी जी.एस.टी. आडिट फाइल करना होता है। वार्षिक रिटर्न्स के लिए भी जी.एस.टी. का नियम है की जिस कंपनी का टर्नऑवर 2 करोड़ से कम है उसको जी.एस.टी.आर.–9 फाइल करना आवश्यक नहीं है। परन्तु अगर वह चाहता है, तो कर सकता है। लेकिन जिस कंपनी का टर्नऑवर 2 करोड़ से ज्यादा और 5 करोड़ से कम है, उसको जी.एस.टी.आर.–9 और और जी.एस.टी.आर.–9 फाइल करना आवश्यक है, परन्तु जी.एस.टी. आर.–9सी करना आवश्यक नहीं है और जिस कंपनी का टर्न ओवर 5 करोड़ से ज्यादा है तो उस कंपनी को जी.एस.टी.आर.–9 और जी.एस.टी.आर.–9 सी ऑडिट फाइल करना जरुरी है।

वित्त की जरूरत

एल. साहू
प्रबंधक (वित्त), रसायनी यूनिट

वित्त का मतलब होता है, "धन" या कोष के रूप में जाना जाता है। वित्त की जरूरत हर व्यापार संस्थान या सरकार के सभी कामों के लिए अत्यावश्यक है। वित्त के तीन रूप होते है पहला व्यक्तिगत वित्त जो कि पर्सनल फाइनेंस के लिए होता है, दूसरा वित्त निगत वित्त होता है जो कि कारपोरेट के लिए होता है, तीसरा वित्त लोक वित्त होता है।

इन तीनों के अपने अलग–अलग कार्य होते है, जैसे कि अच्छी तरह से निवेश करना कम दर पर ऋण प्राप्त करना। देनदारियों के लिए फ़ंड की व्यवस्था करना, और व्यक्तियों के लिए रिटायर होने के बाद खर्च करने के लिए व्यवस्था करना। लेकिन जबकि एक बड़ी से बड़ी संस्थान को यह निर्णय लेना होता है कि अतिरिक्त फ़ंड की व्यवस्था वह बांड इश्यू करके करें या स्टॉक जारी करके करें।

वित्त विभाग की बहुत ही ज्यादा जिम्मेदारी होती है, जैसे लेखा–परीक्षण करने में परिसम्पतिया तथा देयता यानि कि इन सब का हिसाब किताब रखने के लिए वित्त की आवश्यकता पड़ती है, वित्त के बिना कोई कंपनी पूर्णतः सफल नहीं हो सकती है। प्रशासन के लिए वित्त की आवश्यकता बहुत ही जरूरी है, जैसे कि आय तथा व्यय के आवश्यकताओं के लिए यानि की बजट बनाना वित्तीय व्यवस्थाओं का राजकोषीय प्रबंधन करना लेखा–परीक्षण की व्यवस्था करना सभी कर्मचारियों के वेतन की व्यवस्था करना तथा उनका रिकॉर्ड बनाना, फिर उनका भुगतान करना, हर महीने कर (टैक्स) का भुगतान करवाना और सबसे बड़ी आवश्यकता होती है साल के अंत में जब अन्नुअल रिटर्न या बैलेंसिंग बनाया जाता है या ऑडिट होता है तो उस समय सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है। क्योंकि पूरे साल में क्या–क्या लेन–देन हुआ है, उन सबका रिकॉर्ड सही तरीके से हुआ है या नहीं इसलिए ऑडिट के समय इन सबका रिकॉर्ड उपलब्ध करना पड़ता है।

अतः एक कंपनी में वित्त के बिना कोई भुगतान संभव नहीं है। जितनी बड़ी कंपनी उतनी बड़ी जिम्मेदारी वित्त विभाग की होती है, क्योंकि सभी भुगतान वित्त विभाग के द्वारा ही किए जाते है।

जल संकट से जूझता मानव

ओम प्रकाश साह
कनिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरै, मोती मानुष चून।

कवि रहीम ने इस दोहे के माध्यम से जल महत्ता को उजागर करते हुए कहा है कि जल के बिना मोती में कान्ति, मनुष्य में प्रतिष्ठा तथा चूना में उपयोगिता नहीं रहती। सचमुच पृथ्वी पर जल की उपलब्धता के कारण ही प्राणियों का अस्तित्व और पदार्थो में उपयोगिता का गुण कायम है, कहा भी जाता है– ''जल ही जीवन है''। जल के बिना न तो मनुष्य का जीवन सम्भव है और न ही वह किसी कार्य को संचालित कर सकता है।

जल मानव की मूल आवश्यकता है। यूँ तो धरातल का 70% से अधिक भाग जल से भरा है, किन्तु इनमें से अधिकांश भाग का पानी खारा अथवा पीने योग्य नहीं है। पृथ्वी पर मनुष्य के प्रयोग हेतु कुल जल का मात्र 0.6% भाग ही मृदु जल के रूप में उपलब्ध है। वर्तमान समय में इस सीमित जलराशि का बड़ा भाग प्रदूषित हो चुका है, फलस्वरूप पेयजल की समस्या उत्पन्न हो गई है। जिस अनुपात में जल प्रदूषण में वृद्धि हो रही है, यदि यह वृद्धि यूँ ही जारी रही, तो वह दिन दूर नहीं जब अगला विश्वयुद्ध पानी के लिए लड़ा जाएगा। जल की अनुपलब्धता की इस स्थिति को ही जल संकट कहा जाता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि वर्ष 2025 तक विकट जल समस्या से जूझते विश्व की दो–तिहाई जनसंख्या अन्य देशों में रहने को विवश हो जाएगी।

जल संकट के कई कारण हैं। पृथ्वी पर जल के अनेक स्रोत है, जैसेः– वर्षा, नदियाँ, झील, पोखर, झरने, भूमिगत स्रोत इत्यादि। पिछले कुछ वर्षो में सिंचाई एवं अन्य कार्यो के लिए भूमिगत जल के अत्यधिक प्रयोग के कारण भूमिगत जल स्तर में गिरावट आई है। सभी स्रोतों से प्राप्त जल मनुष्य के लिए उपयोगी नहीं होता। औद्योगीकरण के कारण नदियों का जल प्रदूषित होता जा रहा है, इन्हीं कारणों से मानव जगत् में पेयजल की समस्या उत्पन्न हो गई है।

प्राकृतिक संसाधनों में मनुष्य के लिए वायु के बाद जल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी कारण विश्व की प्रायः सभी सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे ही हुआ है। जल के अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आज विश्व के 30% देश जल संकट का सामना कर रहे हैं। अमरिका स्थित वर्ल्ड वाच संस्थान की रिपोर्ट के अनुसार, हमारे देश में केवल 42% लोग ही पेयजल के रूप में स्वच्छ जल प्राप्त कर पाते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जारी की गई रिपोर्ट में भारत को सर्वाधिक प्रदूषित पेयजल आपूर्ति वाला देश बतलाया गया है। धरती की इस अमूल्य प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकास हेतु वर्ष 1973 में 'राष्ट्रीय जल संस्थान परिषद्' का गठन किया गया। वर्ष 1987 में भारत सरकार के जल संसाधन मंत्रालय द्वारा प्रथम 'राष्ट्रीय जल नीति' लागू की गई, जिसका वर्ष 2002 और 2012 में पुर्नसंशोधन किया गया।

मनुष्य के शरीर में जल की मात्रा 65% होती है। रक्त के संचालन, शरीर के विभिन्न अंगों को स्वस्थ रखने, शरीर के विभिन्न ऊतकों को मुलायम तथा लोचदार रखने के अतिरिक्त शरीर की कई अन्य प्रक्रियाओं के लिए भी जल की समुचित मात्रा की आवश्यकता होती है। इसके अभाव में मनुष्य की मृत्यु निश्चित है। दैनिक जीवन में कार्य करते हुए, पसीने एवं उत्सर्जन प्रक्रिया के दौरान हमारे शरीर से जल बाहर निकलता है, इसलिए हमें नियत समय पर पानी पीते रहने की आवश्यकता होती है। स्वास्थ्य विज्ञान के अुनसार, एक स्वस्थ मनुष्य को प्रतिदिन कम–से–कम चार लीटर पानी पीना चाहिए। जीवन के लिए जल की इस अनिवार्यता के अतिरिक्त दैनिक जीवन के अन्य कार्यो, जैसे–भोजन पकाने, कपड़े साफ करने, मुँह–हाथ धोने एवं नहाने आदि के लिए भी जल की आवश्यकता पड़ती है।

मनुष्य अपने भोजन के लिए पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर है। प्रकृति में पेड़–पौधे एवं पशु–पक्षी भी अपने जीवन के लिए जल पर ही निर्भर हैं। फसलों की सिंचाई, मत्स्य उद्योग एवं अन्य कई प्रकार के उद्योगों में जल की आवश्यकता पड़ती है। इन सब दृष्टिकोणों से भी जल की उपयोगिता मनुष्य के लिए बढ़ जाती है। जीवन के लिए सामान्य उपयोगिता एवं दैनिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त जल ऊर्जा का भी एक प्रमुख स्रोत है। पर्वतों पर ऊँचे जलाशयों में जल का संरक्षण कर जल–विद्युत उत्पन्न की जाती है। यह देश के कई क्षेत्रों में विद्युत का प्रमुख स्रोत है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है और हमारी कृषि वर्षा पर निर्भर करती है। वर्षा की अनिश्चितता के कारण ही कहा जाता है– 'भारतीय कृषि

मानसून के साथ जुआ है।' इस अनिश्चितता को दूर करने के लिए भी जल–संरक्षण आवश्यक है।

जल–संरक्षण वृक्षारोपण में भी सहायक सिद्ध होता है। वृक्ष वर्षा लाने एवं पर्यावरण में जल के संरक्षण में सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त, वृक्ष वायुमण्डल में नमी बनाए रखते हैं और तापमान की वृद्धि को भी रोकते हैं। अतः जल संकट के समाधान के लिए वृक्षों की कटाई पर नियन्त्रण कर वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। वृक्षारोपण से पर्यावरण प्रदूषण को भी कम किया जा सकता है।

नदियों के जल के प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए नदियों के किनारे स्थापित उद्योगों के अपशिष्ट पदार्थों को नदियों में प्रवाहित करने से रोकना होगा। शहरों की नालियों के गन्दे पानी को भी प्रयः नदियों में ही बहाया जाता है। इस गन्दे पानी को नदियों में बहाए जाने से पहले इसका उपचार करना होगा। कारखानों में गन्दे पानी के उपचार के लिए विभिन्न प्रकार के संयंत्र लगाने होंगे।

इन सबके अतिरिक्त, जल–संचय एवं जल–प्रबन्धन को भी विशेष महत्त्व दिए जाने की आवश्यकता है। जल के वितरण की उचित व्यवस्था करनी होगी। जहाँ तक सम्भव हो, जल का वितरण पाइपों के माध्यम से ही करना चाहिए, ताकि भूमि, जल को न सोखे एवं उसमें बाहरी गन्दगी का समावेश न हो। जल, संचय हेतु नए जलाशयों का निर्माण करने के बाद उन्हें पक्का करने से भी जल को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है। खेतों में सिंचाई के नालों को पक्का कर भी जल–संरक्षित किया जा सकता है। वर्षा के पानी के संरक्षण के लिए घरों की छतों पर बड़े–बड़े टैंक बनाए जा सकते हैं।

जल संकट को दूर करने के लिए जल के अनावश्यक खर्च से बचाना चाहिए, घरों में नलों को व्यर्थ में नहीं चलने देना चाहिए। जल की खपत को कम करने एवं उसके संरक्षण के लिए जनसंख्या पर नियंत्रण भी आवश्यक है। जल को संरक्षित करने के लिए गाँवों में बड़े–बड़े तालाबों एवं पोखरों का निर्माण किया जाना चाहिए, जिनमें वर्षा का जल संरक्षित हो सके और वर्षा के पश्चात् जब आवश्यकता हो, इस जल का प्रयोग सिंचाई में किया जा सके। ऐसा करने से भूमिगत जल के स्तर में भी वृद्धि होगी। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में, जहाँ वर्षा–जल की उपलब्धता अधिक होती है, बड़े–बड़े बाँधों का निर्माण किया जा सकता है। इन बाँधों से जल का संरक्षण तो होता ही है, मत्स्यपालन एवं विद्युत उत्पादन में भी सहायता मिलती है।

मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति का सन्तुलन बिगाड़ा है और अपने लिए भी खतरे की स्थिति उत्पन्न कर ली है। अब प्रकृति का श्रेष्ठतम प्राणी होने के नाते उसका कर्त्तव्य बनता है कि वह जल संकट की समस्या के समाधान के लिए जल–संरक्षण पर जोर दे। जल मनुष्य ही नहीं पृथ्वी के हर प्राणी के लिए आवश्यक है, इसलिए जल को जीवन की संज्ञा दी गई है। यदि जल की समुचित मात्रा पृथ्वी पर न हो, तो तापमान में वृद्धि के कारण भी प्राणियों का जीना मुहाल हो जाएगा।

इस समय जल प्रदूषण एवं अन्य कारणें से उत्पन्न जल संकट के लिए मनुष्य ही जिम्मेदार है, इसलिए अपने अस्तित्व की ही नहीं, बल्कि पृथ्वी की रक्षा के लिए भी उसे इस जल संकट का समाधान शीघ्र ही करना होगा और इस समस्या के समाधान के लिए जल–संरक्षण के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इसके लिए आवश्यक कार्यों को अंजाम देना होगा वरना बहुत देर हो जाएगी।

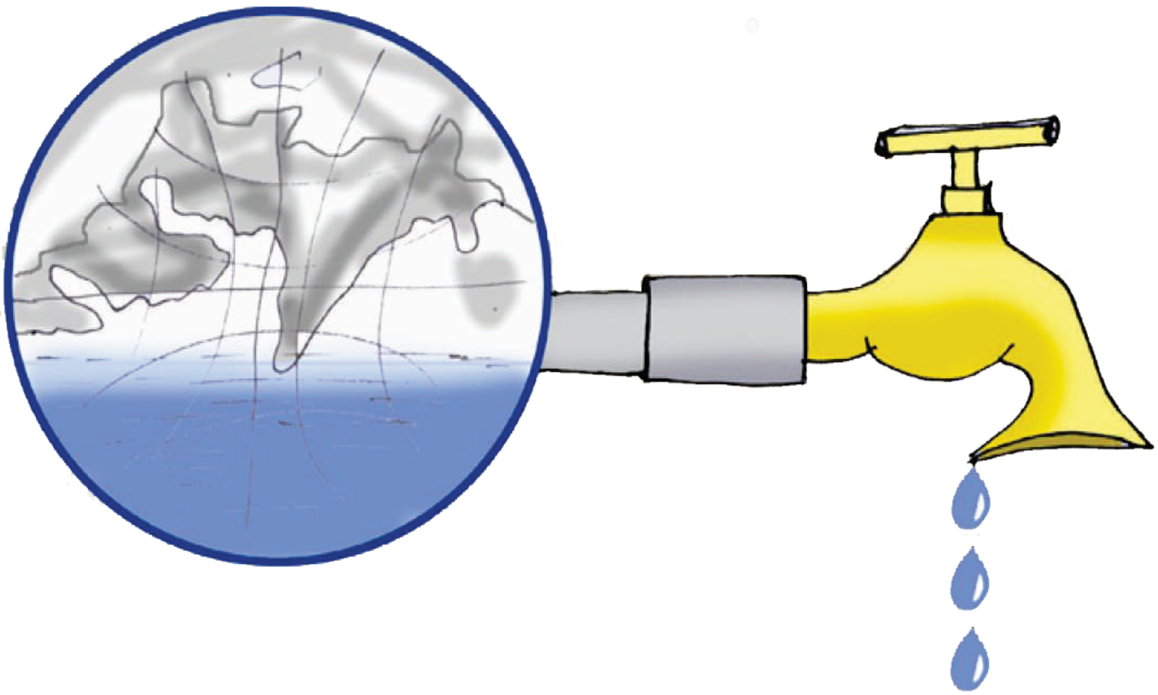

आयुर्वेद

श्री बी.आर. लोखंडे
सहायक, रसायनी यूनिट

आयुर्वेद का महत्व

प्रायः सभी ने अनुभव किया होगा कि इस विश्व में मनुष्य तो क्या, तुच्छ से तुच्छ जीव भी सदा रोग, वियोग, नुकसान, अपमान व अज्ञान से होने वाले दुखों से बचने की कोशिश करता है और सुख प्राप्ति के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि जब से सृष्टि की रचना हुई है, तभी से मनुष्य भूख, प्यास, नींद आदि स्वाभाविक इच्छाओं को पूरा करने एवं शारीरिक व्याधियों से छुटकारा पाने के लिए प्रयत्नशील रहा है। इसी क्रम में सबसे पहले आयुर्वेद का उद्भव हुआ। आजकल हम ऐलोपैथी (आधुनिक चिकित्सा–पद्धति), होम्योपैथी, नैचुरोपैथी (प्राकृतिक चिकित्सा), रेकी, आदि अनेक प्रकार की चिकित्सा–पद्धतियों का प्रयोग करते हैं, परन्तु आयुर्वेदिक पद्धति सहस्रों वर्षों से हमारे जीवन में रची बसी हुई है।

हम अपने दैनिक जीवन में देखते–सुनते हैं कि किसी को पेट दर्द होने पर या गैस होने पर अजवायन, हींग आदि लेने को कहा जाता है; खाँसी–जुकाम, गला खराब होने पर कहा जाता है कि ठण्डा पानी न पियो; अदरक, तुलसी की चाय, तुलसी एवं काली मिर्च या शहद और अदरक का रस, अथवा दूध व हल्दी ले लो, आदि। अमुक चीज की प्रकृति ठण्डी है या गर्म, इस प्रकार के सभी निर्देश आयुर्वेद के ही अंग हैं। इस प्रकार हम अपने बुजुर्गों से पीढ़ी दर पीढ़ी घर में प्रयुक्त होने वाले पदार्थों के औषधीय गुणों के विषय में सीखते चले आ रहे हैं। हमें अपने घर के आँगन अथवा रसोई घर से ही ऐसे अनेक पदार्थ मिल जाते हैं, जिन्हें हम औषधि के रूप में प्रयुक्त कर सकते हैं। इस प्रकार हम इस आयुर्वेदीय पद्धति को अपने जीवन से अलग कर ही नहीं सकते।

प्रश्न उठता है कि जो 'आयुर्वेद' हमारे जीवन में इतना घर कर चुका है, वह वास्तव में है क्या? इसको समझने के लिए आयुर्वेद शब्द की व्युत्पत्ति को जानना होगा। यह शब्द 'आर्युष+वेद' इन दो शब्दों के मेल से बना है। 'आयुष' का अर्थ है–'जीवन', तथा 'वेद' का अर्थ है–'विज्ञानं '1।

इस प्रकार, 'आयुर्वेद' शब्द का अर्थ हुआ–'जीवन का विज्ञान'। साधारण भाषा में कहें तो जीवन को ठीक प्रकार से जीने का विज्ञान ही आयुर्वेद है, क्योंकि यह विज्ञान केवल रोगों की चिकित्सा या रोगों का ही ज्ञान प्रदान नहीं करता, अपितु जीवन जीने के लिए सभी प्रकार के आवश्यक ज्ञान की प्राप्ति कराता है।

बहुत सीमित अर्थ में ही हम इसे एक चिकित्सा प्रणाली भी कह सकते हैं, क्योंकि यह स्वास्थ्य–रक्षा और रोग– निवारण, दोनों के लिए व्यवस्थित और क्रमबद्ध ज्ञान भी प्रस्तुत करता है। वास्तव में यह विज्ञान मनुष्य ही नहीं, अपितु प्राणिमात्र के कल्याण के लिए ही उनके शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक सभी पक्षों पर प्रभाव डालता है। महर्षि चरक ने 'चरक–संहिता' नामक ग्रन्थ में आयुर्वेद की परिभाषा देते हुए भी कहा है– जिसमें हित आयु, अहित–आयु, सुख आयु और दुख आयु का वर्णन हो, उस आयु के लिए हितकर (पथ्य) व अहितकर (अपथ्य) द्रव्य, गुण, कर्म का भी वर्णन हो एवं आयु का मान (प्रमाण या अवधि) व उसके लक्षणों का वर्णन हो, उसे आयुर्वेद कहते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आयुर्वेद के ये सिद्धान्त किसी विशेष व्यक्ति, जाति या देश तक सीमित नहीं हैं, ये सार्वभौम (सभी जगह लागू होने वाले) हैं। जिस प्रकार जीवन सत्य है, उसी प्रकार ये सिद्धान्त और नियम भी सभी स्थानों पर मान्य और सत्य हैं, अतः शाश्वत, सार्वभौम एवं सर्वजनीन हैं। इनमें 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' अर्थात् 'सभी सुखी हों और सभी निरोग हों' का भाव निहित है। निष्कर्ष के रूप में आयुर्वेद एक चिकित्सा–पद्धति होने के साथ–साथ एक संपूर्ण जीवन–पद्धति व साधना–पद्धति भी है।

आयुर्वेद से तात्पर्य

आयुर्वेद प्राचीन भारतीय प्राकृतिक और समग्र वैद्य–शास्त्र चिकित्सा पद्धति है। संस्कृत भाषा में आयुर्वेद का अर्थ है 'जीवन का विज्ञान' (संस्कृत मे मूल शब्द आयुर का अर्थ होता है 'दीर्घ आयु' या आयु और वेद का अर्थ हैं 'विज्ञान'।

एलोपैथी औषधि (विषम चिकित्सा) रोग के प्रबंधन पर केंद्रित होती है, जबकि आयुर्वेद रोग की रोकथाम और रोग को उत्पन्न करने वाले मूल कारण को निष्काषित करने पर केंद्रित होता है।

आयुर्वेद के अनुसार जीवन के उद्देश्यों यथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिये स्वास्थ्य पूर्वपेक्षित है। यह मानव के सामाजिक, राजनीतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक पहलुओं का समाकलन करता है, क्योंकि ये सभी एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं।

आयुर्वेद तन, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित कर व्यक्ति के स्वास्थ्य में सुधार करता है। आयुर्वेद में न केवल उपचार होता है बल्कि यह जीवन जीने का ऐसा तरीका सिखाता है, जिससे जीवन लंबा और खुशहाल हो जाता है।

आयुर्वेद के अनुसार व्यक्ति के शरीर में वात, पित्त और कफ जैसे तीनों मूल तत्त्वों के संतुलन से कोई भी बीमारी नहीं हो सकती, परन्तु यदि इनका संतुलन बिगड़ता है, तो बीमारी शरीर पर हावी होने लगती है।

अतः आयुर्वेद में इन्हीं तीनों तत्त्वों के मध्य संतुलन स्थापित किया जाता है। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद में रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने पर भी बल दिया जाता है, ताकि व्यक्ति सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो।

आयुर्वेद की विकास यात्रा

स्वतंत्रता से पूर्व :–

ब्रिटिश राज ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को अवैज्ञानिक, रहस्यमयी और केवल एक धार्मिक विश्वास माना। परिणामस्वरूप इस चिकित्सा पद्धति को नष्ट करने का प्रयास भी किया गया।

वर्ष 1835 में कलकत्ता मेडिकल कॉलेज में आयुर्वेद के शिक्षण कार्य को निलंबित कर दिया गया था।

हालाँकि औपनिवेशिक शासन के दौरान कई प्राच्यविदों ने वैदिक ग्रंथों को पुनर्प्राप्त करके आयुर्वेद को अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित भी किया। प्राच्यविदों ने आयुर्वेद को पुनर्जीवित करने में बड़ा योगदान दिया था।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद हुए राष्ट्रीय विद्रोह और सामाजिक सुधार आंदोलनों ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में नई ऊर्जा का संचार किया।

इस दौरान कई आयुर्वेदिक चिकित्सकों ने स्वयं को एक पेशेवर चिकित्सा संगठन में संगठित किया और चिकित्सीय पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ किया था।

स्वतंत्रता के बाद :–

आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया। इसके पीछे यह तर्क दिया गया था कि एक संयुक्त चिकित्सा प्रणाली व्यक्तिगत विज्ञान के रूप में आयुर्वेद से अधिक प्रभावकारी होगी।

स्वतंत्रता के बाद कोलकाता, बनारस, हरिद्वार, इंदौर, पूना और बंबई आयुर्वेद के प्राचीन उत्कृष्ट संस्थान के रूप में स्थित थे।

1960 के दशक में विशेष रूप से गुजरात और केरल में अच्छी तरह से नियोजित मेडिकल कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के विकास में तेजी आई, परंतु आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति नेपथ्य में ही रही।

हालाँकि आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को वर्ष 2014 में आयुष मंत्रालय (आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी) की स्थापना से प्रोत्साहन मिला।

आयुष मंत्रालय ने सभी हितधारकों के साथ संचार का एक कुशल नेटवर्क स्थापित किया है तथा शिक्षा, अनुसंधान और संरक्षण के माध्यम से आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को संरक्षित किया है।

आयुर्वेद से संबंधित चुनौतियाँ

विषम परिस्थितियों में अप्रभावी उपचार: गंभीर संक्रमण और शल्य चिकित्सा सहित अन्य आपात स्थितियों में आयुर्वेद की न्यून प्रभावकारिता और सार्थक चिकित्सीय अनुसंधान की कमी आयुर्वेद की सार्वभौमिक स्वीकृति को सीमित कर देती है।

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति अत्यधिक जटिल व निषेधात्मक है।

आयुर्वेदिक दवाओं की कार्यप्रणाली काफी धीमी है। आयुर्वेदिक दवाओं की प्रभावकारिता का पूर्वानुमान करना कठिन कार्य है।

एकरूपता का अभाव: आयुर्वेद में चिकित्सा पद्धतियाँ एक समान नहीं हैं। ऐसा इसलिये है क्योंकि इसमें इस्तेमाल होने वाले औषधीय पौधे भौगोलिक जलवायु और स्थानीय कृषि प्रथाओं के अनुसार भिन्न–भिन्न होते हैं।

आयुर्वेद के विपरीत आधुनिक चिकित्सा पद्धति में, रोगों को वर्गीकृत किया जाता है और पूर्व निर्धारित मानदंडों के अनुसार इलाज किया जाता है।

आयुर्वेदिक फर्मों द्वारा भ्रामक प्रचार: आयुर्वेदिक फार्मा उद्योग ने दावा किया कि इसकी निर्माण पद्धतियाँ शास्त्रीय आयुर्वेद ग्रंथों के अनुरूप थी।

आयुर्वेदिक दवाओं की बेहतर बाजार हिस्सेदारी के लिये, दवा कंपनियों ने पर्याप्त वैज्ञानिक आधार के बिना अपने आयुर्वेदिक उत्पादों के बारे में कई औषधीय दावों को प्रचारित किया।

मान्यता का अभाव: विभिन्न देशों में आयुर्वेद को चिकित्सा पद्धति के रूप में मान्यता नहीं प्राप्त हो पाई है, हालाँकि पिछले कुछ वर्षों से आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में रूचि लेने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हुई है।

अधिकांश देशों ने आयुर्वेद को चिकित्सा के रूप में आधिकारिक रूप से मान्यता नहीं दी है और उन्होंने आयुर्वेदिक दवाओं के उपयोग पर कई प्रतिबंध भी लगा रखे हैं।

गहन अध्ययन की कमी: वर्ष 2004 में एक प्रमुख अमेरिकी जर्नल ने अमेरिका में बेची जाने वाली कुछ आयुर्वेदिक दवाओं में भारी धातुओं (आर्सेनिक, मरकरी, लेड) के अतिशय प्रयोग पर चिंता व्यक्त की। भारी धातुओं का अतिशय प्रयोग स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है।

इस जर्नल के प्रकाशित होने के बाद दुनिया भर में आयुर्वेदिक दवाओं की निंदा हुई और सरकार ने आयुर्वेदिक दवाओं में भारी धातुओं का परीक्षण अनिवार्य कर दिया और आयुर्वेद दवा कंपनियों को विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों का पालन करने के लिये कहा गया।

आयुर्वेद में उप–मानक अनुसंधान: पिछले पाँच दशकों में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में अनुसंधान मुख्य रूप से अन्य चिकित्सा प्रणालियों में उपयोग की जाने वाली सामान्य प्रक्रियाओं के अनुसरण तक ही सीमित था।

प्रायः यह पाया गया कि आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में अध्ययन के तरीके और डेटा के निर्माण व गुणवत्ता का मानकीकरण निम्न स्तर का था।

“धन” आत्मक – विचार

धन डी. सोनवानी
प्रभारी, उप महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.)
रसायनी यूनिट

धनात्मक यानि सकारात्मक एक ऐसी शक्ति है, जिससे किसी पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। क्या आप जानते हैं कि हमारे पास बहुत सी शक्तियाँ व्याप्त होती हैं, उन शक्तियों में से एक शक्ति है धनात्मक या सकारात्मक जिसके उपयोग से हम अपनी सभी मनोकामनाएं पूर्ण कर सकते हैं। आप जैसा सोचेंगे, जैसे विचार अपने मन में लाएंगे, जैसी कल्पना करेंगे, वह आपके जीवन की सच्चाई अर्थात हकीकत बन जाए।

दुनिया भर में जितने भी लोग सफल हुए हैं, जिन्होंने हैरतंगेज़ कारनामे किए हैं, उन सभी का विचार है कि उन्होंने सबसे पहले उन कार्यों को अंतर्मन में देखा है, अपने मन में उन कारनामों की कल्पना की है, उन्हें अपने मन की आँखों से साकार होते हुए देखा है। उन कारनामों को कर दिखाने के पश्चात होने वाली सुखद अनुभूति को महसूस किया है। उन सपनों को खुली हुई आंखो से देखा और उनका वह कारनामा सचमुच हकीकत बन गया। कामयाबी के लिए सिर्फ इतना ही बहुत है कि आप स्वप्न जागते हुए देखें। जागते हुए देखते हुए स्वप्न हमेशा सच होते हैं। इसमें किसी भी प्रकार का संशय नहीं है, शर्त सिर्फ इतनी है कि आपको किसी भी वस्तु या घटना के विषय में सिर्फ "धनात्मक" अर्थात सकारात्मक सोच रखनी होगी। हमें इसका अंदाजा भी नहीं है, लेकिन यह कटु सत्य है कि अपने जीवन में हम जो भी सोचते हैं, अपने बारें में जैसा भी सोचते हैं, हमारे अंतर्मन में जैसे भी विचार विचरण करते हैं, हम वैसे ही बनते हैं। हमारा बर्ताव भी वैसा ही होता है एवं हू–ब–हू हमारे जीवन में वैसा ही होता जाता है। हमारे प्रसिद्ध ग्रंथ "रामचरित मानस" में भी इसे सटीक तरीके से कहा गया है।

"जाकि रही भावना जैसी। प्रभु मूरत देखी तिन तैसी"।

आइये हम "धनात्मक" विचार के विषय में विस्तृत रूप से जानने का प्रयास करते हैं। व्यावहारिक जीवन में धनात्मक यानि सकारात्मक विचार के कुछ व्यावहारिक नियम हैं। अगर हम इन्हें अपने व्यावहारिक जीवन में अवतरण (अपना) कर लें, तो दुनियाँ में ऐसी कोई अनमोल वस्तु नहीं है जिसे हम प्राप्त नहीं कर सकते।

प्रथम नियम– ''हम बार–बार सोचते हैं, वैसे ही बन जाते हैं।''

उदाहरण स्वरूप हम अपने ही भूत काल में झाँक कर देखें, तो अनुभव करेंगे कि हमने जिन वस्तुओं के विषय में बार–बार सोचा है, वे अपने आप ही हमारे जीवन का अभिन्न भाग बनती चली गई। चाहें बाल्यावस्था में कक्षा में कक्षा–नायक बनने की लालसा हो, कक्षा में उत्तम अंकों से उतीर्ण होना हो, किसी खेल में अव्वल आना हो, कोई नई चीज सीखनी हो, ये सभी धनात्मक यानि सकारात्मक सोच के कारण ही घटित (संभव) होते हैं। ऐसा इसलिए होता है या अनुभव किया जाता है क्योंकि जिन वस्तुओं के विषय में हम बार–बार सोचते हैं, वे हमारे चेतन मन के रास्ते से अवचेतन अवस्था तक पहुँचती रहती है। एक बार अवचेतन मन या अवस्था में कोई बात यदि पहुँच जाती है, तो वह सौ प्रतिशत उसे हकीकत में तब्दील कर ही देता है।

द्वितीय नियम– "आप बार–बार जैसी भावनाओं का अहसास करेंगे, आपके व्यावहारिक जीवन में उसी प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति होगी।"

आपने क्या कभी अपने आसपास के लोगों को देखते हुए ध्यान दिया है कि जो व्यक्ति जैसा होता है, जैसे जज़्बातों को महसूस करता है, उसके व्यावहारिक जीवन में वैसे ही घटनाएँ घटित होती है। मैं निजी तौर पर ऐसे बहुत लोगों को जनता हूँ, जो बात–बात पर रोते रहते है, हमेशा तनाव में रहते हैं, उदास और दुखी रहते है। अपने दुखों से ज्यादा दूसरों की खुशी से परेशान रहते हैं। मेरे एक अभिन्न मित्र लोढ़ा समूह में एक बहुत ही उच्च पद पर पदस्थ थे, उनका वेतन भी बहुत अच्छा था, परंतु हमेशा इस बात से दुखी रहते थे कि उनकी शासकीय नौकरी नहीं है एवं उनकी नौकरी कभी भी जा सकती है। कोविड–19 के दौरान, जून 2020 में हुआ वही जैसा वे हमेशा नकारात्मक सोच रखते थे, उनकी नौकरी चली गई, साथ ही उन्हें समूह द्वारा आवंटित आवास खाली करना पड़ा एवं गाड़ी भी लौटनी पड़ी। कहने का तात्पर्य है कि आप जैसा सोचेंगे, आपके साथ वैसा ही होगा। मैंने कितनी बार गौर किया है कि कुछ भी बुरा होना होता है, तो ये सब नकारात्मक सोच रखने वालों के साथ ही होता है। नौकरी छुटनी होती है, ट्रेन या हवाई जहाज छुटनी होती है, बीमारी होनी होती है, सब नकारात्मक सोच रखने वालों के साथ ही होता है।

नकारात्मक सोच रखने वालों की तुलना में, जो लोग धनात्मक या सकारात्मक सोच रखते हैं, वे हमेशा खुश रहते हैं, सकारात्मक शक्ति से भरे रहते हैं। इनके जीवन में सारी अच्छी घटनाएँ घटित होती हैं। आपको अगर अपने जीवन में अच्छी चीजें लानी हैं, खुशहाल स्थितियाँ

पैदा करनी है, तो मन में वैसे ही विचार लाइये, हमेशा ज़िंदादिली बने रहिए, मन में सुविचार लाइए, आप जिन भावनाओं को महसूस करेंगे, जिन भावों में जिएंगे, वे ही स्थितियों के रूप में आपके जीवन में भी प्रवेश करेंगे। जिस प्रकार से "अनुपस्थिति" में "उपस्थिति" का होना परोक्ष रूप से स्वाभाविक है उसी प्रकार खुश रहेंगे तो खुशी देने वाली घटनाएँ जीवन में अवश्य आएगी।

तृतीय नियम– "आप जिसकी बार–बार कल्पना करेंगे, वही आपके जीवन की हकीकत बनेगा।"

जिन स्थितियों को आप अपने जीवन में लाना चाहते हैं, जिन सुख–सुविधाओं को आप भोगना चाहते हैं, जिस स्थान या पद पर आप पहुँचना चाहते हैं, उनसे जुड़ी हुई तस्वीरों का अनुभव कीजिए, उनसे जुड़ी हुई तस्वीरें देखिए, जागते हुए खुली आँखों से स्वप्न देखिए, उनके बारें में कल्पना करिए भविष्य के बारे में चिंता करने से तो मात्र नुकसान ही होता है, पर परिकल्पना करने से वे चीजे आपके जीवन में हकीकत बनती है। इसे चरितार्थ करते हुए किसी ने बहुत ही सुंदर उक्ति में कहा है:–

"चिंता से चतुराई घटे, दुख से घटे शरीर।
दास मलुका कह गए, सबके दाता राम।।"

अतः यहाँ भी हमारा अवचेतन मन बड़ी भूमिका अदा करता है। हम जिन दृश्यों या तस्वीरों की बार–बार कल्पना करते हैं, खुली आँखों से स्वप्न देखते हैं, वे हमारे अवचेतन में बैठ जाती हैं। अवचेतन अवस्था का स्वभाव है कि उसके पास जो भी दृश्य आते हैं वह उन्हें वास्तविकता में बदल देता है। इसमें थोड़ा समय लग सकता है, पर देर सवेर वह कामयाब अवश्य होता है, कहावत है कि "भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं है" बशर्ते कि आप उन दृश्यों की कल्पना करना न छोड़े।

सकारात्मक सोच की विशिष्ट शक्ति का एक महत्वपूर्ण उदाहरण के तौर पर स्वर्गीय श्री अजीत प्रमोद कुमार जोगी पूर्व भारतीय प्रशासनिक सेवा एवं पूर्व भारतीय पुलिस सेवा एवं छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री का नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। सन 2004 में सड़क दुर्घटना के पश्चात दुनिया के जाने– माने सभी डॉक्टर यह कह चुके थे कि अब माननीय अजीत जोगी जी कभी भी सक्रिय राजनीति नहीं कर पायेंगे, किन्तु इसके विपरीत सकारात्मक सोच के विशिष्ट शक्ति के चलते माननीय अजीत जोगी जी पहिए वाली कुर्सी पर विराजमान होते हुए भी न सिर्फ सक्रिय राजनीति करते रहे बल्कि अपने जीवन पर्यंत, मई–2020 तक राष्ट्र की सेवा करते रहे।

सकारात्मक सोच के नियम तो बहुत हैं, किंतु उन्हें गिना पाना नामुमकिन ही नहीं बल्कि असंभव प्रतीत होता है। जैसे असत्य की आयु सत्य से भले ही बहुत लंबी हो किंतु अंत में विजय सदैव सत्य की होती है, वैसे ही नकारात्मक सोच कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो किंतु अंत में विजय हमेशा सकारात्मक सोच रखने वालों की ही होती है।

सकारात्मक– "धनात्मक" सोच की उपर्युक्त नियमों को अगर आप अपने जीवन में उतार लें और उन पर चलें, तो आज आप कैसी भी विकट परिस्थिति में हो, आपके भविष्य को सुनहरा होने से दुनियाँ की कोई भी ताकत नहीं रोक सकती। सकारात्मक सोच के बलबूते पर सफलताएं सदैव हमारे कदम चूमेंगी। हम रोज ऐसा होते हमारे आस–पास देखते हैं, अनुभव करते हैं। सकारात्मक सोच के अतिरिक्त सफलता की कोई दूसरी राह संभव ही नहीं बल्कि असंभव है। कामयाबी का हर मुकाम "धनात्मक" सोच की राह से ही हासिल होता है। आप अगर अपना जीवन बदलना चाहते है, तो वह अपने आप बदलेगा, आप पहले अपनी सोच तो बदलिए– "जनाब"

"धनात्मक सोच रखिए, स्वस्थ रहिए।
खुश रहिए, समृद्ध बने रहिए।।"

जैसे इंद्रधनुष में होते हैं सात रंग
वैसे हिंदी लाती है हर भारतीय को संग

सम्पूर्ण भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा चाहिए जिसे जनता का बड़ा भाग पहले से ही जानता और समझता है। बिना ऐसी राष्ट्रभाषा के राष्ट्र गूंगा है

– महात्मा गांधी

सर्तक भारत, समृद्ध भारत

अशोक कुमार राव
गुणवत्ता आश्वासन अधिकारी
रसायनी यूनिट

हमारा देश को पुरातन काल में सोने की चिड़िया कहा जाता था जहाँ रामराज्य एवं सम्पन्न रहता था। लोगों के अन्दर किसी प्रकार का भय नहीं था। प्रजा सुखी एवं सम्पन्न थी। परन्तु शनै–शनै हमारा देश बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचारी, कालेधन में लिपटता चला गया। यह कहाँ से एवं कब प्रारंभ हुआ किसी को भी नहीं पता, परन्तु इसने समाज में समाहित होकर समाज को जकड़ लिया है। अब इसकी पराकाष्ठा का स्तर इतना बढ़ गया है कि लोग इस बुराई के जंजीरों से छुटकारा पाना चाहते हैं। परन्तु चाहकर भी निकल नहीं पा रहे हैं। भ्रष्टाचार के कारण हमारा देश/समाज इन कालेधन की कुरीतियों में बंधता चला जा रहा है।

हमारे ही देश के चंद लोग कुछ पैसों एवं अपनी इच्छाओं की पूर्ती के लिए अपने ही देश से अपने ही लोगो से गद्दारी कर रहे हैं। वे भ्रष्टाचार दीमक की तरह समाज को खाये जा रहा है। देश को खोखला बना रहा है।

वर्तमान में गरीबी का मूल कारण भ्रष्टाचार, कालाधन, जमाखोरी, जमाबाजारी है, जो लोगों के दिलों में पैठ बना चुका है। भ्रष्टाचार के कारण गरीब और गरीब होता जा रहा है तथा अमीर उद्योगपति और भी अमीर होते जा रहे हैं। गरीबी और अमीरी में गहरा खाई हो गई है। जो कब पटेगी किसी को भी नहीं पता।

भारत एक मात्र देश है जो एकता, अखंडता एवं संस्कृति के लिये विश्व में प्रसिद्ध है। आज भारत विकासशील देश की लाईन में खड़ा है। अमेरिका जैसा देश भी भारत को मान सम्मान देता है एवं अपने बराबर का देश कहता है।

हर तरफ भ्रष्टाचार का बोलबाला है।
गरीब और गरीब, धनवान और धनवान होता जा रहा है।।

बच्चे के पैदा होते ही भ्रष्टाचार शुरू हो जाता है। नार्मल डिलिवरी को भी सीजेरियन में बदल दिया जाता है। स्कूल में भर्ती होते ही डोनेशन के नाम पर भ्रष्टाचार और मरणोपरांत घाट पर शरीर जलाने पर भी बिना धूप दिये जलाया नही जाता है। पढ़ने के बाद नौकरी के लिये जाता है तो घूस मांगी जाती है।

हमें समृद्ध भारत बनाना है तो रिश्वत जैसे राक्षस पर काबू पाना होगा तभी हम समृद्ध भारत का सपना साकार कर पायेंगे इस ईमानदारी को शुरूआत हमें स्वंय करनी पड़ेगी।

आज भ्रष्टाचार के विरूद्ध आवाज़ उठाने का वक्त आ गया है। सूचना का अधिकारी अधिनियम के माध्यम से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया जा सकता है। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए सतर्कता एवं जागरूकता फैलाना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक बनना होगा एवं भ्रष्टाचार होने पर उसकी शिकायत उच्च अधिकारी को किया जाना चाहिए। प्रत्येक हर व्यक्ति भ्रष्टाचार के प्रति सर्तक रहेगा तो हमारा देश समृद्ध बनेगा। रिश्वत लेना एवं देना दोनों ही पाप है।

इससे जितनी दूरी बनाया जाय उतना ही श्रेष्ठ कर है। स्वयं ईमानदार रहे, कार्य के प्रति, कार्य पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से करने पर भ्रष्टाचार पर रोक लगाया जा सकता है।

सतर्कता का है आधार
ईमानदारी है समृद्ध आधार

सत्यनारायण नान्दल
सहायक प्रबन्धक (प्रशासन), निगमित कार्यालय

देश हमें देता है सब कुछ

देश हमें देता है सब कुछ, भी तो कुछ देना सीखें।

सूरज हमें रौशनी देता, हवा नया जीवन देती है।
भूख मिटने को हम सबकी, धरती पर होती खेती है।
औरों का भी हित हो जिसमें, हम ऐसा कुछ करना सीखें

गरमी की तपती दुपहर में, पेड़ सदा देते हैं छाया।
सुमन सुगंध सदा देते हैं, हम सबको फूलों की माला।
त्यागी तरूओं के जीवन से, हम परहित कुछ करना सीखें

जो अनपढ़ हैं उन्हे पढ़ाएँ, जो चुप हैं उनको वाणी दें।
पिछड़ गए जो उन्हें बढ़ाएँ, समरसता का भाव जगा दें।
हम मेहनत के दीप जलाकर, नया उजाला करना सीखें

जय हिन्द -जय भारत

विजय कुमार गांधी
उप प्रबन्धक (प्रशासन), निगमित कार्यालय

मेरी जिन्दगी

रख सको याद तो एक निशानी हूँ मैं
भूल जाओगे तो एक कहानी हूँ मैं।
रोक पाए न जिसको ये दुनिया सारी
वो एक बन्द आँखों का पानी हूँ मैं।

प्यार देने की सबको है आदत मेरी
प्यार पाने की उम्मीद रखता नहीं हूँ।
कितना भी गहरा जख्म दे दे कोई
वजह मुस्कराने की खोजता नहीं हूँ

इस अंजानी दुनिया मे अकेला ख्वाब हूँ
हर कठिन सवालों का मैं खुद जवाब हूँ।

तू समझा ना सके तो उलझा हूँ मैं
तू समझ जाए तो खुली किताब हूँ मैं
आँखों से देखो तो खुश नजर आयेंगे
दिल से पूछो तो दर्द का समन्दर हूँ मैं

अगर रख सको तो एक निशानी हूँ मैं
भूल जाओ तो सिर्फ ऐ कहानी हूँ मैं।

अशोक कुमार राव
गुणवत्ता आश्वासन अधिकारी
रसायनी यूनिट

ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा

ईमानदारी की परिभाषा हरेक देता।
सत्यनिष्ठा का पाठ हरेक पठाता है।
अपने ही दिल से पूछ लो।
कितने है भ्रष्टाचारी हम पूछ लो।।
कितने है ईमानदार हम पूछ लो।
हरेक की परिभाषा अलग-अलग होगा।।
जीवन में ईमानदारी
इतना भी कठिन नही
बस इतना ही सोच लो तो
कुछ भी मुश्किल नही।

सच्चाई, ईमानदारी की डगर कठिन है।
कई बार गिरना, कई बार उठना पड़ता है।
जीवन में सफल वही होता है।
जो गिरकर उठना सीखता है।
भ्रष्टाचार हटाना है, भगाना है
सतर्क एवं समृद्ध भारत बनाना है।
विश्वास ही वो सम्पत्ति है।
ईमानदारी से देश को विकास पर ले जाना है।
ईमानदारी की परिभाषा हरेक देता
सत्यनिष्ठा का पाठ हरेक पढाता है।

निर्मला वर्गीस
वाणिज्य विभाग, उद्योगमंडल यूनिट

मेरा जीवन

बचपन में फूल समान
बचपन में लहर समान
बचपन में हिरण समान
झिलमलाती थी मैं सब कहीं।

याद है तुझे मेरा जीवन
प्यार से भरा मेरा जीवन
प्रकाश फैलाया मेरा जीवन
सुंदर बनाया दो बच्चों से।

पहले कभी मुरझायी थी मैं
फिर भी एक बार खिल उठी
सब पर मेरी सुगन्ध फैलायी
अब भी चलती हूँ सुगन्ध समान।

मुस्कुराकर बोलती हूं मैं
प्यार भरकर जीवन को
प्रिय बेटों के साथ यह प्रिय जीवन
कभी भी मुझे हरा न पाया।

यहाँ से मेरा विदा अब हो
तहे दिल व खुशी प्यार से
न भूलूंगी कभी इधर का जीवन
जो सौभाग्य भरी देन इधर के।

जाने के पहले देखा एक बार
फिर पीछे मुडकर मैंने
इस दीवारों के अन्दर, सब कहीं
खुशी से दम से विदा।

विनोद कुमार एम एस
वित्त विभाग, उद्योगमंडल यूनिट

प्रवासी

दूर चले हम अपनी मिट्टी छोडकर
अपनों की भूख मिटाने मीलों दूर
अन्य देश, अंजान लोग, अलग भाषा
गुलाम बन गए हम नए जीवन पर।

खून पसीना हो रही है गर्मी से
मन की व्यथा कम नहीं हो रही है
अच्छे कपड़े, अच्छे शिक्षण और रहने को
एक छोटा सा घर है एक सपना।

एक–एक पैसा इकट्ठा करके
भेज दिया अपनों को हर महीने में
खुशी लाई सबके चेहरे पर
अपनी मेहनत का फल मिलने लगा।

सभी उम्मीदों को ठुकराकर आये
कोरोना नाम की बीमारी फैल गई
दुनिया के कोने–कोने में
बिगाड़ दी दुनिया की अर्थिक स्थिति।

चलना पड़ा वापस अपने देश खाली हाथ
टूटे हुए सपनों के भंडार लेकर अपने गाँव
अपनों को देखकर खुशी हुई बहुत,
पर कई दिन उनसे अलग रहना है।

उतना है अपनी मिट्टी में बाद में
अपनों के साथ रहना है आगे
ये देश, ये प्यार, ये मिट्टी ये हवा
बनाया दिल से अमीर मुझे।

सलिम ए रहमान
सतर्कता अधिकारी, उद्योगमंडल यूनिट

अधूरे लक्ष्य पर रूदन

उस दिन के सायं को
करूण भरी रूदन सुनकर डरा,
भागकर सडक तक आने पर देखा कि
तडपता रहता है वह अपना जीवन के लिए
पड़ा है पोस्ट के नीचे ही,
साथ है नया बैंक भी
कुछ भी न कर पाया, उससे पहले ही
अचेत हुआ है तन से प्राण बिछुडा है
हाय रे, मन तड़पता है दुख से
जानता हूं उस सुन्दर जवान को
होशियार, चतुर व फुर्तीला,
जिस पर थी प्रतीक्षा एक परिवार की।

कितने बार उनसे ममता भरी वाणी में
बोला है –'तीव्रगति जैसी
असावधानी भी खतरा लाती है,
पागलपन न हो तीव्रगति के पकड़ से
उसी उन्मादकता हमारा नाशकारी
हमारी करूणा सूखकर अपनापन मिटाएंगे
नियमों के अनुपालन के समान ही
अनुदेशों का पालन करना,
वे तो तमाम जीवन रास्ते को सहारा देंगे।

हर एक कार्य प्रार्थना हो, जिसमें सावधानी हो
उसी में सुरक्षा के तीनों वर्णो का मिलन हो।

रमा जोशी
वरिष्ठ सहायक (वित्त), बठिंडा यूनिट

वक्त

घर बनाने में वक्त लगता है,
पर मिटाने में पल नहीं लगता

दोस्ती बड़ी मुश्किल से बनती है
पर दुष्मनी में वक्त नहीं लगता

गुज़र जाती है उम्र रिश्तें बनाने में
पर बिगड़ने में वक्त नहीं लगता

जो कमाता है महीनों में आदमी
उसे गवाने में वक्त नहीं लगता

पल भर कर उम्र बीत जाती है जिन्दगी
पर मिट जाने में वक्त नहीं लगता

जो उड़ते है अहम के असमानों में
ज़मीन पर आनें में वक्त नहीं लगता

हर तरह का वक्त आता है ज़िंदगी में
वक्त गुजरने में वक्त नहीं लगता

वक्त जिसका साथ देता है वो वक्त
बड़ों–बड़ों को मात देता है।

वक्त में अमीर के घर पर बैठा
कौवा भी सब को मोर लगता है।
वक्त में गरीब का भूखा बच्चा भी सब को चोर लगता है।

वक्त में इंसान की अच्छाई पर खामोश रहते हैं।
वक्त पर चर्चा अगर उसकी बुराई पर है
तो गूंगे भी बोल पड़ते है

वक्त–वक्त की बात है रे भईया
किसी कवि ने कहाँ है
जो जागत है सो पावत है
जो सोवत है वो खोवत है
जो वक्त की कीमत जानत है
वो ही पावत है।

सरस्वती शर्मा
वरिष्ठ सहायक (विशेष श्रेणी), बठिंडा यूनिट

आज का कल्चर

देहरी, आंगन, धूप नदारद।
'ताल, तलैया, कूप नदारद।'
'घूँघट वाला रूप नदारद।'
'डलिया, छलनी, सूप नदारद।'

आया दौर फ्लैट कल्चर का,
देहरी, आंगन, धूप नदारद।
हर छत पर पानी की टंकी,
ताल, तलैया, कूप नदारद।।

लाज–शरम चंपत आंखों से,
घूँघट वाला रूप नदारद।
पैकिंग वाले चावल, दालें,
डलिया, चलनी, सूप नदारद।।

बढ़ीं गाड़ियां, जगह कम पड़ी,
सड़कों के फुटपाथ नदारद।
'लोग हुए मतलबपरस्त सब,'
'मदद करें वे हाथ नदारद।।'

मोबाइल पर चैटिंग चालू,
यार–दोस्त का साथ नदारद।
बाथरूम, शौचालय घर में,
कुआं, पोखरा ताल नदारद।।

हरियाली का दर्शन दुर्लभ,
'कोयलिया की कूक नदारद।'
घर–घर जले गैस के चूल्हे,
चिमनी वाली फूंक नदारद।।

मिक्सी, लोहे की अलमारी,
सिलबट्टा, संदूक नदारद।
'मोबाइल सबके हाथों में,'
'विरह, मिलन की हूक नदारद।।'

बाग–बगीचे खेत बन गए,
जामुन, बरगद, रेड़ नदारद।
सेब, संतरा, चीकू बिकते
गूलर, पाकड़ पेड़ नदारद।।

ट्रैक्टर से हो रही जुताई,
जोत–जात में मेड़ नदारद।
'रेडीमेड बिक रहा ब्लैंकेट,'
'पालों के घर भेड़ नदारद।।

लोग बढ़ गए, बढ़ा अतिक्रमण,
जुगनू, जंगल, झाड़ नदारद।
कमरे बिजली से रोशन हैं,
ताखा, दियना, टांड़ नदारद।।

चावल पकने लगा कुकर में,
'बटलोई का मांड़ नदारद।'
कौन चबाए चना–चबेना,
भड़भूजे का भाड़ नदारद।।

पक्के ईंटों वाले घर हैं,
छप्पर और खपरैल नदारद।
ट्रैक्टर से हो रही जुताई,
'दरवाजे से बैल नदारद।।'

बिछे खड़ंजे गली–गली में,
'धूल धूसरित गैल नदारद।'
चारे में भी मिला केमिकल,
गोबर से गुबरैल नदारद।।

शर्ट–पैंट का फैशन आया,
धोती और लंगोट नदारद।
खुले–खुले परिधान आ गए,
बंद गले का कोट नदारद।।
'आँचल और दुपट्टे गायब,'
'घूंघट वाली ओट नदारद।'
महंगाई का वह आलम है,
एक–पांच के नोट नदारद।।

लोकतंत्र अब भीड़तंत्र है,
जनता की पहचान नदारद।
कुर्सी पाना राजनीति है,
नेता से ईमान नदारद।।
'गूगल विद्यादान कर रहा,'
'गुरुओं का सम्मान नदारद।'

पिंकी
कनिष्ठ सहायक, बठिंडा यूनिट

बेटी

कलियों को खिल जाने दो,
मीठी खुशबू फैलाने दो।
बंद करो उनकी हत्या,
अब जीवन ज्योत जलाने दो।।

कलियाँ जो तोड़ी तुमने
तो फूल कहाँ से लाओगे।
बेटी की हत्या करके तुम
बहु कहाँ से लाओगे।।

माँ धरती पर आने दो,
उनको भी लहराने दो।
बंद करो उनकी हत्या,
अब जीवन ज्योत जलाने दो।।

माँ दुर्गा की पूजा करके,
भक्त बड़े कहलाते हो।
कहाँ गयी वह भक्ति,
जो बेटी को मार गिराते हैं।।

लक्ष्मी को जीवन पाने दो,
घर आँगन दमकाने दो।
बंद करो उनकी हत्या
अब जीवन ज्योत जलाने दो ।।

बंद करो उनकी हत्या
अब जीवन ज्योत जलाने दो।
अब जीवन ज्योत जलाने दो।।

नारी शक्ति

नारी एक ऐसी चीज है, जो अन्दर से रोती है, बाहर से हँसती है।
बार-बार जूड़े से बिखरे बालों को कसती है।
शादी होती है उसकी या वो बिक जाती है, शौक, सहित आजादी, मायके में छूट जाती हैं
फटी हुई एड़ियों को साड़ी से ढकती है। खुद से ज्यादा वो दूसरों का ख्याल रखती है
सब उस पर अधिकार जमाते, वो सबसे डरती है।
क्योंकि बिकी हुई औरत बगावत नहीं करती है।
शादी होकर लड़की, जब ससुराल में जाती है, भूलकर मायका, घर अपना बसाती है,
घर आँगन खुशियों से भर जाती है। घर में सबको खाना खिलाकर फिर खुद वो खाती है।
जो घर संभाले तो उसकी जिंदगी सम्भल जाती है।
लड़की शादी के बाद कितनी बदल जाती है, गले में गुलामी का मंगलसूत्र लटक जाता है,
सिर से उसका पल्लू गिरे तो सारे खटक जाता है। अक्सर वो ससुराल की बदहाली में सड़ती है,
क्योंकि बिकी हुई औरत बगावत नहीं करती है।
आखिर क्यों बिक जाती है, औरत इस समाज में
क्यों डर के बोलती, गुलामी की आवाज़ में, गुलामी में जागती है, गुलामी में सोती है।
दहेज की वजह से हत्याएँ जिनकी होती हैं, जीना उसका चार दीवारों में, उसी में मरती है।
क्योंकि बिकी हुई औरत बगावत नहीं करती है।
जिस दिन सीख जायेगी वो हक की आवाज उठाना,
उस दिन मिल जायेगा उसे सपनों का ठिकाना।
खुद बदलो समाज बदलेगा, वो दिन भी आएगा,
जब पूरा ससुराल तुम्हारे साथ बैठकर खायेगा।
लेकिन आज़ादी का मतलब भी तुम भूल मत जाना, आज़ादी समानता है ना की शासन चलाना।
असमानता के चुंगल में नारी जो फँस जाती है। तानाशा का शासन वो घर में चलाती हैं।
समानता से खाओ, समानता से पियो, समानता से रहो, समानता से जियो।
असमानता बात घरों की, एक पहचान होती है, या तो पुरुष प्रधान होता है, या महिला प्रधान होती है।
रूढिवादी घर की नारी आज भी गुलाम है। दिन भर की तरह पड़ता उस पे काम है।
दुःखों के पहाड़ से वो झरने की तरह झरती है
क्योंकि बिकी हुई औरत बगावत नहीं करती है।
क्योंकि बिकी हुई औरत बगावत नहीं करती है।
एक नयी सोज, एक नयी पहल, नारी का करो सम्मान।

प्रियंका गांधी
अधिकारी (लेखा), निगमित कार्यालय

कुछ शब्द पिता के नाम...

माँ रोती है, बाप नहीं रो सकता,
खुद का पिता मर जाये फ़िर
भी नहीं रो सकता,
क्योंकि छोटे भाईयों को संभालना है,

माँ की मृत्यु हो जाये भी वह
नहीं रोता क्योंकि बहनों को सहारा देना होता है,

पत्नी हमेशा के लिये साथ छोड़ जाये
फ़िर भीनहीं रो सकता,
क्योंकि बच्चों को सांत्वना देनी होती है ।

देवकी–यशोदा की तारीफ़ करनी चाहिए,
लेकिन बाढ़ में सिर पर टोकरा उठाये वासुदेव को
नहीं भूलना चाहिये...

राम भले ही कौशल्या के पुत्र हों
लेकिन उनके वियोग में तड़प कर
जान देने वाले दशरथ ही थे।

पिता की एड़ी घिसी हुई चप्पल देखकर
उनका प्रेम समझ मे आता है,

उनकी छेदों वाली बनियान देखकर
हमें महसूस होता है कि
हमारे हिस्से के भाग्य के छेद उन्होंने ले लिये हैं...

लड़की को गाऊन ला देंगे,
बेटे को ट्रैक सूट ला देंगे,
लेकिन खुद पुरानी पैंट पहनते रहेंगे।

बेटा कटिंग पर पचास रुपये खर्च कर डालता है
और बेटी ब्यूटी पार्लर में,
लेकिन दाढ़ी की क्रीम खत्म होने पर
एकाध बार नहाने के साबुन से ही
दाढी बनाने वाला पिता बहुतों ने देखा होगा...

बाप बीमार नहीं पडता, बीमार हो भी जाये तो
तुरन्त अस्पताल नहीं जाते,

डॉक्टर ने एकाध महीने का आराम बता दिया तो
उसके माथे की सिलवटें गहरी हो जाती हैं,

क्योंकि लड़की की शादी करनी है,
बेटे की शिक्षा अभी अधूरी है...

आय ना होने के बावजूद बेटे–बेटी को
मेडिकल/इंजीनियरिंग में प्रवेश करवाता है..

कैसे भी 'एड्जस्ट' करके बेटे को हर महीने पैसे
भिजवाता है

(वही बेटा पैसा आने पर दोस्तों को पार्टी देता है)

किसी भी परीक्षा के परिणाम
आने पर माँ हमें प्रिय लगती है,
क्योंकि वह तारीफ़ करती है, पुचकारती है,
हमारा गुणगान करती है,

लेकिन चुपचाप जाकर
मिठाई का पैकेट लाने वाला पिता
अक्सर बैकग्राऊँड में चला जाता है...

पहली–पहली बार माँ बनने पर
स्त्री की खूब मिजाजपुर्सी होती है,
खातिरदारी की जाती है
(स्वाभाविक भी है..आखिर उसने कष्ट उठाये हैं)

लेकिन अस्पताल के बरामदे में बेचैनी से घूमने वाला,
ब्लड ग्रुप की मैचिंग के लिये अस्वस्थ,
दवाईयों के लिये भागदौड करने वाले
बेचारे बाप को सभी नजरअंदाज कर देते हैं...

ठोकर लगे या हल्का सा जलने पर
'ओ..माँ' शब्द ही बाहर निकलता है,
लेकिन बिलकुल पास से एक ट्रक गुजर जाये
तो 'बाप..रे' ही मुँह से निकलता है।

'दुनियाँ के हर पिताजी को समर्पित...'

देवी प्रसाद मिश्र
उप निदेशक (राजभाषा), उर्वरक विभाग, रसायन और उर्वरक मंत्रालय

नारी महान

नारी तुम नर की जननी ही नहीं, पथप्रदर्शक हो।
जीवन भर नर की संरक्षक, प्रतिपालक, उद्धारक हो।
नारी तुम न केवल नर से मात्राओं में भारी हो,
आजीवन नर तुम्हारा आभारी है।
तुम नर का जीवन हो, उसके जीवन की संजीवनी हो।
प्रतिपल आजीवन नर की कवच और आभूषण हो।
माँ रूप मे पालती-पोषती, निष्काम उसे दुलारती हो।
ककहरा सिखाती, डॉक्टर, इंजीनियर,
आई.ए.एस. बनने का ख़्वाब दिखाती हो।
नित-नित मानवीय मूल्यों का पाठ उसे पढ़ाती हो।
उसके ख्वाबों की पूर्ति हेतु अहर्निश अनवरत अथक परिश्रम
करती हो।
सुशिक्षित, संस्कारी कन्या खोज
उसे वैवाहिक जीवन में बांधती हो।
स्वरूप बदल भार्या रुप में तुम नर के जीवन में आती हो।
प्रेमपाश में बांध उससे नाना कौतुक करवाती हो।
मात-पिता सेवा, बाल-गोपाल चर्या का
सामाजिक बोध कराती हो।
नित नव-नव सामाजिक मूल्यों का अभिनव ज्ञान सिखाती हो।
जीवन के संघर्ष-चक्र में अडिग रह उसकी राह संवारती हो।
दुर्गम, दुरुह संघर्ष-पथ पर उसके साथ साथ
हिमालय अटल खड़ी दिखती हो।
जीवन के सुख- दुख में प्रतिक्षण
उसकी छाया बन विचरण करती हो।
दुस्तर से दुस्तर दुर्गम जीवन पथ पर
अविरल कलकल बहती हो।
न हारती हो न थकती हो नर को
प्रतिपल ऊर्जस्वित करती रहती हो।
सर्वस्व न्योछावर कर अपना,
नर को आजीवन आनंदित करती हो।
बड़े-बड़े कष्टों, अपमानों को नर के ही खातिर सह लेती हो।
अपने अरमानों को दबा जमीं में नर हेतु
अट्टालिकाएं बनाती हो।
उसके अरमानों, आकांक्षाओं में ही अपना निष्पाद्य तलाशती हो।
अपनी हर आकांक्षा-महत्वाकांक्षा का संधान नर के कंधों के तूणीर
से करती हो।
करने में सब कुछ सक्षम हो,
नर से सौ गुना बलशाली हो गुण शाली हो।
पर बार-बार सारी सफलताओं का सेहरा नर के सिर पर लहराती हो।
भगिनी, दुहिता दो और रूप में तुम उसका हित चिंतन करती हो।
भगिनी बन उसके शौर्य एवं पुरुषार्थ का नित नव परिष्कार करती हो।
दुहिता रूप में आकर तुम दादी मां का भाव दिखाती हो।
उसके भोजन और पहनावे का प्रतिपल निगरानी रखती हो।
पिता रूपी नर को बहुविध मानवजीवन के दायित्वों,
एहसासों का बोध कराती हो।
डोली में बैठ निष्ठुर, कर्कश, पाषाण हृदय पिता को
अविचल-अविकल कर देती हो।
चट्टान सदृश अडिग कठोर अनुशासन वाले बापू की
निष्ठुर आंखों को छलका देती हो।
नारी तुम्हारे किस-किस रूप का करूण वर्णन,
हर रूप में तुम नर के लिए वरदान हो।
तुम नर का संबल हो, स्पंदन हो,
नित नव अभिलाषाओं का चिंतन हो।
तेरे बिना नर, नर नहीं, यथा पृथ्वी पर पशु समान है।
तुम्हारे बिना नर का जीवन निष्फल ही नहीं, निस्सार है।
जिस नर के जीवन में तुम नहीं वह बनता नहीं नेक इंसान है।
नारी तुम्हारा हर रूप नर का पथप्रदर्शक,
मार्गदर्शक, संचालक है।
नर की हर इच्छा अभिलाषाओ की तुम दिग्दर्शक हो।
तुम चिर-चिरंतन से नर का सर्जक हो,आकर्षण हो।
नारी तुम नर की जननी ही नहीं, पथप्रदर्शक हो।
जीवन भर नर की संरक्षक, प्रतिपालक, उद्धारक हो।
नारी तुम महान हो, नारी तुम महान हो।
'जय भारत-जय भारती'

निगमित कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार कार्यालय में दिनांक 01 सितम्बर, 2020 से 15 सितम्बर, 2020 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। डॉ0 एस.पी. मोहन्ती, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय एवं निदेशक (वित्त) महोदय द्वारा दिनांक 01 सितम्बर, 2020 को पखवाड़े का विधिवत् उद्घाटन किया गया।

इस अवसर पर अधिकारी (राजभाषा) ने कार्यालय में हिन्दी कार्यान्वयन के लिए किए गए प्रयासों/उपलब्धियों तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वर्ष 2020–21 के वार्षिक कार्यक्रम की सभी मदों पर निर्धारित लक्ष्यों के बारे में जानकारी दी। राजभाषा विभाग द्वारा दिए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों तथा हिन्दी में कंप्यूटरों पर कार्य करने के लिए उपलब्ध सॉफ्टवेयरों की जानकारी दी। इसके पश्चात् कंपनी के प्रधान कार्यालय तथा सभी यूनिटों में हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि करने हेतु उपलब्ध कराई गई सुविधाओं एवं उनके प्रयोग से राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में हो रही वृद्धि के बारे में बताया।

महाप्रबन्धक (विपणन) महोदय ने इस अवसर पर अपील जारी की तथा सभी कार्मिकों को अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने के साथ–साथ इस पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक कार्मिकों को भाग लेने के लिए प्रेरित किया और पखवाड़े की सफलता के लिए शुभकामनाएं दी।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी मुहावरे एवं लोकोक्तियां प्रतियोगिता, हिन्दी कविता/नारा लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी ई–मेल लेखन प्रतियोगिता तथा प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त कार्मिकों को दिनांक 09.09.2020 को हिन्दी टंकण अभ्यास भी करवाया गया।

उपरोक्त प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त इस वर्ष कार्मिकों के बच्चों के लिए भी ऑनलाइन माध्यम से हिन्दी गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागी बच्चों ने पूर्ण उत्साह से भाग लिया।

हिन्दी पखवाड़े का समापन दिनांक 15.09.2020 को किया गया। हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय, निदेशक (वित्त) महोदय एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा सभी कार्मिक उपस्थित थे। अधिकारी (राजभाषा) द्वारा हिन्दी पखवाड़े की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

इसके पश्चात हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त तथा मूल रूप से हिन्दी में टिप्पण एवं मसौदा लेखन करने वाले सभी कार्मिकों को अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय, निदेशक (वित्त) महोदय के कर–कमलों से वस्तु रूप में पुरस्कार/ प्रोत्साहन वितरित किए गए।

इसके पश्चात् अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय का संभाषण हुआ। महोदय ने अपने संभाषण में कहा कि अधिकारी (राजभाषा) द्वारा पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की रिपोर्ट से ज्ञात हुआ है कि इस पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों में प्रतिभागिता कुल 171 रही। यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि हमारी कंपनी को इस वर्ष भी राजभाषा कार्यान्वयन के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से गौरवमयी कीर्ति पुरस्कार (तृतीय) तथा नराकास (उपक्रम–2), दिल्ली से पुरस्कार प्राप्त हुआ है, यह हम सभी के लिए एक गौरवपूर्ण उपलब्धि हैं। हिल के सभी कर्मचारी इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

सभी कार्मिकों ने इस पखवाड़े के दौरान आयोजित सभी कार्यक्रमों में उत्साह पूर्वक भाग लिया है। हमारे प्रधान कार्यालय में ही नहीं अपितु अन्य यूनिटें जो "ख" तथा "ग" क्षेत्र में स्थित हैं, में भी कार्मिकों को हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान है। केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद तथा विभिन्न नराकासों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में हमारे संस्थान के कार्मिकों को सदैव पुरस्कार मिलते रहे हैं, यह इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी में कार्य करने में सभी रुचि लेते हैं। हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों का पालन करते हुए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का पूरा प्रयास करें, क्योंकि यह हमारा नैतिक तथा संवैधानिक दायित्व है। कंपनी राजभाषा से संबंधित नियम, अधिनियमों/लक्ष्यों के प्रति पूर्णतः वचनबद्ध है तथा उनके अनुपालन हेतु सतत प्रयासरत है। अध्यक्ष महोदय ने पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई सभी प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त सभी कार्मिकों को बधाई दी।

इसके पश्चात् निदेशक (वित्त) महोदय ने अपने संभाषण में सभी उपस्थित कार्मिकों को अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए कहा तथा पुरस्कार प्राप्त सभी विजेताओं को बधाई दी। उप प्रबन्धक (सिविल) के धन्यवाद के साथ हिन्दी पखवाड़े का समापन हुआ।

उद्योगमंडल यूनिट में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2020 का उद्घाटन 14.09.2020 को यूनिट प्रमुख प्रमोद डी संकपाल द्वारा किया गया। तत्पश्चात् सहायक प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती विजयलक्ष्मी एस द्वारा स्वागत एवं धन्यवाद दिया गया। श्रीमती रेनी मात्यू सहायक प्रबंधक(मानव संसाधन एवं प्रशासन) ने आशंसा भाषण दिया।

इस वर्ष कोविड 19 के नियमों का अनुपालन करते हुए विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसेः– हिंदी निबंध (15.09.20), कविता रचना (16.09.20), घोषवाक्य रचना (17.09.20) एवं टाईपिंग(18.9.20) का आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किया गया। कंप्यूटर में अनुवाद कार्य करने के संबंध में राजभाषा अनुभाग द्वारा 21 से 25 तक अभिज्ञा कार्यक्रम चलाए गए और कर्मचारियों को अपने–अपने कार्यालयीन कार्यों को हिंदी में करने की प्रेरणा दी गई।

हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह का आयोजन 28.09.2020 को यूनिट प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया। तत्पश्चात् सहायक प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती विजयलक्ष्मी एस का स्वागत भाषण से समारोह आरंभ हुआ। हिंदी पखवाड़ें के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कार वितरण किए गए। इसके साथ–साथ मूल रूप में हिंदी में कार्य करने वाले कर्मचारियों को भी नक़द पुरस्कार वितरित किए गए। पुरस्कार योजना के अन्तर्गत हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाली कार्मिक श्रीमती एम श्रीकला, वित्त विभाग को यूनिट प्रमुख की ओर से प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। वर्ष 2019–20 के दौरान हिंदी कार्यशालाओं में प्रशिक्षित कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा देने और हिंदी के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से मलयालम–हिंदी शब्दकोश का वितरण किया गया। कोविड 19 के नियमों के अनुसरण में यूनिट प्रमुख की अध्यक्षता में संपन्न हुई बैठक में कर्मचारी और अधिकारियों ने भाग लिया। सहायक प्रबंधक (राजभाषा) के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समारोह का समापन हुआ।

हिन्दी पखवाड़ा 2020 के समापन समारोह में उद्योगमंडल यूनिट के वित्त विभाग को राजभाषा हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी संकपाल द्वारा रॉलिंग ट्रॉफी प्रदान की।

उद्योगमंडल यूनिट में हिन्दी पखवाड़ा 2020 के समापन समारोह के दौरान कार्मिकों को संबोधित एवं राजभाषा हिन्दी के संवर्धन के प्रति प्रेरित करते यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी. संकपाल

हिल (इंडिया लिमिटेड), उद्योगमंडल यूनिट में दिनांक 28.09.2020 को हिंदी पखवाड़ा समारोह 2020 के समापन समारोह के साथ–साथ कोविड–19 के लिए जारी दिशा–निर्देशों को ध्यान में रखते हुए एक राजभाषा प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया था। राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी संकपाल के द्वारा किया गया, तत्पश्चात् यूनिट के अधिकारी एवं कर्मचारीगण प्रदर्शनी देखने के लिए पहुंचे।

उद्योगमंडल यूनिट में हिन्दी पखवाड़ा 2020 के दौरान आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन करते यूनिट प्रमुख

उक्त राजभाषा प्रदर्शनी में यूनिट की राजभाषा के क्षेत्र में प्राप्त निम्नलिखित उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया:–

- इस प्रदर्शनी में उद्योगमंडल को नराकास, कोच्चि से निरंतर 16 वर्षों से राजभाषा के उत्तम निष्पादन के लिए प्राप्त प्रमाण पत्र सहित ट्रॉफियों को प्रदर्शित करने के साथ–साथ वर्ष 2008–2009 में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से राजभाषा के उत्तम निष्पादन के लिए प्राप्त तृतीय पुरस्कार भी प्रदर्शित किया गया।
- यूनिट के कर्मचारियों को केन्द्रीय हिंदी सचिवालय परिषद् से प्राप्त पुरस्कारों का प्रदर्शन भी किया गया।
- विभिन्न बैनरों का प्रदर्शन और गत वर्षों में आयोजित हिंदी पखवाड़ा आयोजन के छायाचित्रों को भी प्रदर्शित किया गया।

हिंदी पखवाड़ा, 2020 समापन
निगमित

एवं पुरस्कार वितरण समारोह
कार्यालय

स्वच्छता पखवाड़ा, 2020 के दौरान आयोजित गतिविधियां

केरल में स्थित कंपनी की उद्योगमंडल यूनिट के कार्मिकों ने स्वच्छता पखवाड़ा, 2020 के दौरान स्वच्छता अभ्यिान के अंतर्गत यूनिट परिसर को स्वच्छ बनाने में अपना सहयोग दिया।

स्वच्छता पखवाड़ा 2020 के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में पुरस्कार वितरण करते हुए यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी संकपाल।

हिल में आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा

हिल (इंडिया) लिमिटेड के निगमित कार्यालय में स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान कार्मिकों को स्वच्छता शपथ दिलाते अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री एस.पी. मोहन्ती।

हिल के नवीन उत्पाद का प्रमोचन

(इंडिया) लिमिटेड द्वारा निर्मित हैंड सैनिटाइज़र ''रक्षक'' एवं ''रक्षक +'' का प्रमोचन करते सचिव, रसायन एवं पेट्रो रसायन श्री राजेश कुमार चतुर्वेदी।

हिल (इंडिया) लिमिटेड में स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020

हिल (इंडिया) लिमिटेड के गुरूग्राम स्थित अनुसंधान एवं विकास केन्द्र में 74वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर अध्यक्षा एवं प्रबन्ध निदेशक श्री एस.पी. मोहन्ती द्वारा ध्वाजारोहण किया गया।

उद्योगमंडल यूनिट

यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी. संकपाल स्वतंत्र दिवस समारोह पर ध्वजारोहण करते हुए।

स्वतंत्रता दिवस समारोह पर यूनिट के कर्मचारियों को संबोधित करते हुए यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी. संकपाल

रसायनी यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की महाराष्ट्र स्थित रसायनी यूनिट में 74वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्री आर. हमिरानी, प्रभारी यूनिट प्रमुख द्वारा सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया गया।

बठिंडा यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की पंजाब स्थित बठिंडा यूनिट में 74वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया गया।

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

हिल (इंडिया) लिमिटेड की महाराष्ट्र स्थित रसायनी यूनिट में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़ें के उद्घाटन समारोह पर उपस्थित यूनिट के कार्मिकगण।

हिल (इंडिया) लिमिटेड में सद्भावना दिवस 2020 का आयोजन

कंपनी की केरल स्थित उद्योगमंडल यूनिट में दिनांक 20.08.2020 को सद्भावना दिवस 2020 के अवसर पर यूनिट के कार्मिकों को श्री प्रमोद डी. संकपाल, यूनिट प्रमुख द्वारा शपथ दिलाई गई।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की झलकियां

''अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'' दिनांक 22.06.2020 पर योगाभ्यास करते हिल (इंडिया) लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री एस.पी. मोहन्ती।

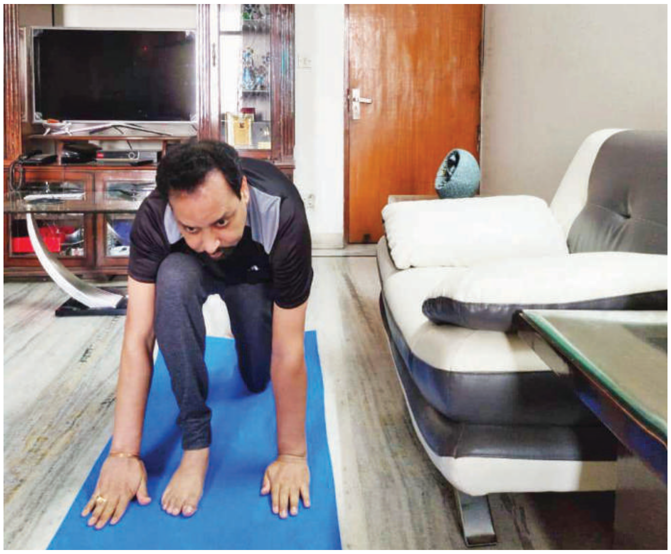

भारत के विभिन्न भागों में कार्यरत हिल (इंडिया) लिमिटेड के कर्मचारी ''अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'' के अवसर पर योगाभ्यास करते हुए।

सेवानिवृत्ति/स्वेच्छा सेवानिवृत्ति एवं त्याग पत्र के अवसर पर हिल (इंडिया) लिमिटेड परिवार अपने निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है।
(दिनांक अप्रैल, 2020 से सितंबर, 2020 तक सेवानिवृत्त/स्वेच्छा सेवानिवृत्त /त्याग पत्र अधिकारी एवं कर्मचारी)

क्र.सं.	नाम	पदनाम	तैनाती स्थान
1.	श्री धर्मवीर सिंह	चपरासी	निगमित कार्यालय
2.	श्रीमती शान्ति ध्रुव	उप प्रबन्धक (राजभाषा)	निगमित कार्यालय
3.	श्री अंजन बनर्जी	निदेशक (वित्त)	निगमित कार्यालय
4.	श्री सतीश कुमार	फिटर ग्रेड – I (विशेष श्रेणी)	बठिंडा यूनिट
5.	श्री सुरेन्द्र कुमार	इलेक्ट्रीशियन ग्रेड– I	बठिंडा यूनिट
6.	श्री सुरेश कुमार गुप्ता	उप प्रबंधक (उत्पादन)	बठिंडा यूनिट
7.	श्री ओम प्रकाश	मशीनिष्ट ग्रेड – III	बठिंडा यूनिट
8.	श्री राजेन्द्र कुमार	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	बठिंडा यूनिट
9.	श्री देवेन्द्र कुमार चुग	उप प्रबंधक (उत्पादन)	बठिंडा यूनिट
10.	श्री ए. सत्यनारायण	उप वाणिज्य प्रबंधक	बठिंडा यूनिट
11.	श्री अशोक भागूराम गायकवाड़	एफ.ए.डी.	रसायनी यूनिट
12.	श्री नारायण लक्ष्मण राऊत	फिटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
13.	श्री अंकुश सीताराम झिंगे	पर्यवेक्षक (बॉयलर)	रसायनी यूनिट
14.	श्री बलराम शंकर राऊत	पर्यवेक्षक (उत्पादन)	रसायनी यूनिट
15.	श्री जनार्धन रामू केदारी	वरिष्ठ सहायक	रसायनी यूनिट
16.	श्री विष्णु गौरू जांभले	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
25.	श्री मनोहर मोतिराम माली	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
26.	श्री दिनकर दत्तू पावर	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
27.	श्री जनार्दन काशीनाथ मते	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
28.	श्री वासुदेव कृष्णा पाटील	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
29.	श्री एकनाथ नारायण माली	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
30.	श्री नारायण दामोदर ठाकुर	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
31.	श्री अनंत बेंदु खाने	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
32.	श्री शिवाजी शंकर हनबर	फोरमैन फिटर	रसायनी यूनिट
33.	श्री नारायण कमलाकर माली	फोरमैन फिटर	रसायनी यूनिट
34.	श्री पांडुरंग काशीनाथ माली	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
35.	श्री वासुदेव बालु जांभले	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
36.	श्री कृष्ण महादेव पाटील	वरिष्ठ माली	रसायनी यूनिट
37.	श्री विठ्ठल महादु भोईर	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
38.	श्री नारायण काशीनाथ म्हात्रे	चालक	रसायनी यूनिट
39.	श्री शंकर दामु जांभले	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
40.	श्री एच.एल. म्हसकर	ऑपरेटर श्रेणी – III	रसायनी यूनिट

41.	श्री गजानन गोविंद कोकबनकर	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
42.	श्री रमेश बाबू पाटील	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
43.	श्री सदाशिव काशीनाथ पाटील	ऑपरेटर विशेष श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
44.	श्री मोतिराम गोपिनाथ जितेकर	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
45.	श्री कमलाकर बुधाजी कोली	ऑपरेटर श्रेणी – II	रसायनी यूनिट
46.	श्री अनंत धर्मा खाणे	ऑपरेटर श्रेणी – II	रसायनी यूनिट
47.	श्री भोलेनाथ दत्तात्रेय कोली	फिटर–श्रेणी – II	रसायनी यूनिट
48.	श्री किशोर विठ्ठल मोहोकर	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
49.	श्री पुंडलिक भीमराव चव्हाण	अधिकारी (उत्पादन)	रसायनी यूनिट
50.	श्री हिरालाल सावलाराम ठाकुर	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
51.	श्री कृष्ण बामा पाटील	केमिकल ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
52.	श्री हिरामन कोंडिराम गायवाड	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
53.	श्री वसंत देवराम वाशिकर	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
54.	श्री रघुनाथ पदू दीघे	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
55.	श्री काशीनाथ मारूती जितेकर	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
56.	श्री जनार्दन हरी भोईर	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
57.	श्री बबन कान्हा घोपकर	वरिष्ठ विशेष सहायक	रसायनी यूनिट
58.	श्री राजेंद्र धोंडू सोनवणे	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
59.	श्री सीताराम हालु मुंढे	फिटर श्रेणी – II	रसायनी यूनिट
60.	श्री राम नारायण घरत	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
61.	श्री पांडुरंग शंभु कडु	फिटर श्रेणी – II	रसायनी यूनिट
62.	श्री गणेश श्रीपत पागड़े	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
63.	श्री जनार्दन हाशा पाटील	फिटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
64.	श्री वसंत रघुनाथ मुंगसे	केनर	रसायनी यूनिट
65.	श्री दत्तात्रेय सावलाराम खाणे	शिफ्ट पर्यवेक्षक (उत्पादन)	रसायनी यूनिट
66.	श्री प्रदीप गणपत दलाल	पर्यवेक्षक (अभियांत्रिक सेवाएँ)	रसायनी यूनिट
67.	श्री कृष्ण बाबू भंडारकर	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
68.	श्री तुलसीराम सखाराम पाटील	केमिकल ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
69.	श्री विजय शांताराम पाटील	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
70.	श्री पुरूषोत्तम हरिभाऊ देशमुख	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
71.	श्री प्रशांत वसंत बहाडकर	विशेष श्रेंणी वरिष्ठ सहायक	रसायनी यूनिट
72.	श्री प्रभाकर शंकर पाटील	इलेक्ट्रिशियन श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
73.	श्री मधुकर गोविंद उरणकर	फिटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
74.	श्री शशिकांत रामचंद्र मोहोकर	फिटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
75.	श्री दत्तात्रेय राम लखाम्बले	इलेक्ट्रिशियन श्रेणी – I	रसायनी यूनिट

76.	श्री बालु नारायण शिलिमकर	फिटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
77.	श्री भगवान सीताराम पाड़गे	इलेक्ट्रिशियन श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
78.	श्री सरिता यशंवत बर्वे	विशेष श्रेणी वरिठ सहायक	रसायनी यूनिट
79.	श्री प्राची शंतनु पटवर्धन	सहायक प्रबंधक (खरीद)	रसायनी यूनिट
80.	श्री विजय नारायण पाटील	इन्स्टुमेंट मैकेनिक श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
81.	श्री अनिल राजाराम नागे	फिटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
82.	श्री सुधीर रामकृष्णा काने	केमिकल ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
83.	श्री कृष्णा धर्माजी म्हात्रे	फिटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
84.	श्री जनार्दन मारूति तांडेल	रिगर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
85.	श्री अरविंद काशीनाथ खोत	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
86.	श्री यशवंत बालम शेलार	फोरमैन फिटर	रसायनी यूनिट
87.	श्रीमती रीनाकुर्यन	अधिकारी (लेखा)	उद्योगमंडल यूनिट
88.	श्री तोमस चेरियान	अनुरक्षण पर्यवेक्षक	उद्योगमंडल यूनिट
89.	श्री जोसफ बारिड	उप प्रबंधक (उत्पादन)	उद्योगमंडल यूनिट
90.	श्री अनिल कुमार एम के	सहायक प्रबंधक (वित्त)	उद्योगमंडल यूनिट
91.	श्री अनिल कुमार पी एस	लीड्समैन (ऑपरेशन)	उद्योगमंडल यूनिट
92.	श्री मोहम्मद लाल	इंजीनियरी प्रबंधक (ई एवं आई)	उद्योगमंडल यूनिट
93.	श्री भारत भगत	सहा. विपणन प्रबन्धक (बीज उत्पादों)	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (अहमदाबाद)
94.	श्री एम.पी. होति	क्षेत्रीय विपणन प्रबन्धक	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (अहमदाबाद)
95.	श्री सचिन राम चन्द्र बेलेकर	विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (अहमदाबाद)
96.	श्री घनश्याम सोनी	सहायक विपणन प्रबन्धक	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (अहमदाबाद)
97.	श्री वी.के. सिंह	उप विपणन प्रबन्धक	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (उत्तर)

हिल (इंडिया) लिमिटेड परिवार में शामिल होने पर निम्नलिखित नए कार्मिकों का स्वागत है।

क्र.सं0	नाम	पदनाम	तैनाती स्थान
1.	श्री अमित सिंह बिष्ट	अधिकारी (वाणिज्य)	निगमित कार्यालय
2.	श्री राजेश कुमार चौबे	महाप्रबंधक (वित्त)	निगमित कार्यालय
3.	श्री कुंदन पाटील	अधिकारी (लेखा)	रसायनी यूनिट
4.	श्री राज कुमार शर्मा	अधिकारी (लेखा)	रसायनी यूनिट
5.	श्री पार्थ सारथी माजी	इंजीनियर (इलैक्ट्रिकल)	रसायनी यूनिट
6.	श्री शशिकांत कुमार	विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (अहमदाबाद)
7.	श्री कसुंद कौशिक विठ्ठल भाई	विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (अहमदाबाद)
8.	श्री चंद्रकांत सुधाकर मिस्त्री	विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (अहमदाबाद)
9.	श्री विकास यादव	उप प्रबंधक विपणन	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (अहमदाबाद)
10.	श्री वी. हुसैन	विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय ब्रिक्री कार्यालय (हैदराबाद)

प्रशासनिक एवं संक्षिप्त आदेशात्मक टिप्पणियाँ

Accepted for payment	भुगतान के लिए स्वीकृत।
Acknowledgement is awaited	पावती की प्रतीक्षा है।
Action is underway	कार्रवाई की जारही है।
Action may be taken	तदनुसार कार्रवाई की जाए।
Back to work	काम पर लौटें।
Background of the case	मामले की पृष्ठभूमि।
Back ward reference	पुर्व संदर्भ।
Benefit of additional pension	अतिरिक्त पेंशन हितलाभ।
Case discussed	मामले पर चर्चा की गई।
Case disposed	मामला निपटाया गया।
Case referred	निर्दिष्ट मामला।
Cases of disposal	निपटान के लिए मामले।
Decision is awaited	निर्णय की प्रतीक्षा है।
Declared surplus stores	अधिशेष घोषित सामान।
Discharge certificate	सेवामुक्ति प्रमाणपत्र।
Discharge from service	सेवा से मुक्ति।
Eligible candidate	पात्र उम्मीदार।
Employee requests that	कर्मचारी ने अनुरोध किया है कि।
Empowered to sanction	मंजूरी देने का अधिकार है।
Errors in verification	सत्यापन में त्रुटिया।
For concurrence please	सहमति के लिए।
Fix a date for the meeting	बैठक की तारीख नियत की जाए।
Final concurrence is accorded	अंतिम सहमति दी जाती है।
Final settlement of accounts	अंतिम लेखा निपटारा।
Give details	ब्योरा दें।
Give top priority to this work	इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।
Governed by the rules	नियमों द्वारा शासित।
Halt station	हाल्ट स्टेशन, विराम स्टेशन।
Handwritten document	हस्तलिखित दस्तवेज।
Hard and fast rule	पक्का नियम।
Hold in abeyance	प्रास्थगित रखना।
In confirmation	की पुष्टि में।
In conformity with	के अनुरूप।
In connection with	के संबंध में।
In consequence of	के परिणमस्वरूप, के फलस्वरूप।
Just now	अभी तुरंत।
Keep in abeyance	प्रास्थगित रखना, मुल्तवी रखना।
Keep in touch	संपर्क में रहना, खबर रखना।
Keep pending	लंबित रखा जाए।
Keep with the file	फाइल के साथ रखिए।
Leave not due	अर्जनशोध्य छुट्टी।

Leave of absence	अनुपस्थिति की अनुमति।
Leave on half average pay	अर्ध–औसत वेतन छुट्टी।
Leave on average pay	औसत वेतन छुट्टी।
Matter has been examined	मामले की जांच कर ली गई है।
Matter is being scrutinized	मामले की संवीक्षा की जा रही है।
Matter of fact	तथ्य की बात, तथ्यतः।
Matter of procedure	प्रक्रिया का विषय।
Nothing against the rule	नियमों के विरूद्ध बिल्कुल।
Notice in writing	लिखित सूचना।
Notified for general	सार्वजनिक जानकारी के लिए अधिसूचित।
Notify the award	अवार्ड को अधिसूचित करना।
On temporary basis	अस्थायी आधार पर।
On the job training	अंतः कार्य प्रशिक्षण।
Operation of the rules	नियमों का प्रचलन।
Orders are solicited	कृपया आदेश दें।
Parliamentary committee	संसदीय समिति।
Passed for payment	भुगतान के लिए पारित किया।
Please call for the report	कृपया रिपोर्ट मंगाएँ।
Please expedite the return of this file	कृपया इस फाइल को शीघ्र लौटाएं।
Queued chat	क्रमबद्ध बातचीत।
Quick-closeout rates	शीघ्र समापन दरें।
Quotation quote	उद्धत, उद्धरण।
Quote the relevant portion	संबंधित अंश उद्धत करें।
Request for proposal	प्रस्ताव के लिए अनुरोध।
Required to be rectified	परिशोधन अपेक्षित है।
Retirement on medical grounds	चिकित्सीय आधार पर सेवा–निवृत्ति।
Revive of the case	मामले को फिर से उठाना।
Sanction hereby accorded to	इसके द्वारा मंजूरी दी जाती है।
Satisfactory case	संतोषजनक मामला।
Submitted for information	सूचनार्थ प्रस्तुत।
Submitted for perusal	अवलोकनार्थ प्रस्तुत।
To be thankful	कृतज्ञ होना।
To comply with	अनुपालन करना।
To put in abeyance	प्रास्थगित करना।
To the contrary	इसके विपरित, इसके प्रतिकूल।
Under reference	प्रसंगाधीन।
Under the auspices of	के तत्वाधान में।
Underdeveloped	अल्पविकसित।
Undergo training	प्रशिक्षण लेना।
Verification of particulars	विवरणर सतयापन, विशिष्टियों का सत्यापन।
Verification of service	सेवा का सत्यापन।
Vide linked case	संबद्ध मामला देखिए।
With immediate effect	तात्कालिक प्रभाव से।
With reference to	के संबंध में, के प्रसंग में।
Withholding of increment	वेतनवृद्धि रोकना।
Within zone of consideration	विचार–परिधि में।
Without prejudice	प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना।
Yearly clearance	वार्षिक निकासी।
You may take necessary action	आप आवश्यक कार्रवाई करें।
Your case would be taken up for consideration in due course	आपके मामले पर सम्यमक अनुक्रम में विचार किया जाएगा।
Your further remarks/ view on the above subject are awaited	उपयुक्त विषय पर आपकी आगे की टिप्पणी/ राय दृष्टिकोण की प्रतीक्षा है।

English	हिन्दी
	A
Affiliation	संबंधन
Affirmation	अभिपुष्टि
Affirmative	सकारात्मक
Allegiance	निष्ठा
Alliance	मैत्री
Appraiser	मूल्यनिरूपक
	B
Beneficial	हितकारी, लाभप्रद
Biennial report	द्विवार्षिक रिपोर्ट
Bifurcate	छो भागों में बांटना
Bilateral	द्विपक्षीय
Bequest	वसीयत
Break-up	व्योरा, अलग–अलग विवरण
	C
Calculation	परिकलन
Calculator	परिकलित्र
Chronic	जीर्व, पुराना, चिरकालिक
Chronology	कालक्रम
Camp	शिविर, कैंप
Campaign	अभियान
	D
Delay report	विलंब रिपोर्ट
Deferred	आस्थगित
Delay	विलंब
Diary register	डायरी रजिस्टर
Diary section	डायरी अनुभाग
Disband	तोड़ देना, भंग करना
Discard	टलग करना, हटा देना, निकाल देना
	E
Engage	काम पर लगाना,नियुक्त करना
Engagement	कार्यव्यस्तता,वचनबंध (विधि)
Estimation	प्राक्कलन
Evaluation	मुल्यांकन
Execute	निष्पादन करना
Expedite	शीघ्र कार्रवाई करना
	F
Financial deficit	वित्तीय घाटा
Financial gain	वित्तीय लाभ
Formal	औपचारिक
Formality	औपचारिकता
Field Review	क्षेत्र समीक्षा
Field survey	क्षेत्र सर्वेक्षण

	G
Grievance	कष्ट, शिकायत
Grievous	घोर, गंभीर
Gross total	सकल योग
Gross value	सकल मूल्य
Growth	संवृद्धि, वृद्धि
Growth rate	संवृद्धिदर, वृद्धिदर
	H
Higher authority	उच्चतर प्राधिकारी
Higher post	उच्चतर पद
Hindrance	बधा, अड़चन
Hire charges	भाड़ा
Hire-purchase	भाड़ा–खरीद
Hold back	रोकना
	I
Impartial judgement	निष्पक्ष निर्णय
Impartiality	निष्पक्षता
Intimation	सूचना ,प्रज्ञापन
Intimidation	अभित्रास, डराना–धमकाना
Irrevocable	अप्रतिसंहरणीय, अविकल्पी
Irrelevant	असंबद्ध, असंगत
	J
Job factors	कार्य कारक
Joining pay	कार्यग्रहण वेतन
Joining period	कार्यग्रहण अवधि
Joining report	कार्यग्रहण रिपोर्ट
Joining time	कार्यग्रहण अवधि
Justiciable	न्याय के विचार योग्य
	K
Key personnel	प्रधान कार्मिक, प्रमुख कार्यकर्ता
Key word	संकेत शब्द
Key-board	कुंजीपटल
Keypost	मुख्य मद
Kiln	भट्टा
Kin	स्वजन
	L
Ledger	खाता, खाता–बही
Leniency	नरमी, उदारता
Legalisation	वैधीकरण
Legality	वैधता
Literacy	साक्षरता
Literate	साक्षर
	M
Manufacturer	विनिर्माता

Manufacturing	विनिर्माण
Mediclaim	मेडिक्लेम
Merit	योग्यता, गुण
Meritorious	गुणवान, गुणी
Memoirs	संस्मरण
N	
Negotiation	वार्ता, परक्रामण
Negotiator	वार्ताकार
Net value	निवल मूल्य
Net worth	निवल परिसंपत्ति
Non-acceptance	अस्वीकृति
Non-consent	असहमति
O	
Office bearer	पदाधिकारी
Officialdom	अधिकारी वर्ग
Ommission	लोप, चूक
Onus	भार, दायित्व
Official version	सरकारी कथन, आधिकारिक कथन
Officialese	सरकारी तौर पर, आधिकारिक तौर पर
P	
Particular	विशेष
Particulars	ब्योरा, विवरण
Per annum	प्रतिवर्ष,वार्षिक, सालाना
Perennial	चिरस्थायी, बारहमासी
Pertinent	संगत, प्रासंगिक
Pioneer	अग्रणी
Q	
Qualitative technique	गुणात्मक तकनीक
Quick disposal	त्वरित निपटान
Quasi contract	अर्ध–संविदा, कल्प
Quorum	गणपूर्ति, कोरम
Quantum merit	जितना काम उतना दाम
Quantum of works	निर्माण–कार्य की प्रमात्रा
R	
Reactivation	पुनःसक्रियण
Ratification	अनुसमर्थन
Remission	परिहार, माफी
Readjustment	पुनः समायोजन
Rekless	लापरवाह, उतावला, अंधाधुंध
Recognizable	मान्यता योग्य, पहचानने योग्य
S	
Safety appliance	संरक्षा साधन
Sabotage	तोड़–फोड़, भितरघात
Speciality	विशिष्टता
Specific	विनिर्दिष्ट, विशिष्ट
Sanatorium	आरोग्यधाम
Scarcity	न्यूनता, कमी, अभाव, दुर्लभता
Scrutinize	संवीक्षण करना
T	
Tableau	झांकी
Tabulation	सारणीयन
Tactful	व्यवहारकुशल, चतुर
Technologist	प्रौद्योगिकीविद्
Technocracy	प्रौद्यागविद् तंत्र
Teleconferencing	दूर–संलाप
U	
Uncommitted	अप्रतिबद्ध
Uncorroborated	असंपुष्ट
Unprecedented	अभूतपूर्व
Unpredictable	अप्रत्याशित, अपूर्वानुमेय
Updation	अद्यतनीकरण
Upgradation	अन्नयन
V	
Verbal Statement	मौखिक
Verbatim	शब्दशः
Vetting	जांच, पुनरीक्षण
Vicinity	सामीप्य, निकटता
Vested interest	निहित हित, निहित स्वार्थ
Virus vaccine	विषाणु वैक्सीन
W	
Welfare activities	कल्याण गतिविधियां, कल्याण क्रियाकलाप
Withhold	रोक लेना, विधारित करना
Waiver	अधित्याग
Waiving	अधित्यजन
Waste disposal	अपशिष्ट व्ययन
Waste reduction	अपशिष्ट कमी
Y	
Year to year	वर्षानुवर्ष, वर्षानुवर्षी
Yearly	वार्षिक, सालाना
Z	
Zeal	जोश, उत्साह
Zenith	चरम सीमा, पराकाष्ठा
Zonal	आंचलिक
Zoning	आंचलों में बांटना, अंचलीकरण

आपकी पाती

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA

संख्या: भाविप्रा/उक्षेमु/राजभाषा/2019/25 दिनांक: 28 अक्टूबर, 2020

सेवा में,
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्र.)
हिल (इंडिया) लिमिटेड,
"पूर्व में हिंदुस्तान इन्सेक्टीसाईड्स लिमिटेड"
स्कोप कॉम्प्लेक्स, कोर-6, द्वितीय तल, 7,
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

विषय :- हिल (इंडिया) लिमिटेड की गृह पत्रिका 'रक्षक' का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय की छमाही गृह पत्रिका 'रक्षक' का अंक-8 प्राप्त हुआ है। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में ज्ञानवर्धक स्वास्थ्य संबंधी लेखों का संकलन किया गया है जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञान में वृद्धि करने वाले हैं। वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व कोविड-19 नामक महामारी के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है। ऐसे में आपकी पत्रिका में प्रकाशित 'कोविड-19 के विरुद्ध जंग', 'कोविड-19 वैश्विक महामारी से बचाव के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड द्वारा की जा रही पहलें' एवं 'कोरोना वायरस से जीवन शैली में आए सकारात्मक बदलाव' जैसे लेख जागरूकता उत्पन्न करते हैं। इस संबंध में कोविड-19 महामारी से बचाव के लिए आपके संगठन द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए आपको बहुत-बहुत बधाई। आशा है, भविष्य में भी आप इसी प्रकार के उपयोगी लेखों का संकलन कर ज्ञानवर्धन करवाते रहेंगे।

भवदीय,
28/10/2020
(सूर्यभान गौतम)
संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा)

क्षेत्रीय मुख्यालय, उत्तरी क्षेत्र, प्रचालन कार्यालय, गुरुग्राम रोड, नई दिल्ली–110037 दूरभाष - 25652447 फैक्स - 25656451
Regional Headquarters, Northern Region, Operational Offices, Gurugram Road, New Delhi-110037 Tele : 25652447 Fax : 25656451
हिन्दी पत्रों का स्वागत है।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
(भारत सरकार का उपक्रम)
क्षेत्रीय कार्यालय (उत्तर)
चौथी मंजिल, चौथा टॉवर, एनबीसीसी प्लाजा, पुष्प विहार, सैक्टर-5, साकेत, नई दिल्ली-110017
दूरभाष : 011-29565525 फैक्स : 011-29565616
ई-मेल : ronorth@vizagsteel.com

Rashtriya Ispat Nigam Limited
Visakhapatnam Steel Plant
(A Government of India Undertaking)
Regional Office (North)
4th Floor, 4th Tower, NBCC Plaza, Pushp Vihar, Sector-5, Saket, New Delhi-110017
Ph.: 011-29565525 Fax : 011-29565616
E-mail : ronorth@vizagsteel.com

आर आई एन एल/ क्षे का (उत्तर)/2020-21/ 114 दिनांक:28/10/2020

सेवा
श्री पी.सी.सिंह
महाप्रबंधक(मा.स.एवं प्र.)
हिल (इंडिया) लिमिटेड
भारत सरकार का उद्यम)
स्कोप काम्पलैक्स कोर-6 द्वितीय मंजिल-7
लोदी रोड नई दिल्ली-110003

विषय-हिल (इंडिया)लिमिटेड की गृह पत्रिका " रक्षक" का प्रेषण।

माननीय महोदय /महोदया
"हिल (इंडिया) लिमिटेड"द्वारा भेजी गई गृह पत्रिका " रक्षक" दिनांक 28/10/2020 को प्राप्त हुई इसके लिये आप को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका को हम तक पहुँचाने के लिये बहुत -बहुत धन्यवाद। मै आशा करता हु कि आपकी पत्रिका मे प्रकाशित "कविताएं ,लघु-कथा एवं राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ रोचक ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणास्पद हो और हमे पत्रिका नियमित रूप से प्राप्त होती रहे।
पत्रिका मे विभिन्न कार्यक्रमो की झलकियाँ कर्मिकों के उत्साह एंव रचनात्मक की परिचायक है। पत्रिका प्रकाशन से जुडे सभी कार्मिक धन्यवाद के पात्र है।
आशा है आपकी पत्रिका इसी प्रकार ज्ञान मनोरंजन एवं रचनात्मकता को मंच प्रदान करती रहेगी पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं लोकप्रियता के लिये हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाये।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये एक बार पुन: हार्दिक बधाई तथा आगामी अंक के लिये शुभकामनाये।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड आपके सेवा के लिये हर वक्त तत्पर है।

भवदीय
दीपक कुमार मिश्रा
उप महा प्रबंधक (विपणन)
28/10/2020

पंजीकृत कार्यालय : मुख्य प्रशासनिक भवन, विशाखपट्टणम - 530031
Regd. Office : Main Administrative Building, Visakhapatnam - 530031
वेबसाईट / Website : www.vizagsteel.com CIN : U27109AP1982GOI003404

मेकॉन लिमिटेड (भारत सरकार का संस्थान)
MECON LIMITED (A GOVT. OF INDIA ENTERPRISES)

13th & 15th Floor, North Tower, Scope Minar, Laxmi Nagar District Center, Delhi-110092 (INDIA)
Phone : +91-11-2244 7417, Fax : +91-11-2204 1214, CIN : U74140JH1973GOI001199
E-mail : delhi@meconlimited.co.in, Website : http://www.meconlimited.co.in

स.9150/रा.भा./2020/पत्रिका-68 03.11.2020

सेवा में,
श्री पीसी सिंह
महाप्रबंधक (मा.सं.एवंप्र.)
स्कोप कॉम्प्लेक्स कोर-6, द्वितीय तल,
7, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

विषय: हिल (इंडिया) लिमिटेड की गृह पत्रिका 'रक्षक' की प्राप्ति के संबंध में

महोदय,

आपके पत्र संदर्भ संख्या: सं.सं.8(3) 2017-20-हिन्दी दिनांक 12.10.2020 के साथ आपके संस्थान की गृह पत्रिका 'रक्षक' के अंक-8 की प्रति प्राप्त हुई।

तकनीकी लेख, राजभाषा कार्यान्वयन और अन्य विषयों से संबंधित लेख बहुत ज्ञानवर्धक हैं। संस्थान में चल रही गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की झलकियों का प्रस्तुतीकरण अत्यंत सुंदर ढंग से किया गया है।

आशा करती हूं कि भविष्य में भी पत्रिका का प्रकाशन इसी प्रकार होता रहेगा। संपादन मंडल के सभी सदस्यों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।
धन्यवाद !

भवदीय
कृते मेकॉन लिमिटेड
(जयश्री सबलानी)
प्रबंधक (राजभाषा)

ONGC
एमआरपीएल
MRPL

मंगलूर रिफाइनरी एण्ड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड
MANGALORE REFINERY & PETROCHEMICALS LTD.
समन्वय, मा.सं. एवं प्रशासन विभाग, स्कोप परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली -110003

संदर्भ सं एमआरपीएल / मा. सं. / राभा/ 372/2020 दिनांक : 26.10.2020

हिल(इंडिया) लिमिटेड
(पूर्व में हिंदुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड)
(भारत सरकार का उद्यम)
द्वितीय मंज़िल,कोर-6, स्कोप कॉम्प्लेक्स,
लोधी रोड नई दिल्ली 110003

विषय : हिल (इंडिया) लिमिटेड की गृह पत्रिका 'रक्षक' के आठवें अंक की प्राप्ति।

महोदय,

कृपया उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके पत्र संदर्भ संख्या 8(3)2017-20- हिन्दी, दिनांकित 12.10.2020 का संदर्भ लें। उक्त पत्र के साथ हिन्दी गृह पत्रिका 'रक्षक' का आठवां अंक प्राप्त हुआ, आभार।

राजभाषा हिन्दी में श्रेष्ठ कार्यान्वयन और गृह पत्रिका 'रक्षक' हेतु नराकास (उपक्रम-2) दिल्ली से आपकी कंपनी को पुरस्कार प्राप्त होने पर हमारी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेख श्रेयस्कर हैं। बेहतरीन अंक के सफलतापूर्वक प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

भवदीय,
26.10.20
संजय दीक्षित
समूह महाप्रबंधक (समन्वय, मा. सं. एवं प्रशासन)

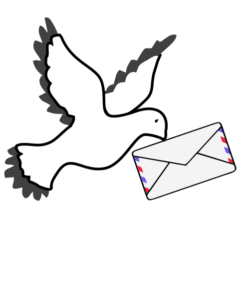

नेशनल टेक्सटाइल कारपोरेशन लिमिटेड
NATIONALTEXTILECORPORATION LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
(A Government of India Undertaking)

पंजीकृत कार्यालय	Registered Office
कोर-4,	Core-IV,
स्कोप काम्प्लेक्स	Scope Complex
7-लोधी रोड	7-Lodhi Road
नई दिल्ली- 110003	NewDelhi-110003

(CIN No.U74849DL1968PLC004866)

सं: एनटीसी/रा.भा./पत्रिका/2020 दिनांक:20.10.2020

सेवा में,
श्री पी.सी.सिंह,
महाप्रबन्धक(मा.सं.एवं प्र.)
हिल(इंडिया) लिमिटेड,
"पूर्व में हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइडस लिमिटेड"
(भारत सरकार का उपक्रम)
द्वितीय मंजिल, कोर-6, स्कोप काम्पलैक्स,
7 लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

महोदय,
आपके द्वारा भेजी गयी पत्रिका **'रक्षक' छःमाही पत्रिका अंक-8(अक्टूबर 2020 से मार्च 2020)** प्राप्त हुई। पत्रिका की उत्कृष्ट साज-सज्जा,आकर्षक एवं मनमोहक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय हैं विशेषत: कुछ सामग्री बहुत पसंद आयी- उल्लेख करना उचित होगा।

1. कोविड-19 के विरुद्ध जंग
2. राष्ट्र के जन-जन की भाषा: हिंदी
3. ऑनलाइन ग्राहक पमतैट पोर्टल का प्रमोचन
4. संचार माध्यम और अनुवाद
5. प्रशासनिक शब्दावली

हमारे कार्यालय को यह पत्रिका भेजने के लिये धन्यवाद।
राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए आपको एवं पत्रिका से संबद्ध सभी महानुभावों को सादर धन्यवाद एवं आभार।
कृपया राजभाषा अधिकारी, का नाम अद्यतन करने की कृपा करें।

भवदीय,
(रामस्वरूप वर्मा)
राजभाषा अधिकारी
एन.टी.सी.लि.,नई दिल्ली

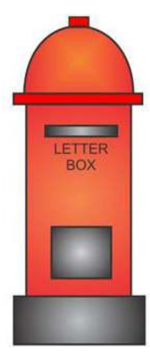

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(पूर्व में हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड)
(भारत सरकार का उद्यम)
सीआइएन यू24211डीएल1954जीओआई002377

समृद्धि हेतु सुरक्षा

PROTECT TO PROSPER

कृषि रसायन

हिलक्रॉन 36 एस एल
(मोनोक्रोटोफॉस)

हिलमाला 50 ई सी
(मैलाथियॉन)

हिलबान 50 ई सी
(क्लोरपाइरिफॉस)

हिलवॉस 76 ई सी
(क्लोरपाइरिफॉस)

हिलफेट 75 एस पी
(एसिफेट)

हिलस्टार 25 डब्ल्यू जी
(थियामेथोक्सेम 25% डब्ल्यू जी)

हिलफॉस प्लस
(प्रोफेनो + साइपर)

हिलब्लेज़ 25% एस सी
(बूप्रोफ्रेज़िन 25% एस सी)

हिलजेंट
(फिप्रोनिल जी आर)

हिलमिडा
(इमिडाक्लोप्रिड)

हिलसाइप्रिन 10 ई सी
(साइपरमेथ्रिन)

हिलसाइप्रिन 25 ई सी
(साइपरमेथ्रिन)

हिलप्रिड 20 एस पी
(एसीटेमिप्रिड)

हिलहन्टर
(क्लोपाइरिफॉस 50% + साइपरमेथ्रिन 5% ई सी)

हिलकार्टेप
(कार्टेप 4 जी आर)

हिलजाफॉस
40 ई सी (ट्राईजोफॉस)

हिलफॉस 50 ई सी
(प्रोफेनोफॉस)

हिलकार्टेप 4 जी
(कार्टेप हाइड्रोक्लोराइड)

हिलाम्बदा 5 ई सी
(लाम्बदा – साइहैलोथ्रिन)

हिलाम्बदा 2.5 ई सी
(लाम्बदा – साइहैलोथ्रिन)

खरपतवारनाशी

हिलप्रेटी 50 ई सी
(प्रेटिलाक्लोर)

हिलपेंडी 30 ई सी
(पेंडीमेथलीन)

हिलटाक्लोर
(बुटाक्लोर 50 ई सी)

त्रिनाशी 41 एस एल
(ग्लाईफोसेट)

फफूंदनाशी

हिलसल्फ 80 डब्ल्यू डी जी
(सल्फर 80% डब्ल्यूजी डी जी)

हिलथेन एम 45
(मैंकोजेब 75 डब्ल्यू पी)

हिलकॉपर 50 डब्ल्यू पी
(कॉपर ऑक्सीक्लोराइड)

हिलनेट 75 डब्ल्यू पी
(थाइफिनेट मिथाइल)

हिलजिम 50 डब्ल्यू पी
(कार्बनडेजिम)

हिलजोल पॉवर 5% एस सी
(हैक्साकोनाजोल)

हिलमिल
(मैंकोजेब 63% + मेटालेक्सिल 8%)

हिलपंच
(मैंकोजेब 63% + कार्बनडेजिम 12%)

हिलब्लास्ट 75 डब्ल्यू पी
(ट्राइसाईक्लोज़ोल)

जन स्वास्थ्य

डी.डी.टी.
मैलाथियॉन तकनीकी
मैलाथियॉन डब्ल्यू पी
एल.एल.आई.एन.

बीज

धान
गेहूँ
चना
मसूर
मूंग
उड़द
अरहर
सोयाबीन
सरसों
मूंगफली
हाब्रिड मक्का
चारा फसलें – जई, बरसीम

सब्ज़ियों के बीज

फ्रेंच **बीन**
ओ.पी. एवं हाइब्रिड ओकरा
धनिया
भिंडी
मूली
पालक

उर्वरक

यूरिया
एस.एस.पी.
डी.ए.पी.
एम.ओ.पी.
एन.पी.के. (19:19:19)
एन.पी.के. (13:0:45)
बेंटोनाइट सल्फर
कैल्शियम नाइट्रेट

टेक्निकल्सः मोनोक्रोटोफॉस, मैलाथियॉन, एसिफेट, मैंकोजेब, इमिडाक्लोप्रिड बुप्रोफेज़िन, क्लोरपाइरिफॉस, पेंडीमेथलीन, ग्लाईफोसेट

कीटनाशक के सुरक्षित एवं विवकपूर्ण उपयोग पर प्रशिक्षण

हिल (इंडिया) लिमिटेड
स्कोप कॉम्पलेक्स, कोर–6, द्वितीय तल, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली – 110003 (भारत), दूरभाषः 011–24361019, 24362100
www.hil.gov.in

हि इ लि
समृद्धि हेतु सुरक्षा

उद्देश्य

किसानों को पेस्टिसाइड्स की एक विशाल विविधता प्रदान करने के लिए उत्पाद प्रोफाइल का विस्तार करना।

कृषि समुदाय के लिए तीन क्षेत्रों अर्थात कृषि रसायन, बीज और उर्वरकों की एक पूर्ण बास्केट प्रदान करना।

दूरदर्शिता

जनस्वास्थ्य एवं फसल संरक्षण के क्षेत्र में एक अग्रणी प्रतिस्पर्द्धक बनना।

गुणवत्ता नीति

- सरकार के जन–स्वास्थ्य/फसल संरक्षण कार्यक्रमों को बल प्रदान करना।
- पेस्टिसाइड्स के उचित प्रयोग को उन्नत करना।
- कार्मिक उत्पादकता में सुधार लाना।
- कार्मिक सहभागिता को प्रोत्साहित करना।
- कार्मिकों में सुरक्षा जागरूकता बढ़ाना।

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(पूर्व में हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड)

(भारत सरकार का उद्यम)

निगमित कार्यालय

स्कोप काम्पलैक्स, कोर–6, द्वितीय मंजिल, 7, लोदी रोड. नई दिल्ली–110003

दूरभाषः 24362100, 24361107, फैक्सः 24362116

ई–मेलः hilheadoffice@gmail.com वेबसाइटः www.hil.gov.in

Pamm Advertising & Marketing